

□H14

2 13







ओं नमः श्रीवज्रनिवाहित्ये ॥ ॥ सिद्धामययाविधि ॥ ॥ आपां धलाकलमः सद्यमनपं
 चमालिः आदिमं वहाहिः अर्घपादकाकं सिद्धम् कलिपादः गजाः यागः खड्गः आदिस्थः पनायाय ॥ य
 न्मधुलः पंचगव्यः (मधनः ॥ सिद्धथाय मंथयाय विविधपूजा ॥ पादपंचकं ह पूजा षड्यगिनिपूजा
 अष्टभग्न नवलिपिय ॥ मधुलस्थः पनः मयन
 कलचुय ॥ थन आदिका म ॥ मधुलथिलकः
 नमः अष्टमारुका विविधपूजा ॥ ॥ थन
 दक्षः आविषकः ॥ ऊजमानपनिलु सिद्धनिकः ॥ सहस्रकनः बलिचुय ॥ धूनकाशः ऊजनेचाहपल
 वायः मूकानय ॥ थगः कस्वानः नृकः न संलवना ॥ यांनुविना वज्रवानाहि नूपांनि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

चाक्रपूजाः कित
 नः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

की ॥ ओं धन २ धा नय २ मर्दय २ वज्रधुक हं रुद्र ॥ ओं वज्र वे ना च नीध हं रुद्र स्वाहा ॥ गृहदलमनावीन
चकी अक्रात्यात्मकं ॥ श्रीवज्र सत्वस्य मूडयं वहि न ध्यात्मसंस्थिर्न ॥ **कृधुला** ॥ ओं वज्र धर्म सम मत्वं हं रुद्र
आलालिक हं रुद्र स्वाहा ॥ ओं श्री हं हं हं रुद्र ॥ गृहदलमनावीन कृधुलामिकात्मकं ॥ श्रीवज्र सत्वस्य मू
डयं वहि न ध्यात्मसंस्थिर्न ॥ **काहि** ॥ ओं वज्र सत्व
यम्पादि ॥ गृहदलमनावीन कृष्ठीवत्संख्या
रूपनमसाश्वक ॥ हं हि जि न जि क हं रुद्र स्वाहा ॥
स्वाहा ॥ गृहदलमनावीन नृचकं साध्यात्मकं ॥ श्रीवज्र सत्वस्य न्यादि ॥ **मखला** ॥ ओं हं श्री पञ्चाधुक
हं रुद्र स्वाहा ॥ ओं वं हं यो श्री मा श्री श्री हं हं रुद्र स्वाहा ॥ गृहदलमनावीन मखलाग्र भाद्यसिद्धि शपिर्न ॥

सि.
२

श्रीवज्रसहस्रनामादिः ॥ ॐ श्रीवज्रहं नृवक्रहं रुद्रनामादिः ॥ गोपुनद्याद्यनंच सेवमंशुदक्षिपठि
त्वा वक्रहं उहानमालारुनर्धवजं मधुमालारुनर्धवजं ॥ **मधुमाला** ॥ ॐ क न र प्र च भु हं रुद्र ॥
ॐ ह्यं न वदिरि मं भु म्भिरि र्ज्ञानामृकपात्रं ॥ ख धांग उ म नृ रग व ना मूल मंशुदक्षिपठि नरि मंशु ॥ गृ
क्र दल म ना वी न ख धांग उ म नृ पात्र कं ॥ श्री
सः **स्वानमाला** ज्ञाना वक्र पया सं ह्य य स्वा
कर्ष प्रका कंजल ॥ ना ज्ञाय प चर ना ल
चाक उलग ॥ ॥ ॐ प्रविश नृ रग व नृ हा हं वं मो ऊ पु नं सर्व सिद्धि हं वं पद प न म सु वी रु म
सिद्धर्थं ज हं वं हा प्र सी द स्व ॥ धान रा ख न ॥ ॐ वक्र दाना द्या ट स म म प्र वं म य हं ॥ त्वा क स्वान जी ना

ॐ कृष्णनेत्राणां वरमधुलसं ह्याया अलावयाय नृममूडाकासं स्नानमा लाथमनेन्द्रियं ॥ ॐ पनमसूखा
 भयसूलिलिकविलासन नमामिनीमिने ऊहं वं हा ४ ही ही ही ही प्रकि च्छकृस्मां जलिनाथ हा ३ ॥ **एतदर्थं ०**
थसंमधुलसं वाक उलं गथ ॥ आका (ग) लादचि क्त्वा दनादिनिधनपम महावज्रसमयसत्त्व नका
 एवज्रप्रसीदम ॥ सर्वा लूममहासिद्धिमा हे श्वर
 ऊम ॥ निर्दोष भगवन् शुभसि सर्वनाग भूनागि
 मूकाल्यगुह्य धर्माग आदिमूक लुथगन समं
 ममहासिद्धिमा हे श्वर्याग मूडया सिद्धिवज्रमहात्क र्वा वज्रगर्हा पमर्मम ॥ सर्वसत्त्वमनो व्यापि सर्वस
 त्वहादिस्थितः ॥ सर्वसत्त्वपि नाचे वकायाग्रसमयायिनां यनसन्धुनसं हानं प्र ही पाया लमधुलं ॥ ४

सि.
३

नमस्तुभ्यं नमनाथ कामास्त्वं पानि पूजयन् ॥ ॥ मधु लक्ष्म कंकणा प्रभिविम्बसमाभ्यादि ॥ ॥ म
रुकर ॥ नथमानस्वनिर्घ्यामां निसिन्धु नमस्तु ॥ प्रभिविम्बसू दः निघ्याः सर्वायुधं रुकल्लभा ॥ ॥ थ
नरुहं रुकल्लभा लक्ष्मि गङ्गा रुकल्लभा माताश्रवण ॥ ॥ थ कालि नमस्तु रङ्गा नकं स कल्पि हाडा न गङ्गा रुकल्ल
विय ॥ नदि नमस्तु ॥ ॥ ॐ नमः श्रीपद्म न
क्राष्टुपादि ॥ ॥ नागमाला मङ्गला गङ्गा प्रमन ॥ ॥ ॐ नमः श्रीचक्रसम्बनाय ॥ ॥ थ स्रव
नमामि हं नमा नमा हं स्वाहा ॥ किंचित्कल्पयति
नचि नमयापान प्रपाना पसो ॥ ॥ ॐ ह्यं सत्य विप्रवदि मं ॥ ॥ निचि हं किंचि हं नला ॥ ॥ विम्ब व्यामदया लक्ष्म
पनय नृवंद मुदा हर्वदा ॥ ॥ गी नहल्लिल ॥ ॥ मालमप ॥ ॥ गङ्गा रुकल्लि विस्तर्जन ॥ ॥ गुन्या पाद पूजा मूर्ध

[illegible]

सि.
४

मूलरूप॥ नागरे नवि॥ मालक॥ अकानरंजानपिगुवनः ॥ ५ ॥ शिनिवपादपं असिमांगरेन
वा २ वक्रायनिपीमावाशुकिनाम च (धुयरी) वधा धूर्तिरुजलदा॥ ६ ॥ अंगदपमिक्रमान
महाकालकुरुपालयागिनिगधा २ मद्यमांसमत्स्यपंचविधपुरुनिगुदंरुखादंरुपिवंरुन॥ ७ ॥
पांग॥ लावना॥ ॥ पूर्ववक्रायनिपीमा अकानवीजं प्रयागकुरु असिमांगरेनवं ना
गकगनवृक वाशुकिनागं विहाव्य॥ आवाह न॥ अंबक्रायदी वक्रलाकां देवन २ गीघुं हं
इत्याहा॥ पूजा मं॥ ॥ अं रुं रुं वक्राय (धेन मं॥ स्वाहा॥ बुकि हि वृषक पून चरु पंचग
ध वक्रुपीन चस्यां अदनकी न मांस च लाला अकिध रुलन अमि ०० काचिकं लाधिमाधि
॥ थनपु व्यन्यास॥ ॥ अंबक्रायदी ये स्वाहा॥ अकानवीजाय स्वाहा॥ प्रयागकुराय स्वाहा॥ अहि

लोहप्रियङ्गासकसिर्मांलम

मांगहेनवा यस्वाहा ॥ पद्मनाग नाजायस्वाहा ॥ गूंडायस्वाहा ॥ च (छा) यस्वाहा ॥ ~~अधर्मा अका~~
~~नामस्व ॥ दक्षिणा लं ॥ मासि वासि ॥ प. लां. घं. मु. नी ॥~~ च (छा) यं ह्यही क नं नपमि द ग्धी नि म
 स्थिगा वजं नर्जने का धुद धु स न नं पी ॥ स्थिगा वा धु कि ॥ शुभ सफ रु धा घ ना ड ल च न च (छा) य
 नामा महान् शुक्ला नो ड महर्द्धि का ग ड व न प्रा च्छादि मि प्रा धि न ॥ १ ॥ मय मां स न्या दि ०
 ॥ उ ॥ क वर्ग आ न ॥ ~~धर्मा ॥ रा व ना ॥~~ उ ह न नु डाय ही नी ना क का न वी र्ण का लागि
 नि क र्ण च न्द्र हे न वं पु न्ना ग वृ क्ण र्गि व पा ॥ ल ना र्ग वि रा म ॥ आ वा ह न ॥ अ नु डाय ही म
 न ला का द व न न र जी धुं ह रु ड स्वा हा ॥ ~~धूप धु ग ॥ च न धी र व धु व मु ॥ धम जी स्वां न च्छा जा उ कि~~
~~इ न मा सि दा क ला जी मा थ रु ल वा कृ धा ल वा व ल म धि दी प क पु न ॥ पु ष्य मा ह ॥ उं मा ह र्ध~~

सि.
७

नीयेस्वाहा॥ क का नवीजायेस्वाहा॥ कालागिनिऊजायस्वाहा॥ चन्द्रहेनवायस्वाहा॥ भैरवपालना
गनाजायस्वाहा॥ वेधवधयस्वाहा॥ ग क लायस्वाहा॥ पं. लां. घं. मु. रु. ॥ नायजापमंरु ॥ ओं रुं रु
इमाहं स्वर्धनेनमः स्वाहा ॥ य धर्मा. अ. कानामूर्ख. दकि धा माति. मासिनेका. मु. नि. ॥ य ऊं (ग)
निधिसंस्थिमाप्पहयद. पीतागदाहिर्यून. न क
रु ॥ श्रीवाधिक्रमदम् काननमूर्खभीरुत्व
मम्ममनंमहन् ॥ २ ॥ मयमां स न्यादि
पाशुमं रुं दायही कं क्रमवर्द्धा हा. च कानवीऊं. कालांकुलऊं वरुधनागं उरुकरेन वं विला
व्य ॥ आवाहन ॥ ओं रुं दायही हनला कादवम न २ श्री धुं रुं रुं ॥ धूपकं क्रम. चरु उपकशन. व

मं. कुं. कुं. म. व. र्क. क. ले. स्त्रां. आ. द. न. थ. क. या. जा. शु. कि. घृ. गु. न्या. मां. स. च. सा. ला. कि. सि. या. थ. रु. ल. म. म.
 सि. म्. ॥ १ ॥ क. वृ. ऊ. दी. प. रु. चि. कं. रु. नि. म. धि. ॥ पू. ष्य. न्या. स. ॥ ॐ. ॐ. न्द्रा. य. नी. ये. स्वा. हा. ॥ च. का. न. वी. जा.
 ये. स्वा. हा. ॥ क्वा. लां. क. ल. ऊ. श. य. स्वा. हा. ॥ नृ. नृ. क. हे. न. वा. य. स्वा. हा. ॥ व. नृ. ध. ना. ग. ना. जा. य. स्वा. हा. ॥ वि. नृ. पा. डा.
 य. स्वा. हा. ॥ क्वा. लां. क. ला. य. स्वा. हा. ॥ पं. लां. घं. सु.
 म. ४. स्वा. हा. ॥ ॐ. व. मां. अ. काना. मू. य. द. कि. ॥ १ ॥ रि.
 रु. य. क. न. स. व्या. नृ. पा. भा. नि. ना. व. द्वि. मु. व. नृ.
 ग. र्जि. रु. वा. नि. द. स. मू. दि. ना. क्वा. लां. क. लं. पा. धु. म. सा. ॥ १ ॥ का. ड. म. ॥ १ ॥ रि. ना. शु. वि. व. ना. न. का. शु. रा. हा. स्व.
 ना. ॥ ३ ॥ म. य. मां. स. ॥ ॥ ८. वर्ग. जा. नं. ॥ ॥ १ ॥ पा. ग. ॥ ॥ १ ॥ व. ना. ॥ ॥ १ ॥ द. कि. ॥ ॥ १ ॥ वा. ना. हि. ट. का. न.

सि.
६

वीरुं कपिलहेनवं कलंककुं चूटकवृकुं कुलिकनागां विलाय ॥ आवाहन ॥ ओं आ वा ना हि
शुवलोकादवनन २ गी घुं हं रु इ स्वाहा ॥ धूप न कि च न न क च न न व नु का उ पा का स्वां मृ शु मा
पा का स्वां शु कि पे चा मृ न सिया वृ जि मा स स्वा न का ध रु ल च सि दी प नि सि चि कं र व ल
मधि चूटकवृकुं ॥ पूष्य न्या स ॥ ओं वा ना
य स्वाहा ॥ कपिलहेनवा य स्वाहा ॥ कुलि
वा य स्वाहा ॥ पं लां घं रु न ॥ ना य जा प
मृ स्वां ॥ रु ति ॥ आ नू ठा म हि धा स द नि व ल वा न् गी र वा हि डि का धि पा ॥ क र्त्ता ॥ भ य म व र्त्त क प्र नि
दि नं चू र क लं का म हा न् का ल कू न नू मा द क र्त्त व द न न कू क लं का म था ॥ ४ ॥ म घ मां

याम्पा कृष्ण मापि धूम्र करि न द ह्नु हि पा र्श्व रु द्दा ॥ २

स०॥ ॥ तवर्गजात०॥ **ध्रु** ॥ **पाग** ॥ **एवना** ॥ अ॥ **त्रकोमानीनका** न कानवीजं अ॥ **हृ**
हाम् **ऊं** का धहे ववं कनं **ऊं** महापद्मनागं विहाय ॥ **आवाहन** ॥ **ओं** कोमानी काललाका देव
न २भी घुं हे हृ **स्वाहा** ॥ **धूप** अग्न २ **चरु** मृसिद्रु वमुद्रा **ऊं** **जिह्वा** **स्वा** **ऊं** **उकि** **खन्या** **मां**
सक **विला** **पू** **लां** **काध** **रु** **लक** **वसि** **दीप** **पका** **विकं** **लइ** **मधि** **कनं** **ऊं** **हृ** ॥ **पू** **व्य** **त्या**
स ॥ **ओं** कोमार्थे **स्वाहा** ॥ न कानवीजा यस्वा हा ॥ काललाका यस्वा हा ॥ काधहे ववा यस्वा
हा ॥ महापद्मनाग यस्वा हा ॥ अ॥ **ग्रथ** **स्वाहा** ॥ अ॥ **हृ** **हा** **सा** **यस्वाहा** ॥ **प** **लां** **घं** **मु** **रु** ॥ **ना**
यजाप **मं** **द्रु** ॥ **ओं** **रुं** **रुं** **कोमार्थे** **नम** **४** **स्वाहा** ॥ **यधर्मा** **अ** **काल** **मुख** ॥ **द** **कि** **म** **मानिक** ॥ **मा** **सि**
दाल **चिनि** ॥ **मु** **रि** ॥ अ॥ **ग्रथ्या** **दहि** **न** **क** **म** **धु** **ल** **धना** **मं** **द्रा** **कु** **मा** **ला** **चि** **ना** **नका** **हा** **च** **रु** **थे** **मृ** **ह** ॥

सि.
१

लधवलानागामहापद्मका॥ धानावाविनिवर्तनागजमूर्खाहासाहसासामहान् नका लामिकने
ऊसोनिविस्वरदहहासंपृथु॥ १ ॥ मयमोस०॥ ॥ पवर्गजा०॥ ॥ पाग॥ लावना-
नेमृषवेव्वीशामा पकानवीजं ऊयंती ऊतुं उन्मलहेनवं पकटिहृऊं अनेनतागंविहाय॥
आवाहन॥ ॐ वेव्वीविह्वलाकादयमनर
वमु उमउ मूखां मासपिचिगा उकिवता
मृम पुनिमाधि दीपहामाचिकं वृक्षपिला
जायसाहा॥ ऊयंति ऊद्रायसाहा॥ उन्मलहेनवायसाहा॥ अनेनतागयसाहा॥ नेमृषेसाहा॥ नमि
न्यनहनासनायसाहा॥ पं लां घं मु र॥ जापमंड॥ ॐ हं हं वेव्वेनमः साहा॥ यधर्मा अकाल

नृत्त ॥ दक्षिणा पंना भासिलो ॥ मुनि ॥ कृष्णमस्तु कर्जनी धनदियस्थानां वने अग्नि मां सा
सिंचति पून (६) विषधनानकापि नीला कर्म ॥ पर्क न्यामथ भवकारु लहलूक पूनवकुमहा
नृत्त सर्ववद्धनने अर्मा लयक न नग्नि न्वनंगर्जनं ॥ ७ ॥ मद्यमांस ॥ यवगजाम्
॥ **कुं** ॥ पागम ॥ लावना ॥ वायवचा मूष्ण नको यका नवीकं दवीकाट कुं संहानहेन
वं ओ इम्वनवृकुं वागुकि नागं विलाय ॥ आ वाहन ॥ ओ चामू लुचलु लाकादवन नशीघ्रं
हं हृस्वाहा ॥ धूपकृमहा चरुमृष्टसुगंधं व नानि रुका उ छाउ चउलां कीनजा अकि सिंद
नमाहनि मांसं मृमाला चाकृध रुल वयसि मथमाधि उदुम्वनवृकु ॥ पुष्प न्यास ॥ ओ चामूष्ण
ये स्वाहा ॥ यका नवीजाय स्वाहा ॥ दवीकाट कुं जाय स्वाहा ॥ संहानहेन वाय स्वाहा ॥ वागुकि ना

ल चनामधि वटवृक्ष ॥ पूष्यया ॥ ॐ महाल ॥ नमः स्वाहा ॥ भकानवीजाय स्वाहा ॥ चविद्र
ऊजाय स्वाहा ॥ हीषदाहे नवाय स्वाहा ॥ रुकु क नाग नाजाय स्वाहा ॥ ॐ भ नाय स्वाहा ॥ किलिकि
लालवाय स्वाहा ॥ पं. लां. घं. मु. ॥ नायजाय पमं ॥ ॐ हं रुद्र महाल ॥ नमः स्वाहा ॥ य धर्मा ॥ अ
कानामुख ॥ दक्षिण ॥ ओह ॥ मिमिसुखम ॥ ल ॥ मुनि ॥ ॐ ॥ अधूत न ॥ ॐ ॥ धना वृषग नः ॥ गू
लंकपालं मह न ॥ गे नाग ॥ धनं महाम ॥ ॐ ॥ धिध नं ग्री ॥ गीख पालं रु रु ॥ संतु व काम ह
द्वि का वृष मुखः ॥ गुहा वना न स्थि रु च ॥ ॐ ॥ च धनं न ना कि स लिलं न मि न्व नं य त्र नः
॥ ८ ॥ हे नव कालि ॥ नृप ॥ अग्र ॥ घं प्रणि ल रि दर्प ध ग नं वि श्वं सदा या द गी ना ह
गम लु ल च क्र म ह य न या ॥ नृ क डि का टि स्व यं ॥ रु सं वृ ल व धू रु सं ग मू दि रु श्री मा न्म दा सं

सि.
५

द्वियः साक्षात्समापियन्सुदयन्सुनमः सर्वथा ॥ १ ॥ नागकायाथनवृद्धवनआवा
हन ॥ ॐ आत्मानं वृद्धवननाममहाकाधनाजं शुक्लवर्णं हेकाभाह्वोविचिंसा ॥ वृद्धवनवाने ॥ जमनिका
मूल (श्लोक) ॥ वृद्धवनमहावीनममचक्रार्चनक्रमं ॥ दानपुनमनसापूर्वगीघुमंशसृगम्यता
॥ १ ॥ वृद्धवन (श्लोक) ॥ किमाज्ञाकुरुनाथ आगच्छमिहवांरिह ॥ किंकर्माधिकगच्छमि
गीघुमाज्ञाचदहिम ॥ २ ॥ मूल (श्लोक) ॥ वृद्धवनमहाकाधदर्शयामिदि (श्लोक) ॥
आयांतासुर्वमानासां कुपगीघुत्वयाकुरु ॥ जमनिकालिकाय ॥ वृद्धवनमाक ॥
मूलछाने ॥ वृद्धवनदवज्ञायगीत ॥ द्वियं द्विसनाथ ॥ दिगम्पदकाय ॥ ३ ॥ नागका
माद ॥ मालवकुंका न ॥ द्वियं द्विसनाथ ॥ पञ्च ॥ आत्मानं वृद्धकाठरूपं गीतवर्णं विचिंस्

॥ ॐ आलीठ पद वज्र महाक्रां विघूर्ण्य २ सर्वदृष्टान् स्मृत्मान् हंरु ॥ १ ॥ शृङ्खल
सर्वविघ्नाया कायवाक्किरुसास्थिर ॥ अहं वज्रधना राजा आहा चक्रप्रथाजक ॥ चक्रदीप
वपुषा स्नानयामि त्रिकायकान् ॥ लंघयद्यदि मकश्चिद्विगीर्य दत्तमान्यथा ॥ १ ॥ पादुनीदिवं
धन ॥ ॐ सुम्हनि सुम्ह हंरु ॥ २ ॥ स्वचिके गनाजा ० ॥ पाग ॥ विदिगसुचिकाय ॥ ॐ १ कश्च
चिक वज्रपद महाक्राध हंज २ सर्वदृष्टान् स्मृत्मान् हंरु ॥ ३ ॥ जम्बुवते ० ॥ पाग ॥ आत्मानं व
ज्रपाग महाक्राध नृपपीठवर्ध विचिंम् ॥ पद ॥ ॐ प्रमालीठ पद महाक्रां विघूर्ण्य २ सर्वयमा
निमान् हंरु ॥ ४ ॥ शृङ्खल ० ॥ विंद ॥ ॐ गुरु २ हंरु ॥ ५ ॥ पुन्यजननाजा ० ॥ पाग ॥
शुचि ॥ ॐ त्रिशुचिक वज्रपद महाक्रां हंज २ सर्वदृष्टान् स्मृत्मान् हंरु ॥ ६ ॥ उवगाधिपति ० ॥

सि.
१०

पाग॥ वज्ररूपाटमहाक्राधनूपांविचिंन्य॥ पद॥ ॐ वैश्वपदमहाक्राठविघूर्णय२ सर्वइष्टान्ना
गदिमानान्हेरु॥ **आ**॥ मृध्वकु०॥ विं॥ ॐ गृक्रापय२ हेरु॥ **वा**॥ समीननाम०॥ पाग॥
गुचि॥ ॐ पंचगुचिकवज्रपदमहाक्राठरंज२ सर्वइष्टान्नाहंरु॥ **उ**॥ मङ्गलनामा०॥ पाग॥
॥ वजां वैश्वमहाक्राधनाजंविश्ववर्धंविचिंन्य॥ **पद**॥ ॐ मधुलपदवज्रमहाक्राधविघूर्णय२
सर्वइष्टयक्रमानान्हेरु॥ **आ**॥ मृध्वकु० **विं॥** ॐ शानयहालगवन्विशानाजहेरु॥
॥ **उ**॥ नृग(धध्वन०॥ पाग॥ **गुचि**॥ ॐ वि
स्रनान्हेरु॥ **म**॥ मृ(धध्वन०॥ पाग॥ **पद**॥ ॐ समपदवज्रमहाक्राधविघूर्णय२
वचनादिमानान्हेरु॥ **गुचि**॥ ॐ मनिजालवज्रपदमहाक्राधरंज२ सर्वइष्टान्नाहंरु॥

॥ म ॥ ब्रह्मवननाम अहंक्राठ ॥ पागम ॥ पद ॥ ॐ कर्मपद वज्र महाक्राधं विघूर्णय २ दशदिगस्थि
नसकल इष्टमानान् हंरु ॥ शुचि ॥ अय ॥ ॐ शा ४ ब्रह्मवन वज्रपद महाक्राठ आकुपय २ सर्वमा
नान् हंरु ॥ म ॥ वाचुलिचनध ॥ पागम ॥ पद ॥ ॐ एकपद वज्र महाक्राधं विघूर्णय २ सर्व इष्टा
नान् हंरु ॥ नागकाय ॥ वाक् ॥ अकनाम्प हंत्वयाहं दंर्गयं निदि (भा दश ॥ दशक्राधद
अदिश कीलय सयनाथह ॥ १ ॥ ब्रह्मव नच्छादं ॥ अर्धपूजा दशपद ॥ पूनः ब्रह्मवन
मृगीनः दक्षाय ॥ च्छादं ॥ ब्रह्मवनलिहा अन ॥ ॥ थननाज्ञाय ॥ मूलाचार्यनं अ
त्यं नमोना आकि नधनुजा आस्य मधुल प्रदक्षि ॥ वाक् ॥ अशुचिकाय ॥ ॐ अपस नं कुलगव
ना ॥ कंचित्कटपूना ॥ अहं क नूध वनशीमाना हाचक्रपपूजय ॥ वज्रधक्षि फवपूषासूना नया

मिडिकायकान् लंघयद्यदि म कश्चिद्विशीर्यदनु नान्यथा ॥ **धनमा क का संपिहा अय ॥ नृप ॥**
गीत ॥ नाग लेखी ॥ गाल मप ॥ ओं ख व ज ध क व ऊ हं कान न कालि ना मि नि प्र चा प यिया नं २
 स्तु लयि म नं महा क्रांता व अस्मि य विघ्न म मू ह नं ॥ **कुं ॥** घ घ घा ट य २ सर्व इष्टा न की लय हं
 रुद्र पा प ह नं २ ओं व ज की लय व ज ध न आ हा का य वा क चित् की लय नि ॥ श्री व ज स त्व आ
 ना धिया न अ नू र न सिद्धि प्र द मा क रु ल द ॥ **॥ ॥** पूर्वा दि ग द्या न का को न न न हि न्नां ज
 न यु नि धा न नू पा २ च ऋ ग यी ष म महा इ म आ न न द वा धि प नि ग द की लय नि ॥ **कुं ॥**
 धू आ **स कि न द मा य ॥ पा गा ॥ ज प ॥ रा व ना ॥ पू ॥** पूर्व ऋ द्रा दि स ग द प नि वा ना ना क र्ष य ज
 ॥ कि न द मा का ट य ॥ ओं आः घ घ घा ट य २ ऋ द्रा दि स ग द प नि वा ना ना की लय २ हं हं रुद्र ॥ ओं

ॐ आय स्वाहा ॥ प. लां. घं. मु. नि. ॥ पूर्वसूत्रमथ नोरे न्नां जनशक्ति प्रहं ॥ ध्यानरूपा प्रचक्षुः श्रीका क
कुक्षु नमाम्यहं ॥ १ ॥ **क. य. हा.** ॥ ओं सं ह नि ० ॥ ॥ श्री वज्र सत्त्व ० ॥ उरु न दिग दान ० ॥ **उ.** ॥ उरु
नयकादि सग ध पवि वाना ना क र्व य ऊः ॥ ओं घ घ घा ट य २ य का दि सग ध पवि वाना ना धं की ल य २ हं
रु ॥ ॐ क व ना य स्वाहा ॥ प. लां. घं. मु. ॥ ॥ उरु न य ऊ सा नू ० ॥ म व र्धं प्र ला क नं ॥ महा
ॐ श्री म नू पा च उ ल्का ष्म प्र ध मा म्य हं ॥ २ ॥ ॥ पश्चिम दिग दान ० ॥ **प.** ॥ पश्चिम व नू धा दि
सग ध पवि वाना ना क र्व य ऊः ॥ ओं म्ना ४ ॥ घ घ घा ट य २ व नू धा दि सग ध पवि वाना ना धं की
लय २ हं रु ॥ ॐ व नू धा य स्वाहा ॥ प. लां. घं. मु. ॥ पश्चिम न क व र्धं रं ना ग धि प हि म र्दनं ॥ धा ना द
हा स व द नं ष्म ना ष्म प्र ध मा म्य हं ॥ ॥ दक्षिण दिग दानं गू क ना न न वं ॥ **द.** ॥ दक्षिण धा व ना

सि.
१२

धिपनादिस्तगधपनिवानाधमाकर्षयन् ॥ ओं आघघघाटय २ प्रमाधिपनियमादिस्तगधपनि
वानाधं कीलय २ हंरुट् ॥ ओं यमाय स्वाहा ॥ पलां घं मु ॥ दकि (धहमवधर्गगी कृतां नदव्य
हाविधी ॥ धानघघननादकेनमामिश्रक नानां ॥ ॥ दहिमवनका (ध० ॥ अ ॥
ओं अत्रवेधननादिस्तगधपनिवानानाक र्षयन् ॥ ओं आघघघाटय २ वेधननादिस्तगध
पनिवानाधं कीलय २ हंरुट् ॥ ओं अग्रथ स्वाहा ॥ पलां घं मु ॥ अ (योमानप्रलदेवी कृ
रूपीनाबलासनि ॥ दहनाधिपमर्दचयमजानीनमाम्यहं ॥ ॥ द्वितीयवनका (ध० ॥ ने ॥
नेमृमनाकृतादिस्तगधपनिवानाना कर्षयन् ॥ ओं घघघाटय २ नाकृतादिस्तगधपनिवाधं कील
य २ हंरुट् ॥ ओं नेमृम स्वाहा ॥ पलां घं मु ॥ नेमृम पीननकालाक व्यागाधिपमर्दनी ॥ धानादह

सविकटोयमइती नमाम्यहं॥ ॥ वायुव्यवनका (१०॥ वा ॥ वायुव्यमनुनाधिपमिस्रग
क्षपनिवानानाकर्षयन्॥ ओं घघघाटय २ वानाधिपम्यादिस्रगक्षपनिवानाक्षी कीलय २ हं रु
द्र॥ ओं वायवस्वाहा॥ पं लां घं मु ॥ वायव्यनकाक्षमांगीस्वसनाधिपमर्दनं॥ मानादिरु
यप्रहाभोद्रायमदंष्ट्री नमाम्यहं॥ ॥ ॐ
मिस्रगक्षपनिवानानाकर्षयन्॥ ओं घघघाट
य २ हं रुद्र॥ ओं ॐ नमो नायस्वाहा॥ पं लां घं मु
॥ मानविधिं सिनी दवीयममथनी नमाम्यहं॥ ॥ ॐ
गक्षपनिवानानाकर्षयन्॥ ओं घघघाटय २ व्रश्चन्द्रचन्द्रार्कादिस्रगक्षपनिवानाक्षी कीलय २

हं रुद्र ॥ ॐ उर्ध्ववक्त्रं (संस्वाहा) ॥ पं. लां. घं. मु. ॥ वक्त्रं शार्कादया इष्टान् ग्रहानि ज्ञादित्वे च नान् ॥ मानविष्यं सि
नीदवी उक्तीष च कवर्ति नमाम्यहं ॥ ॥ संतनाज महाक्रोध ॥ अध ॥ अधः वमचि आदि पृथ्वी
दवना सपनिवाना नाकर्षयन् ॥ ॐ घघघाटय २ अध पृथ्वी अस्त्रनागाधिपत्यादि सगधपनिवाना धा
कीलय २ हं रुद्र ॥ ॐ अध पृथ्वी संस्वाहा ॥ ॐ अ
मु. ॥ पृथ्वी नागास्त्रना इष्टान् ग्रहानि ज्ञादित्वे च नान् ॥ मानविष्यं सि
॥ ॥ दहदिह ० ॥ षट्क्रिया ॥ (अ. क. ॥ य ४
वनाहं रुद्रा विद्यापद्या घाटि न घनघसा धा पमानंदमूर्ति ॥ संमाना कानकाना य हविद नूना
दानु ३ ४ षट्क्रियादि क्वचक्रं क्रोधवती ॥ ध्रुवक न क म लं क्रोधनाजं नमामि ॥ नागका ॥ धनगा ॥ जग

स्य च धुवीनमलम ॥ मूल (श्लोक) ॥ च धुमहा ना वधमहा वीनममचक्रा च नक्रमान ॥ दानपदमन
सा पूर्णभी घुमं ग्राह्यगम्यता ॥ ॥ च धु (श्लोक) ॥ किमाहा कुरुनाथ आगच्छामि ते वांमिक ॥ किं क
मामिका गच्छामि भी घुमाहा च दहिम ॥ ॥ मूल (श्लोक) ॥ च धुवीनमहाक्रा धदानपदकर्मयत्न
मं ॥ सखसंपत्ति सम्यन्ना आनाथ गुरु चरसा ॥ ॥ काममाहादि सम्याक सिद्धि हं वरु पुनः पु
नः ॥ विदुवन एक वीनत्वं रूपं च दर्शनं कुरु ॥ मा
न्य ॥ नागका मा ॥ मालयकं कान ॥ प्रकलित
न वाममा नुस व्यहस च वक्र ॥ कविननकनमू शोभर्ज नीलकिपाश ॥ निविदिन घनशनीन च द्रवकु
चन्द्रचक्र ॥ समयिकुरु वविघ्नं विघ्नहं चलाय ॥ ॥ छादं ॥ अर्घ्यदक्षपद ॥ पुनः नृप ॥ नागहं

सि.
१४

॥ अल ॥ कालमाथ ॥ हंका न संजान ॥ पाग ॥ ॥ श्रमक ॥ विःवां हाजदि न भम धुलगना हंका च वीजा
हवं दृष्टमिष्य नपीठिका निध वनं घा नाह हा साप नं ॥ उद्दामा सुविनाजिमा दकि हा क न पा भ्रम
व्यम नं वंद ग्रीवन च धुना घ हा महाक्रा धं मूदा हं सदा ॥ ॥ छ्वा दं ॥ देव क्लाम कं ॥ च धुवी न लि न
होय ॥ ॥ मूल नृम् ॥ नाग मधू मरु ॥ मा
नृम् ना क्रम्य पद स्यां गि म सि कू च यू (ग म्पु म्च
जिष नं ग म्पु माल न्दु मो लि ॥ वाना का गृष्टि
या च्छु सम्ब ना व कि उ व ना वि रु यि जा कि नी च क व र्हि ॥ छ्वा दं ॥ ग ना क्रु वा ॥ ॥ थ न य ह स्थ
प नं सि ना ह नि प्र मा ध क्रु ल ॥ ॥ गी रु म (ध म नृ ॥ मृ नी ल ॥ मि धि ला य न ॥ च क्रु व र्हि ॥ न मा हं ॥

॥ क ॥ नृम्यापादाविद्यानाइवक्षिणवसुधचक्रनिर्कंठदंठः संलुमावाधिवृन्दद्विगुणजलधन
व्याफनिष्क्रामदग ॥ उज्जाम्पवाहृदधुप्रकृमिपनिरवः जगनं कुशनामः मानं नृम्यावमानं हनकुह
गवर्गमांदवं हनूकस्य ॥ ॥ देवचवामालगु ॥ आहृमिगीरुः क्षालिमवजानल ॥ ॥ धनमाकु
मस्य वज्रविनासिनीमहावीर्यवीर्यममचक्रार्चन
क्रम ॥ दानमर्कमनसापूर्वभीष्टमंशासूगम्य
रुनाथ आगच्छामि न वारिक ॥ किं कनामिका
क ॥ वज्रवानाहिमहावीर्यवीर्यनिदानपुमि कर्मयत्कुरु ॥ सुखसंपत्तिरस्य नृम्यागुणचरुसा ॥
काममाज्ञादि सपाकः सिद्धिर्हवतु पूनः पूनः ॥ विजुवनकवीर्यवीर्यनीलं नृपदं गनं कुरु ॥ ॥

हि.
पञ्च

माक॥मूलचुदं॥ ॥ वज्रविनाशिनिदं अज्ञाय॥ नृप. गीत॥ नागधनां ग्री॥ मालजटि॥ स
वाकां ना०॥ ॥ पागा॥ ॥ श्लोक॥ नत्वां ग्री वज्रवा नाहिमं मूर्ति जिनेश्वरी॥ अमं नावनदाही माभु
द्विहिद्विवनपुदा॥ ॥ वंका लसमासी नंसहजानंदनूपिधी॥ प्रहा हानवनदहा एनमल्लुयी वज्रया
गिनि॥ ॥ छंद॥ सद्यपूजा॥ गीतहं वी
गभृगभनमावसि॥ मालमाथ॥ दिवुज एक
ममल्ललगना कायादिवर्तवृत्ता प्रकात्वा क
विद्यावृद्धकदंबकंदहिनियाचक्रुथारुदिनी सानंदा ललिमाद्भगसूत्रनवो वानाहिकांचरुसि
॥ ॥ दवज्ञानक॥ वज्रविनाशिनिलिखुया॥ ॥ थनपंचधनालयकषिं यागिनिपिंन.

मूडांभियके मूलं वागम क मूरव कारवागम कर्ह पका मयलानय ॥ गीतकालायि ॥ धनवेधानन
इय ॥ गीतसर्ववृद्ध ॥ हागहनध ॥ (सक ॥ चक्षुलिकनली लयानिजपदाइह्यालिकविधह वि
श्वरनिमहासुखं विनचयं लीनं सुवाधदया ॥ मूलाजागुगना विनिर्दृष्टिपदं प्राफाविधह रुद्रया
नागमडावृदयद्वयं च सहजानंदाय वंदामहे ॥ दशपद ॥ पत्रिकमनंभालियहध कोमानि
पूजाभिषाधिवासन ॥ मधुलथिल किमन पूरुषाय सद्यं नय ॥ चिरपूजा दक्षिण
कोमानि च्छुय ॥ दिगुसमय कुमानियापुसा द ॥ बाहिलहिय समयाचक्र ॥ (गवाहनि ॥
कलशआदि किनहामाकृताविसर्जन ॥ धनसंहार ॥ मधुलपाताललाजाय ॥ वलिच्छुय ॥ ॥
धनंलिश्रुयननसइहाजन मूलनृम् ॥ बागमवठुगी ॥ मालमाथ ॥ दंविनि ॥ पागम ॥ (सक ॥

हि.
९५

संपूर्णं सर्वजगत्समावृत्य पदं सर्वनामादिना पित्वा सर्वविकल्पमाह कनर्त्तुं शक्तिर्नाह नृकादिना ॥
यश्चक्रं पविर्लुङ्गं किं नराहनादयमाहुदं यस्यामस्य कृपा नृहस्य महानिस्तुहर्त्तुं ययस्य ॥ ॥
थनस्तदा मनाधिपंगनाहुन ॥ मूडाकारं मूडाविसर्जन ॥ गीतं मादमहाय ॥ पलायं मूढ ॥ सका
हुन कमापन ॥ खंजगहय ॥ गुप्तसग्वन
गधचक्र ॥ गीतलखन ॥ मुखशुद्धि ॥ धनयह
लनं वृत्तिपिहाउथ ॥ स्तुतिपुत्रपनिमाधार्थं पु
गीतदवचनानिस्तु पनिकमर्थ ॥ थनपूजा धनकाश ॥ सिद्धपूजायापनिमानर्थ ॥ यष्ट ॥ लंग ॥ मक्
यहिषक मधुलयासिद्धमिथ ॥ षट्पागिनीमालकारुविय माहनि ॥ बाहिकं सपाहु कल्याण

शुभ्रपिंङ्गय ॥ धन २ ॥ थनं लिपच ॥ लिमालकापनिक्रमनं ॥ य ॥ गीरमालक ॥ समयाचक्र ॥
 ऊजमानपनिहस्यं विय ॥ गद्यचक्र ॥ हास्वन ॥ मुखशुद्धि ॥ स्नानकाकाय ॥ भववलि ॥ दशपत्र ॥
 श्रुतिर्वाद ॥ दीपदान ॥ ॥ ॐ निमिद्रामथपूजाविधि समाप्त ॥ ११ ॥ ॥ गुरु ॥ ॥
 धानाकलगयालावना ॥ ॐ वज्रा मृगादक ०० ॥ हं नमः २ महानमस्वाहा ॥ वज्रवा नाकाश्र
 मृगजलनूपविणव्य ॥ ॐ मटिनि साधन ॥ मं ॐ धदवनाचक्र ॥ हानमत्वमानीयक
 दीजकिनमम ॥ धम ॐ किनीजलनूपविण
 य ॥ ॥

अचला

१०

ॐ नमः श्री चण्ड महानाथाय ॥

॥ क्रापांथ कपकं ॥ प्रहिरनादमधुल पंचभालि कष्ट

नं कय पंचसूत्र नं हिन ॥ लं गस गवन मरु पाद पंचगव्य खरु पाश कर्लि गठा आदि अंन वा
हि धन पवि क्रम नं था पलप ॥ ० चाय गुनू मधुल पंचगव्य भाधन पंचकुं र आदि नं पूजा क्रम

धधून काठा आदि काय द्विसमाधि लं ग
द्रुषा पिषा पूजा ॥ ॥ थनं लिचक्र ग्वनी

धिवासन मामा के पूजा देव पूजा धून काठा
नं द्यं ० था संमधुल प्रदक्षिणा ॥ ॐ श्री विष्णु

कुरु गव नमः हामीं क पुनं सर्व सिद्धि सुखारु म

सि द्यर्थं क हं वं हा ४ प्रसिदस्व ४ ॥ स्नान

माला ज्ञाना द्वा नखा खन ॥ पश्चिम स चीना ठा ॥ ॐ वज्र दाना द्वा टय २ समय प्रवेग य ह ॥ श्व
मी कुनं चक्र दान संखन ॥ हूँ ठा न चीना ठा स्नान मधुल एव याय ॥ ॐ नमः सुखाय सुललि न

गुन ४

१

Et 14

U/61

JOGAMANBILAS

MADANBILAS

धर्मरत्न ब्रह्मचार्य सुरत श्री महाविहार DH-14

गुरु

ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॥ ॥ गुरुपूजाविधिज्ञाय ॥ आदौ सूर्यार्घ्यं ॥ गुरुमधुल ॥ पञ्चगव्यं ॥ धनसिंह
वस्त्रापन आदिपूजा ॥ दं वप्रतिपादपूजा ॥ अंजनसाधन ॥ आदिग्रहन ॥ मधुलस्तुति ॥ प्रिसमाधि ॥ क
लश सग्वन मामकिपूजा ॥ दं वतापूजायथावि
नं ॥ गुरुमधुलदनकं ॥ अस्थयध ॥ किस्वानकासं
थत्वं मसास्त्रामहाविता ॥ सत्त्वात्संसावसागवाद्रु
धकाय महा म धुलंपवर्तनं वाहामंवाकविष्णामिषूष्मातिर्यत्कार्यकवधीयंतत्कर्तव्यं ॥ ॥ धनगुरु
स्तकिगवतन ॥ धनशिष्यतावनास्नाननयमाशनं ॥ तं नातिन्यसुचविमधुलस्तु ॥ हंकाचकिचधीर्हजतहं

पूजा

१

कावाहूतं रुद्रं विरुत नृपं नम्रं लं वरुयधं उर्ध्वकं शंयिभ नृवत्पापं नाशिका गुधनिश्चार्यं तच्छृङ्का नृद
 दिनीत्वापविधमय क्रमानं वज्रहंकावं महाकाठं विहाव्य ॥ श्रीखलखनहाया ॥ ओं सुम्भुनि सुम्भुहं २ रु
 द् ॥ ॐ गृह्ण २ हं हं रुद् ॥ ॐ गृह्णापय २ हं हं रुद् ॥ ॐ भानय हाः विशावाज हं भूमकस्य सर्वपापं ना
 शय हं २ रुद् स्वाहा ॥ ॥ थनमधुल विसर्जन
 हाग्निवजा ॥ थनवत्तमधुल वायक प्रक्षीपायनं
 लगुनूयात दाहलप ॥ वाक् ॥ चतुवत्तं त्वादि ॥ थनगुनूमायायालिस अर्घयाचकं साइइ ताय अऊत
 चूंलकाकासां शंखसकसंहायकं ॥ वाक् ॥ ॐ ह्रीः प्रववसस्कावायसगुनूपस्थानाय वजाचार्याय स

३. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गुरु अर्घ

कर्मावजिने पाशार्थे प्रतिष्ठु स्वाहा ॥ शंखपूजा ॥ गुरुयापालिसपूजा दक्षिणदंष्ट्रासंगुवनमस्कावयाय
॥ धनपादप्रजालंखनहासं गुरुप्रज्ञानंस्नानविय ॥ वाक् ॥ यजमानस्यार्थाय प्रतिभशास्मिन्तावाहिनाधि
तंसिद्धिर्हवंतुमानिधं कुरु ॥ ॥ धनधर्मा २ ॥ स
लयासं सर्वविघ्नानवन्ध २ हं रुद्र ॥ हं कारातूला
४ सर्वदृष्टान्निर्दंष्टते च शिष्य शीकावधसमकुरु ३
स्वामामकाकांतामध्यपक्षसूचिकवज्रं विहाय स्नानदवीं हृच्चन्द्रस्त्ववज्रवचनकारुर्गतं मनुमावात्यन्नं
पीतसूक्तवज्रवस्मिस्त्वच (धोः पूर्वगमतिव्यापकवचिंतं ध्यात्वा ॥ धनगुरुधनार्थभक्तं कुरु जययाय ॥

अर्घ

२

मंगु ॥ ॐ आ ४ शं क वं ॥ शक्ति क वं ॥ घृट २ घट नि ॥ घाट य २ घट नि ॥ अमूकं वज्र २ स्वाहा ॥ ॐ खड्ग बाहू हूं हूं
॥ ॥ सिद्ध नं लय ॥ वज्र नु सिल श थिय ॥ ॐ स्रु पति स्थित वज्र स्वाहा ॥ कल शलं खन हाय ॥ चाक्र पूजा ॥ मधु
लथिल कं सकसनं कितन कं ॥ स्तुति ॥ शता क्र व ॥ क्र
लिसमय ॥ आद्य सलहिय समया चक्र ॥ विसर्जन
कवर्धन माहं चिचक्र ॥ आद्य संगीत ॥ हाजर
धचक्र संगीत मुखाल ॥ धूमांग विमुखाल ॥ शिष्य पत्रि जाखय ॥ प्रथमं गुन सावाधनं ॥ द्वितीयं सत्वापका
चक्रं ॥ तृतीयं शिष्यालं खंचतुर्थं स्रुल्लं खं ॥ पंचमं आदिकर्म ॥ षष्ठं समयं ॥ पंचशिका ॥ ॥ थनं शल्लुस

सिधो
श्वप्र

[illegible]

इति युग्मा विधिः ॥

पौरुषा

3

ॐ पूषं प्रतिष्ठास्वाहा॥ दथुस॥ ॐ श्रीं तिलाकविजयाय अमाघपाश प्रतिहृत् श्रीं हूं रुद्रस्वाहा॥ ह्रान॥ ॐ अ
 माघपाशं श्रीं स्वाहा॥ ^{मध्य} खडा॥ ॐ आर्य अमितालाय वज्रपूषं प्रतिष्ठास्वाहा॥ ^{पूष} थडा॥ ॐ आर्य नावाये वज्रपूषं प्र
 तिष्ठास्वाहा॥ ^{दोस} जडा॥ ॐ आर्य लक्ये वज्रपूषं
 यवज्रपूषं प्रतिष्ठास्वाहा॥ ^{उत्तर} खडाथथुं॥ ॐ आ
 आर्य हर्यगीवाय वज्रपूषं प्रतिष्ठास्वाहा॥ ^{ने} जडा
 पाशयः शैलाकदर्पनाय महाकाब्रधगचिल्लाय सकल बागदाविड इ४ खइस हइस मूपसनाय ॐ दंवल्लिइग्धा
 दिसहिताय गृहीताय पुंजं गुणनिं पूष्टिं भवजांकुवू ॐ आहूं श्रीं रुद्रस्वाहा॥ ^म स्तुति॥ लोकध्वंशिवंशकं अमा

ॐ आर्य सर्वेश्वरि॥ वराविष्कमियेव्यपुषं प्रतिष्ठास्वाहा॥ वायुया॥ ॐ आर्य मेव्यरागाय वज्रपु
 ॐ प्रतिष्ठास्वाहा॥ ह्रान

अ. बु
बुध

यगुद्यसागवं. अमिताहं कृतंमोली. नमाम्यमाघपाशनं॥ ^नकींकावंसंरुताथं. कबूधमस्त्रिध्वमानसं. अमाघपाशना
माना. लाकनाथंनमाम्यहं॥ १ ॥ बूधमधुलथिचकंतय॥ वाक॥ सर्वताथगतसांकं. सर्वताथगतालयं. सर्वध
र्मागनेनात्मादशमधुलमूरुमं॥ थनबूधमधु
बूधमधुलसर्वविद्यानूक्यावयहं॥ ॥ॐ॥ आ४
अक्रात्पायवज्रपूष्यंप्रतिहृत्स्वाहा॥ ह्रान॥ ॐ
ॐ॥ आः अमिताहायवज्रपूष्यंप्रतिहृत्स्वाहा॥ थान॥ ॐ॥ आ४ अमाघसिद्धिथवज्रपूष्यंप्रतिहृत्स्वाहा॥ जाम॥ ॐ
आर्यमानमकी वज्रपूष्यंप्रतिहृत्स्वाहा॥ खअकाथूकं॥ ॐ॥ आर्यनाबय वज्रपूष्यंप्रतिहृत्स्वाहा॥ खअथथूकं॥

ॐ आः र्यपाद्युलायेवजपूष्यं प्रतिष्ठा स्वाहा ॥ ज अ थ थ कं ॥ ॐ आर्यता नायेवजपूष्यं प्रतिष्ठा स्वाहा ॥ ज अ का थ कं ॥ पं
 क्षिपहावपूजा ॥ वलि ॥ ॐ नमो वृद्धाय कबूधराय तद्गदया यपवात्मा समचिन्ताय गुं धा तु के क मूर्क्यं सत्त्वा
 र्थं महाइश्वरकवकावि ॥ १ ॥ दं वलि दिव्यगन्धवसा
 वा ॥ धो प्रतिष्ठापनाय आः सुगतवववजपूष्यहाः हं
 प्रदं यचं चैत्तुं कामकाधविषं वितर्कदगधं वा
 चगंदावृद्धं प्रज्ञामनुवलनयः समितवानवृद्धाय तस्मै नमः ॥ २ ॥ स्वकने ॥ गु ॥ साहं भवं नामावृद्धं दशिता ॥ त
 यं ॥ मं दिवसमूपादाय यावदावाधिमधुलेनिखं दुना ॥ गु ॥ वृद्धं रगवक्तं महाकावृद्धिकं सर्वदर्शितं सर्ववे

॥ धर्म ॥

गुगुणका
 गुगुणका
 गुगुणका

अव
धर्म

वीर्यापहं॥ ॥ ॥ महाप्रवृत्तं अरुंशकायं अनुरुचकायं शरदंगच्छामिद्विषदानामयं॥ १॥ धर्ममधुलधि
वकाय॥ वाक्॥ ॥ अरुधर्माय संतंज्ञानचर्यावि॥ ॥ धर्मसमकृतदकायायं लायमधुलमूरुमं॥ धनध
र्ममधुलसखानवाय॥ ॐ धर्ममधुलसर्ववि
य॥ ॐ आर्यप्रज्ञापावमितायवज्रपूष्यं प्रति
स्वाहा॥ ॥ ॐ आर्यदशरमिकायवज्रपू
यवज्रपूष्यं प्रति स्वाहा॥ ॥ ॐ आर्यलंकावतावायवज्रपूष्यं प्रति स्वाहा॥ ॥ ॐ आर्यसध
र्मपुष्टुलिकायवज्रपूष्यं प्रति स्वाहा॥ ॥ ॐ आर्यतथगतगुष्ककायवज्रपूष्यं प्रति स्वाहा॥

ॐ

स्वअथथुक्॥ॐ आर्यललितविष्णुवायवजपूष्यंप्रतिष्ठास्वाहा॥ जअथथुक्॥ॐ आर्यस्वर्गपतासायवजपू
ष्यंप्रतिष्ठास्वाहा॥ जअकाथुक्॥ पक्षपचावपूजा॥ वलि॥ॐ प्रज्ञापानमितायमहापीतमहास्वतमहानी
लवत्तपंकजपूष्यहस्त॥ दंवल्लिपंचामृतं तुंजजि
२वृद्धिवर्द्धधिस्वाहा॥ स्तुति॥ याज्ञात्यादिकइ४ख
जादहनहसत्तासमाकर्षति अज्ञाधंचजगत्समूह
यमहतं धर्मायगस्मेनमः॥३॥ स्वकन॥ गु॥ साहसवनामाप्रवंदशिना॥ तयं॥ मंदिवसमूपादाय यावदा
वाधिमधुलनिखडुना॥ मि॥ धर्मप्रज्ञापानमिताहिधं वृद्धजननीप्रवंधर्मशवर्धगच्छामिविनागनामगं॥

शा. त. ल. पं. भा. ६. क. नि. ६.

धर्म २. ल. पु. २.

व
संघ

२॥संघमधुलथिचकंतय॥वाक्॥सर्ववजनसंपूर्णःसर्वालज्जधवर्जितं समरुहडचिरूयं धावमधुलमूरु
मं॥थनसंघमधुलसखानवायक॥ॐ संघमधुल सर्वविघ्नानूत्सादयं॥खानमधुलउयकंतय॥ॐ आर्याव
लाकितं श्रवायवजपूष्यं प्रतिष्ठु स्वाहा॥दथुस॥
न॥ॐ आर्यगग शःगं जायवजपूष्यं प्रतिष्ठु स्वा
तिष्ठु स्वाहा॥थअन॥ॐ आर्यवजपाशयवजपू
यवजपूष्यं प्रतिष्ठु स्वाहा॥खअकाथुकं॥ॐ आर्यसर्वदिवनदविस्कंतिनवजपूष्यं प्रतिष्ठु स्वाहा॥खअथथुकं
॥ॐ आर्यजितिगर्हायवजपूष्यं प्रतिष्ठु स्वाहा॥जअथथुकं॥ॐ आर्यखगर्हायवजपूष्यं प्रतिष्ठु स्वाहा॥जअ

३

काथुं॥ पञ्चपञ्चपूजा॥ वलि॥ उं नमालोकनाथाय दवास्तवनवयक्रवाक्रमादिरिर्वेदितापादपद्मायभ्र
 ९१ यनावकसत्वाध्वनश्चिंतातत्परायमहाकावुधिकायः॥ दं वलिपंचामृतादिसहितंगृह्ण २ सर्वसत्वाध्वनवका
 दिइ४ खाइलावय २ उध्व २ समूध्व २ वृध्व सत्पनध
 रुद्रस्वाहा॥ स्तुति॥ चत्वारपत्न्यत्रकारवसुविस्
 कामहायागिनः॥ त्पक्षोववपूजलाहगवतायस्मिं
 तस्मेनमः॥ ४॥ स्वकन॥ साहंभवनामानुवंदशिता॥ तंयं॥ मंदिवसममूपादाय यावदावाधिमधुलनिखधुना
 ॥ शि॥ अवेवर्लिकसंघसबधंगळामियइताआर्यावलाकिर्गध्वनं॥ अवेवर्लिकवाधिसत्वंगधममयं॥ शि॥ स

माहापुत्राः ३० अमेश्वराय (कोलपुत्र) मधोचोना

दीक्षातनेत्र
 सर्वसावा ७ कृष्णकर्म मधुनेप्राणिनां कृष्णकर्म ११ तया वीरमम ना

अब
कथा

मन्वाहबंगुमादगदिगलाकधागुसन्निपतितावृद्धाहगवकावाधिसत्वाध्व-आचार्यापाध्यायो॥अहमवनामा
यत्किचिक्लायवाघ्ननातिःसर्ववृद्धवाधिसत्वामातापितृनोतदन्त्याःसंगम्य००हजन्मनिहवांतवधू-मयापा
पंअकर्मकृतंकाचितंवाहवन्॥शि॥तत्सर्वंएकध्व
चार्यस्यांतिकंअग्यावचयाप्रवचया-प्रतिदंशन
न्वाहबंगुहदकयथातंआचार्याहंतायावजी
तगम्ता-लज्जितादयावक्तुःसर्वसत्त्वेषुअधुजकुरुकुरुकुरुदपिपिलिकामूपादाय॥शि॥एवमवाहं००मांव
लामूपादाययावच्चवागिगमिमिनिसूर्यादयान्व-पाध्मतिपातंप्रहवंविवमामि॥शि॥निहंतदधु-निहं

अमोघ

७

संज्ञा

आतिरुच्यु २

दीर्घावस्था
(क्षमादेमा)

गुह्यमेव
उक्तं

अव
अर्घ

ॐ अनुविधियं अनुकरामि ॥ गुणस्कितनक ॥ धन अर्घ्याय ताय अङ्गुल साइद्र भलसि चूलवा ॥
स्वां धूलितस्य पंगुलिमधुलसंहायक ॥ वातासरुय ॥ वाक् ॥ ॐ सव २ शिवि २ कव २ पच २ रुच २ हा २ ही २ हं २
ॐ कानव वक्रवंगधव २ धिवि २ धूर २ तव २ मव २
२ तप २ रगवनू सामादित्पुजमव नूध कवचवुश्र
तिष्ठत्वाहा ॥ ॥ धनवतकाङ्गा रुकंतय ॥ मनु
रुद्रत्वाहा ॥ धा २ १ ॥ अनियासंलाक धवमधुलसकायायक ॥ मनु ॥ ॐ नमातगवतं अमाघपाशलाकं ध
नायधर्मसूत्रं प्रयच्छामि वरुधर्मं जी ३ ॥ ॐ वा ॥ ध्रुव रुद्र कवचवसुत्वाहा ॥ धननिष्ठत्वाहा नवायक ॥ मनु

८

॥ वाजि ॥

य ७६३॥

सागुं आशा
कृष्णं मावसी ॥ १॥ ॥ ॥

अबु २१
स्नान बोये

मुक्तयवृद्धत्वं पापयमु॥ ॥ विसर्जनयाचक॥ सिंदूरदण्डलासवृत्त॥ शीलचंदनलिफांगमध्वनपवावचध
 वृतावाधंगकसूमाकीर्णविचहध्वंजथासूखं॥ उं कृतावः सर्वसत्त्वार्थसिद्धिदत्तायथानूगमगच्छध्वं वृद्धवि
 षयंपूनवागमनायच॥ उं आ४ हं वज्रमधुलम
 स्नानककार्य॥ वृत्तकानहानक॥ मधुलअय॥
 आशीष॥ चतपूजा॥ मूलयादक्रिष्ण॥ शिष्यद
 ॥ सतिषूनूविसर्जनयाय॥ ॐ॥ ॐ॥ तिअमाघपाशअष्टमिवत्तविधिः॥ ॥ शिष्यपनिपावदायातकच्छाया॥
 गुदूपनिअत्यंतवद्वसअन॥ अधिवासनयागुविधिमालकाथपनायाय॥ प्रतिमधुलतद्रकलशगद्यकल

२

१॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

॥ गङ्गापकलः ॥ सगङ्गागङ्गा मत्तमूर्खपञ्चगव्यपात्रपञ्चमालिभ्रदिभ्रतवाहिभ्रहियकवियगुदकं
॥ मूलाचार्ययागुद्वदव॥ उपाध्यायागुद्वदव॥ यजमानयामूलद्वदव॥ माताउपाध्यायसुतकाश॥
सूर्यार्घ्याय॥ पूजातां उशकल्पयाय॥ गुन
जा॥ पञ्चकंठभ्रादिपूजा॥ दवप्रतिपादपू
छुलथिल॥ किगवियथननंदिनमस्का
३ ॥ उं नमः शीचक्रसम्भवाय॥ अस्पद्वक्त्राधुखधुंगहचविशगिरूलावकामनूगुजगामदिककवादं
प्रकृतिपवित्वं तच्छूकाकाशयश॥ मरुत्सेधनुवृंदाहवसलिलगचिसागनंतांदवयोहस्ताहंजगपा

अबु
अभ्यंतर

तत्रवगुहगवतःपद्मनृत्यध्वनस्य॥भ्रपिच॥यासासंसावचक्रविचचयतिमनःसक्रियागमत्महंतासा
धिर्यस्यप्रसादादिशगुनिननुवंसामिनानिष्पपक्व॥तच्चप्रत्यात्मवेशंसमुदयतिस्त्रवंकल्पनाजाल
मुक्तंकुर्यात्तस्याधिपद्मंशिवशिविनमयंसद्गु
मःशीचक्रसमवाय॥गीत॥विश्वसवाब्रह्
धि॥कलशसगवंमत्तगद्यकलशभ्रदिस्था
उपाध्यानंकिंचदपूजा॥तावता॥उंमदितिगुन्यतानंतवजातवविस्त्रुःहंजःविश्ववजस्त्रिःहंकाव
कीचधंजाकलद्यजविसर्पेनिसध्वकसधुीरुयवीजकाववजपंजैलवजसवजालवितानमध्वक

पुजा

१०

नवरेकोभूतप्रपाकारः

लङः सहस्रालविश्वकूलिगमयीरुमिस्त्रितायः॥ तन्म (ध्व) मटिति वज्रसत्त्वचूपाकृष्य गेलाकविजया
पविमानावज्रहंकावाविश्वकूलसूर्यरू हेववकालनामालीछाचवधद्वयक्रमकृष्यनकल्यांतनवव
समवीचिसंचयः कुवलयंनिवनिखिलजग
वारूवकुण्याडंशत्कटलल्लजिह्वाप्रतिमूरं
ललाटरूपं चकपालगलावलम्बिमलदग
यचमांस्वभानिलानंतवलयिताईकालंकपिलकुरुचसूककादिनागवाजाकृतमधुलावजघंभन्वि
तकनाथां वज्रमूर्ष्टिद्वयंपृष्ठलग्नंकनिष्ठिकाद्वयं शंखलितं तर्जनीद्वयंप्रहृतमिति गेलाक्यमूड

अबुकी
हं

यास्वाहप्रश्नासमापन्नः सवकनात्पां अंकुशपा (शेवामात्पां कपालखट्वांगदधनो गर्जहंकावमूखवदि
मूखः स्वहृज्जहंका नात्यस्तु नवस्मितिः दशदिग्विघ्नान् आकृष्य हंकावस्तु चित्तदशदिगुसमर्पयतु ॥
॥ आपापूनिलं जनला हागिनवक्रा मन्त्रुना
पूजायाय ॥ वज्रगायममसिद्धां किंचिदधि
लनलय ॥ अकालमूख ॥ वलिदातव्यं ॥ रु
पूर्वनिस्पृमिदिगसंकिंचिदगाय ॥ ॥ पूर्वकाकाशं रगवर्तिमाकर्षयतु ॥ उंकाका (शयघघाटय
सर्वदृष्टदवन्दा सपविवाचान् कीलय हंरुट् ॥ पूर्व ॥ उरूचउलकाशं रगवर्तीमाकर्षयतु ॥ उंउल

नवकाचन्दनपकानवूलवक्रापायाय ॥
संजाप ॥ जाप ॥ मन्त्रु ॥ हं ३ ॥ यधर्मो ॥ सिद्ध
ति ॥ शताक्रव ॥ ॥ थनउपाध्वा नंदनाउना

काश्चघघघाटय २ सर्वदृष्टयक्राधिपानसपविवाचानकीलयहंरुद्र॥ उरूच॥ पश्चिमश्चानाश्चंरुग
वतिमाकर्षयत्॥ उंश्चानाश्चघघघाटय २ सर्वदृष्टान्वेबूधानसपविवाचानकीलयहंरुद्र॥ पश्चिम॥
दक्षिणेशूकलाश्चंरुगवतिमाकर्षयत्॥ उंशू
नकीलयहंरुद्र॥ दक्षिण॥ अग्नेयमजतिं
टय २ सर्वदृष्टानिसपविवाचानकीलयहं
कर्षयत्॥ उंयमदूतीयघघघाटये २ सर्वदृष्टनेत्राणानसपविवाचानकीलयहंरुद्र॥ नेमत्प॥ वायूव्यय
मदंष्ट्रीरुगवतीमाकर्षयत्॥ उंयमदंष्ट्रीयघघघाटये २ सर्वदृष्टवायूनसपविवाचानकीलयहंरुद्र॥

अ. वृ
अ. भ्यं

वायुय ॥ ॐ ॥ नमः मथनीमाकर्षयत् ॥ ॐ यममथनीयघघघाटय २ सर्वदृष्ट ॥ ॐ ॥ नमः सपविवावानकी
लयहं हृद ॥ ॐ ॥ नमः ॥ उर्ध्व उर्ध्वीयचक्रवर्त्तिनमहाकाधवाजं आकर्षयत् ॥ ॐ ॥ उर्ध्वीयचक्रवर्त्तिनमहाकोध
वाजं घघघाटय २ सर्वदृष्टवक्त्रादिनसपवि
हाकाधवाजमाकर्षयत् ॥ ॐ ॥ सूक्तवाजं घघघा
हं हृद ॥ अर्ध ॥ पं. लां. घै. सु. त ॥ थनदेवपूजा
दिपूजा ॥ धूनकाठाप ॥ क्षिपवाचपूजा ॥ गताऊव ॥ थनगुनू. माता उपाध्या. साक्रं पिहायाया ॥ अष्टमि
वतयागुभाशमसवाडागुनू मधुलवलिविय ॥ एकदावमधुलसदनकाष्टकाउकागुकिनसंमधुल

२५५६७८९०

५ पञ्चम्याधुनयात्रेतिविश्वामयकान्तमयात्रे

२५५६७८९०

२५५६७८९०

२५५६७८९०

२५५६७८९०

पूजा॥ धनशिवपनिपनिकमनतसंगुवमधुलदनक॥ खकन॥ गु॥ तपशिवमकंधीवहवः कृतमधु
लंपूषांजलि॥ २॥ हलाकनुवात्पदयार्थेनापिपवलाकत्पदयाय किंतु तथागतकायप्रयसंप्राफयमधु
लप्रवेशकाय॥ रावना॥ स्वसवीचमूर्खनप्रव
धमृष्टोमूर्खनविशोसप्रज्ञापमस्मान्स्वहृदी
तेदवीरुतेचरिषिकानुशीसम्वनूपेधध्यात्वा
खकन॥ शि॥ मृष्टजन्मेज्जवानकमकवादिहयापहान॥ तवाधिचयउद्धृतांस्त्वमभस्माभस्मावर्तते॥ शि॥
॥ २॥ छामहंमहानाथ महावाधिनयंदृष्टं॥ दहिमसमेयंतत्वंवाधिविचरुचैदहिम॥ शि॥ वृद्धधर्मचै

शिवजानिर्गतप्रज्ञापमस्मान्स्वहृदीजकिच
जकिचधमृष्टोमूर्खनविशोसप्रज्ञापमस्मान्स्वहृदी
॥ मधुलस्यपूर्वद्वारउपविश्याचयत॥ ॥

अथेकाने

२५५६७८९०

२५५६७८९०

अ. व.

२ द्वा

संघच. दहिमहावधायं॥ प्रवशयस्वमहानाथ. महामाऊपूवव॥ गु॥ ॥ वहिवत्समहायानमरुचर्यान
 यंविधिं॥ दशयिष्यामिहसमाकृताजनत्वंमहानय॥ गु॥ ॥ वृद्धास्त्रियध्वसंरुताकायवाक्त्रिरुवजिनः॥ सं
 प्राफाज्ञानमगुलं वज्रमरुप्रतावनेः॥ गु॥ ॥
 सैन्यमहायाचं. भक्तसिंहादिहिवलेश॥ गु॥ ॥
 तस्मात्प्रतिमिमां वत्सकृत्सर्वरूपाफय॥ ॥
 सर्वेप्रतिदिग्भमय॥ अनुमादजगत्पृथ्वं वृद्धवाधोदधमनः॥ विपाथयत॥ नि॥ ॥ चक्रंवेवर्त्तयसक
 लं. दत्तानाथवदस्वम॥ चक्रदवतयातत्वं. आचार्यपत्रिकर्मच॥ नि॥ ॥ समयेसर्ववृद्धानां. समचंगुफ

अपकप्रत्येकमहायोगस्थिता

= आपकप्रत्येकमहायोगस्थिता

१३

५३५५५

गुरुमि.

^१मूरु^४मं॥^७आचार्य^{१२}स्या^{११}हं^{१०}नाथ^९सर्व^८सत्त्वार्थ^७का^६वधा^५त॥^४शि॥^३समन्वा^२हृवं^१गुमां^{१२}नाथ^{११}सर्व^{१०}बुद्ध^९वाधि^८सत्त्वान्^७भ
^१हं^२ममूक^३नामा^४ॐ^५मां^६बला^७मूपा^८दाय^९या^{१०}वदा^{११}वाधि^{१२}मधु^{१३}लनि^{१४}खधुना॥^{१५}गु॥^{१६}उत्पा^{१७}दयामि^{१८}पं^{१९}बमं^{२०}वाधि^{२१}चि^{२२}रुम
^१नूरु^२वं॥^३यथा^४गिये^५धना^६थनां^७संस्वा^८भो^९कृत^{१०}
^१क्राम्प^२हं^३हृ^४छ॥^५बुद्ध^६धर्म^७क^८सधं^९च^{१०}गि^{११}चला^{१२}गम
^१वया^२गजं॥^३वज्र^४यधु^५क^६मूडा^७क^८प्रति^९गु^{१०}क्रामि^{११}त
^१कला^२चयं॥^३चतु^४दा^५नं^६प्रदा^७स्यामि^८षट्^९कृत्वा^{१०}गुदि^{११}नं^{१२}दिन॥^{१३}शि॥^{१४}महा^{१५}बल^{१६}कल^{१७}या^{१८}ग^{१९}समयं^{२०}क^{२१}मना^{२२}बम॥^{२३}स
^१धर्म^२प्रति^३गु^४क्रामि^५वा^६क^७गु^८क^९प्रिया^{१०}नकं॥^{११}शि॥^{१२}महा^{१३}पप्र^{१४}कल^{१५}गु^{१६}ध^{१७}महा^{१८}वाधि^{१९}समु^{२०}ह्वं॥^{२१}सम्ब^{२२}वं^{२३}सर्व^{२४}संयु^{२५}कं

मेवोपायकाभुविका
 सुपका-
 विद्यादात
 भवदान
 अर्थदात
 अशासाव. ४

श्रीनमः गुरुं वन्द्य आत्मा
 शान्तिवशीलं रागसंभक्त
 विद्वत्ताः उच्चात्तः भारता

केशव. ४
 अशा. ५
 शान्ति. ५

[illegible]

अव
र द्वा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 शक्तिगुणमिसर्वतः ॥ १ ॥ पूजाकर्मयथाशक्त्वा महाकर्मकृत्वा च यः ॥ २ ॥ उत्पादयामि पञ्चमं वाधिचिह्नं समू-
 ह्वं ॥ गृहीत्वा समन्वयं कृत्वा सर्वसत्त्वार्थकारिणम् ॥ ३ ॥ अतीर्णं कृत्वा यिष्यामि भूमौ कृत्वा च याम्यहं अ-
 नाश्वस्तानां श्वा यिष्यामि सर्वसत्त्वान् स्थाप-
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ ॐ स्वधुवाहं हं रुद्र ॥ ५ ॥ धर्मं नृप-
 ऊपमचक्रापरिस्मृत्यैव च सत्त्वानि सूर्याचन्द्रस-
 चिह्नयित्वा ॥ आकर्य शिवादिनिर्लाजना ॥ शंखलंखनहाय ॥ धनकथूकपाशगलसंचरनतिचक्रं ॥ ६ ॥ ॐ आ-
 ४ हं ॥ स्वानं चक्रं ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥ धनमाशानपरिचक्रं शिवादिनिर्लाजना ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

तयने॥ स्वस्तिकसंगय॥ दंतकाष्टुअनडातक॥ मंनु॥ ओं वज्रहासहं॥ अष्टिदनागुकलशलंखन॥ नीचाय
 क॥ मंनु॥ ओं जीविशुद्धधर्मासर्वपापानिचास्यवि॥ अधयनिर्विकल्पानपनयहं॥ धनउकवावमधुलद
 र्भनयातक॥ वतका॥ दकुशदं२मधुलगतय
 संवजगधिष्ठियाओखधुवाहामंनुनवजा
 नुनलातसचिनाओ॥ धओ२थाससंगय॥ ॥
 पकंपुना॥ तच्छुर्वहिक्रयंयाति॥ दृष्टमधुलमीदृशं॥ उत्सनाइर्गतिं॥ सर्वदःखस्यसहवाः॥ शि॥
 यथांचयंवनंस्मिंमतिश्चअनूनिमेल॥ अययूष्मातिवगुलालध्वलारामहान्मतिः॥ गु॥ यनयूयंजि

ह

गुरु

अ. व.
ह. द्वा

नेः सर्वेः सपूजे विरुसा सने ॥ सर्वे पविगृहीता ^{संयुक्तं तां १८५ पी.} ^{कई.} ^{हस्ताक्षर} जायमाना महान्मतिः ॥ तनयं महायानं ^{महा...} सृजाता हिर
विषय ॥ गु ॥ ३४ मार्गवचः श्रीमान्महयानमहादय ॥ यनयं ममि ^{थनजाता} ^{पीसा} ^{पया के नो} यन
मूलाचार्यशकृषपूठरिविय ॥ मरु ॥ अंधीत्वा
रं लय ॥ वज्रवज्रा ॥ शिष्यपनि ^{थन} ^{छाया} ॥
पक्षपचावपूजा ॥ शताक्रव ॥ थनइहाउना
रुमापन ॥ आशिर्वाद ॥ चतपूजा ॥ मूलयादकृष्णसकस्तंमिहृत्वाविय ॥ दगुलिसमय ॥ खाजलहिय ॥ गी
तपीरंज ॥ समयाचक्रगशचक्रधूमंगविमूखाल ॥ अधिवासनइवियगुउयुंनंरुलसा आगंवापूजा

१ कृष्णसूत्रसूत्रहापीशिष्यपिशंकरमांगुल्यर्धनकायगुह्यशिष्यवैदिकश्वप्रशयनेनेअस्तसप्रजुलसाप्रमृत्कृत्तलीमंत्ररक्षायाम्॥
२ कृष्णसूत्रसूत्रहापीशिष्यपिशंकरमांगुल्यर्धनकायगुह्यशिष्यवैदिकश्वप्रशयनेनेअस्तसप्रजुलसाप्रमृत्कृत्तलीमंत्ररक्षायाम्॥

[illegible]

दु. वि.

: हं वं हा ४ प्रसिद्धः ॥ ॥ त्वाकस्वानजा दं द्वा वस्वावन पश्चिमसचाडा अ पूर्वया द्वा वस्वावन ॥ ॐ वजा याय
यसमयप्रवणयहं ॥ ॥ मकुशचकुर्वावसंवन रुगनवाना अस्वानमधुलसर्वा याहावयाय नृत्तमूडाका
संस्वानमालाथमनं ॥ ॐ पवमसूखा गयसूललित विलागनमामिनमित्तुः हं वं हा ४ ही ही ही ही प्रति
ॐ कूसमां अश्लिनाथहीः ॥ ॥ रुनेयधृथासंमधु ॥ ॥ लस्रचाकउलगं ॥ ॥ आका १५५ त्यादचिद्र
त्वादनादिनिधनपवः महावज्रसमयसत्त्ववजा ॥ ॥ सवजप्रसिद्धमसर्वोक्तममहाः सिद्धिमाहेस्व
यादिदेवत ४ सवजधवाजासिद्धिमपवमाजवः निर्दाय ४ ५५ ५५ त ५५ अपिसर्वबागभनूवागिदा ४ तत्त्वमसि
द्धिमहगवन्महावा १५५ महावत ४ अजासुधधर्मागवादिमूककृथागत ४ समनुहइसर्वात्मावाधिसत्त्व

द्वारखने

१६

प्रसिद्धमसर्वोक्तममहासिद्धिः माहेस्वर्यागमूद्रयासिद्धिवज्रमहात्कर्याचङ्गगर्हपतममसर्वसत्त्वमनावा
पिसर्वसत्त्वहृदिस्मृतः सर्वत्रपिताचैवकायायसमयायिधायनसत्त्वनसत्त्वनप्रक्षीपायान्ममधुलेन
सत्त्वनमनाथकामास्त्वेवविपुत्रयत॥ ॥
वक्राशुद्धाकनाबिलाभयाकानतिबोणाचह
निर्याताः तिसत्त्वनमधुलेप्रतिविम्बस्फुट
तलहिचक॥ थनंलिकल्पानगुलपनिसनपूजातलपूजासमलक्षनकं मायाशुभावेद्यातकं पाशुजान
कंपिहाउय॥ आशुमसचाडाशुचूमाशुशनिप्रसनगूचमधुलकुगुलियायधूनकाडाविसर्जनथनशि

द्वि

यपनिपवित्रमममसंगुममगुलदनकविसर्जन॥ शिष्यतावना॥ ततश्शिष्यं वेलाचनारूपनावलम्बितं वि
हाव्य॥ ० ॥ सर्वकर्मिककलशजलातिथिकं॥ कलशलंखतस्य॥ शंखलंखनहाय॥ हृत्कक्षसि वस्त्रवज्र
पद्मचक्रसूर्यचन्द्रापरिचरुहं हंकाचं वक्रं भ्रा॥ काचं शुभं काचं वस्त्रिप्रताश्च वसवी वं हं॥ ॐ
स्वस्वार्थ॥ निलांजनवज्रताचामतलं नाया॥ प
थालंकाचवस्त्रपूजाभयसमूहस्त्रवधसमय
जादकृष्णदंशकयकंगुव्यातदाहलप॥ वाक्॥ ॐ चतुर्वर्त्तमयं मयूखादि॥ धनगुर्वमाणास्त्रभययातक॥
वाक्॥ ॐ श्रीं १४ वववसस्त्रावायसगुर्वपस्त्रानाय ॐ वक्राचार्याय सकर्मवज्रि १६ पादार्थप्रतिष्ठास्त्राहा॥ पू

श्रीः

१७

यथासुखं यमुनकाशे ॥ १४ ॥ मयूख

जादकृष्णदं२कायस्वानपादप्रकावलंवनहासंगुर्वमाणाविय॥वाक॥यजमानस्यार्थयप्रतिभ्रयास्मिन्
वाहिलायितंसिद्धिर्हवकुशनिधंरुचू॥०॥थनथउ२थाससंतय॥श्रिकायाधिष्ठान॥माजानंयंचगन्धनक
थकपानगउसतिचक॥ॐआ४हं॥माजानसिं
स्त्रीषहं॥थनगुचूर्धदवगुचउपाधाचर्चापा
वधयागुंथनगवचाव२गालपा२प्रतिविषहा
नवचमानयहं॥हिलकउपथहं॥ॐखधुवाहहं॥ॐआ४खंवीवाहं॥ग॥ॐतसंमाजानमालाउइतय
नलग॥कृपिनतसंगुचूर्नं॥कस्त्रंहासुचतपिथति॥गू॥शियनधायक॥शुह॥ग॥हंमहासुखतिशि॥

दुःवि
प्रवि. नृ
त्य.

॥मालसवजंथिय॥ॐ सर्वथागचिरुमूल्यादयामि॥थनसमयद्युन॥लाथनयक॥ॐतिपाठयन्॥ॐवा
धिचिरुमूल्यादयामि॥वजननूगउथिय॥ॐसूचनःसमयस्त्वंहा॥सिद्धवजयथासूखमिति॥गु॥अथत्वं
सर्वतथागताधिसिंहारविद्यति॥गु॥नचत्वं
ष्टायवक्तव्यं॥नचश्चादातव्यं॥ॐफू॥ॐआः
य॥इत्यने॥ॐमहावतसूहृत्सूतायसूपायाम
क॥गीत॥प्रविशतु॥पदपतिंदितक॥मूलनृत्य॥लाहातहाजलपंपूर्वधावसा॥वागवेववि॥प्रविशतु
गवनमहामाऊपूचदंशयिअनूरुचवाधिपदं॥ऊचामवधायवन्धनमाचयपचमामृतमयपप्रगू॥

यदंसर्वतथागतापचमचरुस्यमधुलप्रवि
खद्युवाहं॥ॐआ॥खंवीवाहं॥गमजलिका
वजसत्वायसिद्धिमां॥॥थनमधुलउय

क्र॥ अहिवक्त्रमहायानमशारुमदं गयिचिन्नामृतपानवक्त्र॥ मध्य॥ गु॥ उं सर्वतथागतपूजाप
 स्खानाय आत्मानं निर्यातयामि॥ सर्वतथागतवज्रसत्त्वद्विष्टिमां॥ १॥ दं गयिगिष्यहमं गाचव
 गुकृतथतानूचवाधिपदं॥ ॥ सर्वतथागतपूजनयायिमपापतनू २ पर्युपाशदिक्षितपनि
 वष्टितकमलकुलिशपवित्रामव॥ पू॥ गु॥ ॥ सर्वतथागतवृक्षपूजापस्खानाय आत्मानं नि
 र्यातयामि॥ सर्वतथागतवेलाचनाविष्टिमां॥ २॥ कृष्णमउदकमकूटाशनिकमलाजिनकुलसम
 याचार्यपदं २ मन्त्राजनदप्यंशवक्षपदशवलमतिपदतासूत्र॥ दक्षिण॥ गु॥ सर्वतथागतपू
 जाहिषकायात्मानं निर्यातयामि॥ सर्वतथागतवज्रवत्ताहिषित्रीमां॥ ३॥ नमामि २ शीचक्रसं

१ पश्चिमा॥ सर्वतथागतपूजाप्रवर्तनाया मार्गनिर्यातयामि॥ सर्वतथागतकर्मप्रवर्तयामि॥ देशपितृणां॥ उत्तरानामभिर्भोजनमंत्र

द्वि
पञ्च
दश

स्ववगुनूवाक्कृदुधाविया २ सतगुनूचरदाममलपुसादं अनूचसिद्धिपदमाकुरुलदं॥ उरुच॥
गु॥ उं सर्वतथागतपूजाकर्मदिआत्मानंनिर्यातयामि॥ सर्वतथागतवज्रकर्मकुरुष्वमां॥ क॥ उरि
वदुमहायाननयारूमदं गयिचिकामरुपा नव॥ पूर्वस॥ गु॥ उं गुनूचव॥ धपस्त्वानाया
त्मानंनिर्यातयामि॥ उं सर्वसत्त्वपविशाधमया त्मानंनिर्यातयामि॥ ॥ वागकाय॥ ॥ तिपं
त्रीपक्षम॥ शिष्यपनिथय॥ २थासंनय॥ ख॥ कन॥ गु॥ ततवयत्वंसर्वतथागतकुल्लेषवि
ष्टुसुदहंतवज्रज्ञानमूल्यादयामि॥ यनज्ञाननत्वं सर्वतथागतसिद्धिपिपास्यति किमूचनान्यासि
द्वि॥ ॥ नचत्वयत्वं अष्टमशुलस्यपूवतावकावां मारुसमयव॥ थति॥ ॥ थनयद्यथासंमाल

१६

भवजंथिय ॥ गु ॥ अयं न समया वजं मूर्ध्ना न स्तुतयं यदि त्वमिदं कस्य द्रुयात् ॥ हनं वजनं नूग ७ सु
 थिय ॥ गु ॥ वजं सत्त्वस्वयं न यद्दुदयसमवस्थित ४ निरिंशतं तत्कथं यायात् यदि कथा न ॥ मंनयं ॥ ॥
 त्याज्ञाय ॥ थनकाषपानखाजनाथ फुरुसथन
 दं न नाविकं वाचि समयातिक्रमादहं न समयं
 दियक ॥ गु ॥ अयत्वं प्रवृत्तिं न वाहं वजं पाधि यदहं कुर्यामिदं कुरुतस्त्वया कर्तव्यं ॥ गु ॥ न च त्वया हं क
 र्त्तव्या मां न विवना पविहाथ शकानं क्रियां कृत्वा न वदन् प्रनं स्यात् ॥ ० ॥ थुति समयदानविधि ॥ थन शिष्य
 पतिथिथिमथियकं नय ॥ आवं गतावना ॥ आगं वा छाया गुस्वाने नय ॥ न ४ स्तिवचिक्का वजयाग हृदय

दुवि
कोख
आवे

मावयसुदनुशिष्यमनितिशून्यतानंतवंआ४कावजांमिताहचूपनिष्ठासर्वतथागाधिनित्यतांवज
सत्त्वमभावशक्तिनिवाचीयत्वातस्यद्रुदिवंजातवंकु४काद्यपीतपृथिवीमधुलसूर्यनिलहंकावगिनसि
वंहवशुक्रवर्तुलकलशकंवावृक्षमधुलाप
कधन्वाहनीलानीलमधुलचन्द्रकंआका
वजानानीययथाक्रमंतत्त्वताववृहह४आ४
मुलादीपितंनंपविनतंनृकनृशक्तिकाशसूचत्किवधनलमधुलसूचकमे४काव४धालिङ्ग्यमा
नंगियमे४कावनस्मिसमूहे४पादधुधिवप्रविष्टे४हंकावादिनस्मितिश्चापूर्यमानसमष्टगवीनंधाया

विचन्द्रशुक्रहकावंक४धुयंकावजचलपताद्ययं
वंविहाव४स्वदृष्टीजनस्मितिश्चिरूकायवाक्
हंकावधकविहाव४पादयानधस्तानवायूम४
नंगियमे४कावनस्मिसमूहे४पादधुधिवप्रविष्टे४हंकावादिनस्मितिश्चापूर्यमानसमष्टगवीनंधाया

त॥ ० ॥ इ न अ न ता ह्रा य ॥ धूप य ६४ वा द य तू ॥ आ व ६१ म कु ॥ उं आ व ६१ य स्ता ह य न व न व चान य २ हं ह ४
 ओ मे १ ॥ १० ट ॥ थ न मू ला चा र्य आ ली छ प द या रुं थ अ स स्त व न रू प ता ल पं त अ श व नं आ व स या य ॥ द
 म नू था क धूप द ह ह नं मू ल उ पा धा नि स्म नृ
 व ग य रुं गी रुं नू का य वि द्य ह वि या ना जा य धी
 व ग वि धि ॥ थ न गि य प नि स्म म न क न मू ला
 स्म ॥ थ न पं चै र्ध स्त च कं ह नं थ न गि य प नि म धु ल उ य क ॥ ग थ ॥ ॐ त्व यं म धु लं स म्प क म या गि
 य प व गि त ४ य थ पृ थं त थ स्ता स्तु द व न नां कू लो क मा नू ॥ या ह क सि धि र्दे व द स्त र ग अ य स्मिं शु र ज

त्व या य ॥ गी त ॥ न मा हं ॥ उं ति रु व रु म हा क्री धा
 म हं स्ता हा ॥ थ म रु आ व ६१ सि द्ध रु य उ अं ति आ
 चा र्य न द न ॥ गी त पी त व क रु रु रु वि ता व ला

तद् वा ३
 ५१ क

इवि
ताहा

नं यादकप्रध्वानूरावश्च तादृगस्यास्तु मधुलं ॥०॥ धनमधुलसपूष्यपातनयातक ॥ ॐ ह्रस्वालो लस्वान
कूलविय ॥ मधुलयाहुता न हाथजाजलपयकंतय ॥ ॐ ॥ ॐ तिष्ठवज्रदृष्टा महवः स्वता महवदृष्ट
यं भवितिष्ठसर्वसिद्धिं भवयच्छुं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ॥
ॐ श्रीह्रं वृकं वज्रपूष्यं प्रणिच्छुं ॥ मधुलस
॥ वजनगिवसधिय ॥ ॐ कृतावसर्वसत्त्वा र्थ
चन्द्रअधिपतिं ललाटं वरुं ननु द्वयं ॐ द्वयं सद्बाला ॐ द्वयं विलास ॥ वज्रसत्त्वस्वयं नं यच्च कृत्यादनत
त्यव ॥ उत्थातयति वज्राज वज्रचक्रवन्तून् ॥ ॐ वज्रहासउत्थाटयहं ॥ ॐ ज्ञानचक्रं ह्रं अ॥ स्वाहा ॥ अ॥

आ॥ रवं वी न हं प्रणिच्छुं कृत्स्ना ॐ लिनाथ हा॥
स्वानतयक ॥ अ॥ पतनकाकायक ॥ विसर्जन
त्यादि ॥ ह्रं ह्रं आ॥ मे मूत्रिति ॥ ततागिष्यस्य ह्रं
॥ वज्रसत्त्वस्वयं नं यच्च कृत्यादनत
त्यव ॥ उत्थातयति वज्राज वज्रचक्रवन्तून् ॥ ॐ वज्रहासउत्थाटयहं ॥ ॐ ज्ञानचक्रं ह्रं अ॥ स्वाहा ॥ अ॥

पठनलिकाय ॥ थनशिष्यनमधुलपूजायार्क ॥ दक्षधर्मदंष्ट्रायक ॥ किंवदन्तक ॥ मुक्ति ॥ सर्वज्ञान
आदि ॥ थनमधुलयावकन ॥ स्वानरुक्कयावकन ॥ उपाध्याय ॥ ० ॥ शिवसूक्तीयवापूष्यपतंति नदा
महामूडासिद्धि ॥ लाचनमुखवामनुसिद्धि ॥ उरुमांगउरुम ॥ मध्वमांगमध्वम ॥ अ
ध्वलांगत्वंधनं ॥ विम्बस्यातिद्वचिवात्समी ॥ पञ्चसिद्धि ॥ दवतानां तु कियस्वस्मानका
द्यादिविष्णुदत्ताज्ञानव्य ॥ दयादवतयानक ॥ वेयदिपतितत्कलंतस्यतवति ॥ पंचरत्न
खाद्यहिपातनपून ॥ क्षिपद्यावययावत ॥ तपुवहिपातकडसिद्धि ॥ बाहवर्तुलखासूबाहवजा
वलिबहिधनास्मिसिद्धि ॥ मधुलंचासोदशयत ॥ किञ्चित्ममात्रक ॥ धकथयित्वावहिप्रवशनीयं

दुवि
स्वानरव

॥०॥ हनंरवकन ॥ गु ॥ ॐ दं नमः सुलं पश्चिमावगनसांपतं ॥ त्वंच वृद्धकूलजातमूढामकुंचधिरिता ॥ गु ॥
संपदासर्वसिद्धिनांसमया ॥ गु ॥ रुविष्यसि ॥ वज्रपद्मागुललितं मकुं खावाधनं कुरु ॥ थनगिष्यपनिस्सनधाय
क ॥ नि ॥ वज्रमधुलं महामधुलं प्रविष्टाहं ॥ ॥ नि ॥ यागमधुलं महामधुलं दधिनाहं ॥ नि ॥ गु
॥ गुफमधुलं महामधुलं दिक्किताहं ॥ हा ॥ हा ॥
स्वानविषयदकृष्णदं २ काय ॥ मनु ॥ उं प्रतिगु
यकविधि ॥ थनगिष्यपनिस्सुपानकृगुलिस्सुचाया ॥ आश नरविदलाय ॥ गिष्यस्वन ॥ गुवृमधुलदनक
॥ विसर्जन ॥ अ ॥ धवना ॥ नि ॥ वाधिवज्रं दवृद्धानां यथादकृमहामह ॥ ममापि शाशनाथं यखवजायंददाहि

॥ गु ॥ हा ॥ हा ॥
म क. ददहि ॥

म॥ लावना॥ ततवज्जसालिखिताष्टदलकमलापविन्दुसूर्यपविश्वशिष्यं सपत्नीकं वज्रध्वनूपं विहाव्य॥
 आषानिवा ऊनलाहग्निवज्जामरु॥ गि॥ वृद्धानामतिथिकं गुजगशाक्षयवज्जिधगुधकवीयथादक
 सुथददस्वमत्स्यहि॥ थनमाशानकलभसि
 य॥ गाथ॥ ते सुथागतेऽप्रज्ञासमापन्नेर्महा
 मार्गशनिर्गततद्वेदेवीपद्ममुखनप्रवशि
 ज॥ सप्रज्ञाकायस्वलावसम्बन्धुपञ्चानसत्त्वाहिन्नमतिविच्यपूनर्जुमूखादिमूर्तिरि॥ पद्मानि॥ गुरु
 गगशमापूर्यस्ति ते लोचनादिविशासहि॥ ४॥ शुद्धजपताकावस्तु वादितगीतनृत्यपूषाकूमादिवृष्टि

दुवि
पंचा
दश

गि
हिः कनकिशलायावर्जितवाधिविचित्रा मृतपूर्यशितकल (जेसंख्येपमानिः १७ तमहिचित्रमानंयागिनी
गद्यगीयमानंमंजुलगीतं॥ ० ॥ अहिषकविय॥ निपालाहातसरुसंतानक॥ गमथा॥ यत्संजलंसकलस
त्वद्दिस्त्रितस्य॥ लक्ष्मीधनः काचनपर्व
पुनः पुनः संजलं हवतु शान्तिकवंतवाय॥ तं
वपुः ४ धर्माक्रमः ४ शान्तिकवः ४ प्रजानां तत्सं
तिमंजुलायः ४ संघानंदवास्तवदक्षिणीयः ४ यः ४ शीनिवासप्रवनागद्यनां तत्संजलं हवतु शान्तिकवंतवाय॥
॥ तिमंगलगाथा॥ ॥ माशानंपमहाऊनपुष्पाययामाउसतय॥ रावना॥ ततः ४ रुंजः ४ रुंकानाधिशितव

गाहंस्तिलाकनाथस्तुमलप्रहीनंवृद्धाविवृद्धांबुज
नापदिष्टः प्रवनाक्रमः ४ रव्यातस्तिलाकनवदः
जलं हवतु शान्तिकवंतवायः ४ ॥ सद्यस्मयूकः ४ १॥

दुवि
पंचा

दश

दिहि ४ वृपंनीयमानं मंजुलगीतकं रावयत् वजाधिपतिनाम (शोकस्य यवंतत ४ कनकवस्त्रादिघटितं च
तसं हवयत् रुत्स्वहावंशानसत्त्ववृपं पंचैतथै गतम (धस्त्रितं शिष्यं च कवर्त्तिनमवधत्वा ॥ मकूटं तस्य शि
वसिमध्वललाटपा (ध्वयमूर्ध्नि एष च यथा
छायकं ॥ गु ॥ ॐ दंतसर्ववृक्षानां शुभातुके नम
हिलक ॥ ॐ वज्रधात्वेऽवनीभूतिषि चैहं ॥ ॐ स
गां ॥ द ॥ ॐ धर्मवजीभूतिषि चैहं ॥ प ॥ ॐ कर्मवजीभूतिषि चैहं ॥ उ ॥ ॐ सर्ववृक्षचूणमक्षिरानमकूटं प
तिष्ठत्वा हा ॥ संखलं खनहाय ॥ ॐ आ ४ वज्रमकूटं गतिषि चैहं ॥ आसूत तस्त्वमहं ॥ ॐ वज्रगुण्य हा ॥ गु ॥ सर्वरावात्स

कमं ॥ ० ॥ थनमकूटं न पूयक ॥ मिसाशकास्तसि
स्तुतं युष्माकं पूजनां थयमकूटं पंचैकलाहव ॥
त्ववजीभूतिषि चैहं ॥ प ॥ ॐ वत्तवजीभूतिषि चै
गां ॥ द ॥ ॐ धर्मवजीभूतिषि चैहं ॥ प ॥ ॐ कर्मवजीभूतिषि चैहं ॥ उ ॥ ॐ सर्ववृक्षचूणमक्षिरानमकूटं प
तिष्ठत्वा हा ॥ संखलं खनहाय ॥ ॐ आ ४ वज्रमकूटं गतिषि चैहं ॥ आसूत तस्त्वमहं ॥ ॐ वज्रगुण्य हा ॥ गु ॥ सर्वरावात्स

पंचगुप्त
संखलं
पतिष्ठ
च २४

भोजन

य

मं ७ नं माखो नं माखो ७
माखो नं माखो ७

माहूनां उकातावाकवस्तिता ॥ अकृष्टानसंरुतं नाकुदानचगा स्वतः ॥ ॐ ति मकृदाहियकश ॥ जि ॥ वाधि
वज्रं धवृष्टानां यथादलूमहामहममापि ज्ञाशनाथाय खवजायंददाहिम ॥ थनमकृदसपाकातय ॥ ददव
मुरवं सक संकारायक ॥ ॐ ति पदाहियक ॥ अ
ममापि ज्ञाशनाथाय खवजायंददाहिम ॥ लावना ॥
नसत्वाति नं रुत्वावजं चाभिगाहात्मकं विचि
शिष्यायाकथूपालथियक ॥ गु ॥ अथाहियकस्त्वमसि वृद्धवजनामाहियकतः ॥ ॐ दकृष्टवृद्धत्वं गुरु
वज्रसिद्धय ॥ गं खलं खनहाय ॥ उं वजाहियकैः सवतस्त्वमहं ॥ गु ॥ सर्वसंज्ञाकवर्धनाकावकूलसंरु

॥ धवृष्टां वाधिवज्रं धवृष्टानां यथादलूमहामह
मतितिंजीकावजं पश्यपनिधतं अमितातनूपं
त्य ॥ अहियकं महावजं त्यादि ॥ थनवज्रविय
॥ ॐ दकृष्टवृद्धत्वं गुरु

वज्रं माखो नं माखो ७

माखो नं माखो ७

थ

दुवि
पंचा
दश

वा४ महाऊन पदं प्राफं न संज्ञान च संज्ञिनः॥ ॐ नितिवजाति यकः॥ ॐ॥ अ॥ अथ यथा॥ गि॥ वाधिवज्रं वृद्धा
नां यथा दलु महामह। ममापि शाशनाथं यखवजा शंददाहिम॥ लावना॥ शिष्यं खंकावजं खंकात्यनं ममाय
सिद्धिं विहाय॥ ज्ञानसत्त्वाति न्न घट्टा चामा घसि
वजं त्यादि॥ ॐ वजाधिपति त्स्यामति विचक्षमिति
मया हगवनमयिसन्निहिता हवः॥ घट्टा विद्य॥ च-
हं॥ गु॥ अनृत्यने वृधमं वृसत्का नवहि न वृधिन च वृधत्वं न सत्त्वं नैव जीवकं॥ गु॥ निवृत्तं वृधू न्याता कनू
धमति न्न ज्ञानादयो धिपः॥ धमं दया वा धयं तुं धमं दया च शून्यकं॥ ॐ नितिवजाति यकः॥ ॐ॥ पुनव॥ अथ यथा॥

१ = श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

वीथीमिकायां गुप्त

दुवि
पंचा
व
दस

याचर्यातनुयागशुवशव्याख्यानमनुधानुयाधिरुताहवति॥६॥ अविद्याविपक्रयाग्नद्रुत्यादनाधिया
रिषकउच्यते॥ सर्वगुलाचनादिविशानायापावादिति॥ गुर्वस्वकितनक॥ ॥ पुनव॥ ॥ वि॥ वजाचा
यातिषकंराममृदंरिहिरुपानि॥ स्वपगार्थस
त्वनपंविताव्य॥ शिष्यं सर्वालंकालरुषितंड
सिंहासनसंविचिग्राष्टदलकमलापविदजस
सत्वनपंध्यात्वा॥ वज्रविय॥ गु॥ अनादिनीधनं सत्वावजसत्त्वमहान्नत॥ समंततदृष्टसर्वात्मावजगर्हपतिर्पति
॥ ॥ ॥ तिवज्रातिषक॥ तदनूआ॥ कांनजंघधु॥ घष्टविय॥ गु॥ ॥ यंसासर्ववृद्धानां घष्टायाचानूगास्म

॥ ५५ ॥ गोपी स त्रिविधः ॥

हालप्रति

तत्त्वयापि हि सदा धार्य वाधिव (गा) जिने मता ॥ ॐ ति य द्वा तिय क ॥ ॥ थन शिष्य नं घट्था चक ॥ गु ॥
 स्वताव शुद्धा हिरव ॥ स्वतावे विरु वीरुत ॥ स्वताव शुद्धे ॥ सत्सत्त्वे ॥ कीय न पन माहव ॥ ॥ भालि गद्यार्क ॥
 गु ॥ मुडा हि स मयः प्राकामना मूर्ति दृष्टत्वा ॥ सर्व मूर्ति दृष्टाय न न मूडा प्रकिर्तिता ॥ गु ॥ पञ्चापाय मयं शक्ति
 महासूखात्म सवृद्धि ॥ स्वताव दृष्टया गता ध्यानाय म
 तागत ॥ सर्व सिद्धि साधयति प्रतिपाद्य स निर्वृता ॥
 वज्रं तत्त्वन संगाम्य द्वा धर्म धवाय न समय न महामूडा अधिष्टाय दृढा जप दिति ॥ तवना ॥ तदनू आचार्य ॥ स्वह
 दीर्घ विनिर्गत न भिदि देवता वृंदे नाका ग स्ते न हि विच्य मानं विचिंत्य ॥ ॥ संवत्स न हाय ॥ यथा ही जात्यादि ॥ गु

311/10
311/10

311/10

311/10

311/10

311/10

दुवि
पंचा
गं
दश

॥ अतिथकं महावज्रं शेषधनुकं नमस्कृतं ॥ ददामि सर्ववृद्धानां गिगुष्वालयं संतुष्टं ॥ ॐ आः सर्वतथागत अतिथक
समश्रियं हं स्वाहा ॥ ॐ तिप० नृतिथिं च त ॥ शंखलं खनहाय ॥ ततः कृत्वा मालिनं विचित्रं भूपवतथागतदवीत
येवज्ञानमत्वा नृप नृपवेष ॥ ॥ धनशियेत्वं च
दिपूजा ॥ तथा चाकं ॥ ० ॥ पाशियां तु समालिङ्ग
स्य ॐ दं मतं ॥ मधुलं पद्ममिच्छकं मनामधुलमूरु
ततः संकपतावेलाचनस्वनूपमिदं कृत्वा गन्धमिति ॥ महामधुलस्य तत्त्वविशुद्धि ॥ ॐ ॥ ॥ ॥ पंचैस्त्वत्तथा ४ समासन
पंचवृद्धप्रकल्पिता ॥ ॐ त्वेवैवर्षातिथ्यकार्यपनमाचार्यातिथक ॥ ० ॥ ॐ त्वादिनां दवताविशुद्धि ॥ ० ॥ ॐ ति

तनतिचकं ॥ ॐ स्रपुतिस्थितवज्रं स्वाहा ॥ मूलपूया
प्रज्ञावेवाऽऽभयिकां ॥ घंशुवज्रसमायाग्नदाचार्य
मं ॥ कृत्वा गन्धमिति ज्ञातं चित्तं च कूटमूर्ध्नि ॥ ० ॥

तथा गन्धमिति ज्ञातं चित्तं च कूटमूर्ध्नि ॥ ० ॥ ॐ त्वादिनां दवताविशुद्धि ॥ ० ॥ ॐ ति

रूपं वेदं सुविज्ञातं ॥ ॐ त्वादिनां दवताविशुद्धि ॥ ० ॥ ॐ ति

गुरु
२७

आचार्याहिकविधिः॥ ॥ धनजापज्ञाय॥ मूलनजापयादं शिष्यरुविय॥ गु ॥ दक्षसिमयाहगवनमूमिस्त
निहिताहव॥ शि ॥ गृहीतसिमयाहगवनमयिसनिहिताहव॥ ० ॥ मूलमकुनः शिष्यजपयाय॥ ॥ ॥ निमकु
सर्पनविधिः॥ ॥ ॥ ॥ धनलयाथलमधलक
॥ हावना॥ ततः शिष्यामाचरुपंकानं ॥ ॥ ॥ ॥
खासअंजलनउयकगुवन॥ गु ॥ अज्ञानपट
यथालोकस्यममिलं॥ ॥ अज्ञानपटलापनयनायदिव्यचरुवहिकाल्यरुयः॥ ॥ ॥ निअंजनाहिकः॥
॥ हावना॥ धनद्रुक्कनदिय॥ हावना॥ आ८कानजं शिष्यंदर्शयित्वा॥ शिष्यद्रुक्कनकन॥ गु ॥ प्रतिविम्बसमा

इवि
आप
दशा

धर्माभ्रच्छाशुभाकनाविला। अयाकानहिलापाचरुगुकर्म्मसमूहव॥ दर्पशवद्वजसत्त्व४स्व४९शाकना
विला४हृदिनिष्ठतिगवत्सर्ववृक्षाधिपस्वयं॥ ॐतिवदन्॥ ॐतिदर्पशहियक४॥ रावना॥ तथाहा४काव
जंधनरुहावितिप० नृदशात्॥ धनूविय॥ गु॥
तानूनागयामि॥ धनभिष्यपनिमनवलादय
मिसाथस्वचकंकसाचकंहाचक॥ गु॥ प्रह्लाध
पस्यातविध्वं विकल्पनागनं॥ चतुर्माचविजयात्तु॥ क्रतु४धर्माधगुल॥ क्रप्रतिवधवीजापनायगनरूप४॥ ॐ
तिसर्वरूपविधि॥ ॥ थूलिदशभहियकविधिरुला॥ धनपारुगुयाहियकविधय॥ विपारुपितरुया॥ धन

कयेकये११वा८

=वानउमेमु

२८

५११

पूवयशकगुनूमधुलदनक॥अन्धपटनवितक॥हाथरुजलपंतय॥मि॥यूष्मात्पादप्रभदनपाफामनूरुच
क्रिया॥तस्मात्तुगुक्ताहिवकंतुक्रुनाथअनूगहं॥गु॥ॐमोनिर्यातितातुल्यंसर्वकामसुखप्रदंमयाकामसुखा
र्थंनगृह्वत्ससुसिद्धयं॥हावना॥ततागुवचका
व्यादिदव४दवीव्यायावजधर्मसस्कावपूर्वकं
हावात्मंकाहं॥तताहुदीजच॥मर्पिनीतंनीलवाचना
नादिद्यावधप्रवधमहावागनदवीरुयअवधूणानिर्गच्छंतावजम॥६॥सहजस्त्रिवीरुत्पअंगुष्टअनामि
कात्पांवजमधिपिशवजमधिपमाइइसतथागतदवनूपं॥वाधिविल्लहिन्नमधिमूचवागवजनूपंशिष्यस्य

दुवि. गु.
ह्याभि.

य
दर्शतु॥ अष्टादशकं कया वच्चाश्च पटत्वेन तत्प्रवृत्तं नीयते॥ जानूपातसंपूष्या अलिश॥ ० ॥ थन शिष्य नऊअ
पूलिनचूसंखडापूलिथकया अहाथजाजलपंतय॥ अथ्यमम॥ शि॥ हतगवनमहाश्रुवजया ऐकतत्य
व॥ मूडाप्रभादकारं शवजयागसमूहवं॥ तथ
संघाटमगनाहंशहिशवधं॥ गुननमस्कावकिग
दिहि॥ सिंचामित्वां तथवत्सवाधिविचिरूनचानूद
ज॥ मूलमनुवान॥ गीत॥ सहजसवानूह॥ नागनाट॥ ॥ सहजसवानूहहववाया शिरुवननाथदहिदिना
सा॥ ॥ गुजिथिमहावसगुष्कारिषक२कमलकूलिगजागसंहवा॥ नक॥ ह्यानखवपिनीदवीविश्वयापिनी२

अभि मकवा.

कीर्तिकरुधमहासुखदादाता॥ नक॥ उर्ध्वछावधदिनृधियाप्रवध॥ २ प्राधविंदुवसमहासुखदाता॥ नक॥ गुनूप
 भदनअनूरुवक्रिया॥ २ दहिममातानेसंसारसमूदा॥ ॥ उपायनधाय॥ अहमहासुखमिति॥ ० ॥ ॐ तिप्रश्न
 पायथा॥ संवृत्तवाधिविक्लात्पांगुक्लात्पांगुक्लातिरव
 धि॥ गुनूपकभ॥ १ धयध॥ ॥ गि॥ युष्मात्पादप्रभ
 वनाथअनूग्रहं॥ थनअन्धपटनकाकाय॥ गु॥
 कमप्रथा॥ गनसमास्वादयसात्सुख॥ ० ॥ सायिकंकूमचंदनविलेपितं अतिसुगन्धसुगन्धिकसुममालाप
 हितं निबंदवृत्तवाधिवृहं मत्पुनूपदशयति ॐ दंक्रयात्॥ ० ॥ स्तुतिनधायक॥ किंत्वमूलाहं वत्सविन्मूडा

१०५ अंक
गाने

५१ अंक

यावत् गीत्का व पूर्वकं संवाल्पा ॥ ३ ॥ ४ ॥ स्वाहा ॥ ५ ॥ सर्वं तथा गतान् न वागमनं वज्रस्य हावात्मका हं मरुं आवर्तय
तु नति मावहत् ॥ ६ ॥ वज्रं पप्रपुतिष्ठाप्य वाधि चिरुं न चासृजत् ॥ ७ ॥ जातयेत्वा न चात्मानं चिरु मृत्याय बाध
यत् ॥ ८ ॥ यावत् सुकृतं न भूया गीत्वा धि चिरुं विवर्ज्यं ॥ ९ ॥ त्वो धि चिरुं तु सर्वं सिद्धि निधानकं ॥ १० ॥ मूर्च्छितं
गीमानं तत्त्वं समं नूतनं यत् ॥ ११ ॥ वज्रं पर्यं कृतं धि
॥ १२ ॥ विषादकं थडा २ थसं तय ॥ १३ ॥ नाहि विक्ता हि या या गीया गित्वं अहि वां छति ॥ १४ ॥ हन्यते मूर्च्छिता का शं पि वच्च मृग
नृस्रिका ॥ १५ ॥ धूमन शायनं वक्रि गतिं तु वला कया ॥ १६ ॥ निमित्तं शायनं ॥ १७ ॥ अतं वा धि सत्त्वस्य धीमता ॥ १८ ॥ अहि यकं पि धा हि नं

३-०००

द्वि
गुह्या

अस्मिन्नुपकाशितं। आचार्यगुह्यप्रज्ञाचचतुर्थं तत्पू न तथा॥ पंचमानंदरुगं शाकं निर्वोदश्च विनागतः। मध्यमा
 नंदमात्रुसहजाभवधिमता॥ अनादिनीधनं शं तं हावा हावात्मकावितरः। शून्यताकनूदाहिन्नं वाधिचिरूमिति
 स्मृतं॥ जयति ह्रस्वनाजा उवका वदनहितः सदा
 तव सर्वं रुश॥ नतं वायिगुवन करुयिन तं वृमा ००
 स्माद्रुवसम्यक आवाधसच्छिष्ये ॥ मु॥ ०० ति
 पूवयया लाहातिसविय॥ गुवृद्यद्युजा दं खगला हात जा दं गियपनिसज गला हात नवज जा दं निम्रसया॥ माद
 लातकं वजनथि संसाद्धि थाय॥ सिरुं लूय॥ :: ॥ साठिनायूयं मरु समर्पितं तस्मै समयति तथागत नि साठि रु

गुरुक ध्वना विद्या नो कावर्म प्रकाशिता॥ संसा नपा नगत्वेन वज्र स चाप दाम ॥ कर्ध्व धनं विना नो कापा न प्राप्नुता नहि॥ गुह्योऽसर्वः प्र
 पूर्यपि नागुत्र वपा नग॥ ॥

ब्रुत

न॥ नात्पापायनवृद्धत्वं शुभं च दृजगदुयं । तस्माद्विधा गमनसा माकांजित्वं कदाचन ॥ ६० ॥ दंतत्सर्ववृद्धानां विशा
बुतमनूरुचं । अतिक्रामतिथामूढ ४ सिद्धि तस्य नचा रूमा ४ ॥ ॥ विद्यावरुनविधि ॥ लावना ॥ तदनूशिष्यं वज
सत्त्ववृषं विहाय ४ ॥ गु ॥ ६० ॥ दंतत्सर्ववृद्धानां वजस
६ ॥ वज्रविद्य ॥ ॐ सर्वं तथा गतसिद्धि वजसमय
० नंगृह्णीयात् ॥ ६० ॥ वज्रवृत्तविधि ४ ॥ पंचश्यामया
० ॥ येन शिष्यया ह्युपपातवासनचा हलपलचाय ॥ मूढा नय ॥ अतिराल १ नय ॥ शिष्यया तस्वान नय ॥ लावना
॥ तता शिष्यं सम्यक् वज्रवा नाहि वृषं विहाय ४ स्वहृदी जमयूषे नानी तं शानदवतां प्रव ५ ॥ यां तु यापितां वज्रवा नाहि

दुवि
सभो

नृपां पूष्य पातां नवीद वी नृपां वा पूषं तु श्री स म्ब न नृपं विचि न्न त स्मा क्स्मिं वा क्स्वी रु म यू धे नानी तं श न द
व तां प्र व ॥ आ क र्ष ण पा या दि ॥ मू डा स स्वा न त स्यं ता व ता ॥ च कि कृ धु ल क धि वृ च क म ख ला त स्म अ ऊ आ ल
अ मि ता ह व त्त स र व वे ला च न अ मा घ सि धि श्री ह
नी तं नृ पां त थ ग ता न प्र व ॥ अ ऊ आ ल दि प वि न ता
च ॥ ० ॥ पू जा धू प नि लां ज न ॥ पं ला यं कृ त र्प ण ॥
य क ॥ ह स्म ल प न गि ऊ फं ॥ गी त ध व ॥ उं श्री व ज ह ह नृ व क हं हं हू दू ग कि नी जाल सं व नं त्वा हा ॥ गि ऊ फं वि ह
मि ॥ उ पा य या ॥ प्र ला या च सि ह ॥ उं स र्व वृ द्ध ग कि नी य व ज व र्ध नी य हं हं हू दू स्वा हा ॥ गि ऊ फं या प्र च र्म ॥ ध व र

धनय २ मर्दय २ वज्रध क हं रु दू स्वाहा ॥ गिज फं च कि ॥ गृह दू मना वी न च की भू का ला त्म कं शी व ज स त्व
स्य मू ड यं व हि न ध्वा त्म स सं स्मि तं ॥ गि व गि आ वा प य त् ॥ उं व ज ध र्म स म य स्त्वं हू नू २ आ ला लि क हं रु दू स्वाहा ॥
उं श्री ४ हू हू हू ॥ गि ज फं क हू लं ॥ गृह दू मना वी न क हू ल भू मि ता ला त्म कं शी व ज स त्व स्य मू ड यं व हि न ध्वा
त्म स सं स्मि तं ॥ कं उ ला ॥ उं व ज सूर्य त मा वि ध म य समय स्त्वं न त्ना ध क हं रु दू स्वाहा ॥ उं सर्व वू
श कि नी य व ज वर्ध नी य व ज वे ला च नी य हू हू रु दू स्वाहा ॥ गि ज फं क हि ॥ गृह दू मना वी
व क शि का य त्व सं रु वा त म कं शी व ज स त्व स्य मू ड यं ॥ क हि का ॥ उं सा ध त प न म स्वा ध त ए ह हि जि न जि क हू
रु दू स्वाहा ॥ उं हू न म हू हि स्वाहा ॥ उं वा व हू हू हू हा रु दू स्वाहा ॥ नू च क ध यं ॥ गृह दू मना वि न नू च कं

दु
मुद्रा

ॐ श्वतात्मकं शीवजसत्त्वस्य मूडयं ॥ नूचकं ॥ ॐ हूं जी ४ प्रज्ञा भू क हूं रु दू स्वाहा ॥ ॐ वं हूं पां जी मां जी ऊं जी हूं
हूं रु दू स्वाहा ॥ मखला ॥ गृह दू मना वी न मखला भ मा घ सिद्धि वृ पि नं शी व ज स त्व स्य मू ड यं ॥ १७ ॥ १८ ॥
मखला ॥ ॐ शी व ज हूं नू च क हूं रु दू ज कि नी
मू ड माला दि ॥ ॐ क व २ प्र च १ ७ हूं हूं रु दू ॥ मकु
ख द्वां ग उ म नू ॥ गृह दू मना वी न ख द्वां ग उ म
स्थि त ४ ॥ उ क मू ख सिं न बा ग म क र्ष प्र का का र बा ग ॥ आदि न छा य वा ल व लि वि य ॥ त्वा क त्वा न जा णं शि व स
थि स्यं मूल म नु न उ प कं जा प या य ॥ पं लां घ स्तु ति ॥ न र्प क्ष ॥ स म य रा वा ज दं व स्तु छा य सि धि त्वं न क ॥ म धु ल

३३

उयकं ॥ दिगवलिवियपूजा ॥ गीकचकीकहुल ॥ पदमनृन्याय ॥ कडासपंचसालिनक ॥ माशानं
 पाकतंभीनकं धूनकावसयपूजायामकं सकसनं ॥ गीककडासकलज ॥ मूलयादकिधध
 यक ॥ गवाऊचुपालहिय ॥ गीकहिहंज ॥ थलिभूनकाडासनाऊनविसर्जन ॥ मूडा
 काभाय ॥ गीकसादहालय मूडापूजाया
 खालवलिचय ॥ ॥ ॐ किवीनच
 र्य ॥ थनआचार्यदेवावमानुपनंवात ॥ कीखागायावाकखडालाहकनंआनऊआलाहकनं
 मूरयमूडायाय ॥ ॥ ग ॥ १ कोहंवाकममित्वांवऊसत्वरुथागरु ॥ ॥ हवइर्गमिनाहूम

॥ तथे ॥ गीकचकीकहुल ॥

७
दु
वीर

अमरुवभाकय॥ ॥ **मिव्याकनधविधिः॥** ॥ **थनकिपागुखिखिविकाविय॥** **कुंध**
मचकं **अंवऊहृमं** **अंवऊरायनं॥** **धरविय॥** **आकानऊं** **धरं॥** **पृथिविय॥** **ददामि** **आदि** **धनं**
पुरुकं॥ **गु** ॥ **आका** **धल** **ऊ** **ध** **सर्व** **आका** **ध** **प** **ल** **ऊ** **ध** ॥ **आका** **ध** **स** **म** **का** **या** **गा** **त्स**
वा **ग** **स** **म** **का** **रू** **ना॥** **गु** ॥ **अ** **य** **प** **रू** **मि** **वि** **की** **त्पा** **द** **मा** **रुं** **ध** **ध** **र्म** **व** **क** **प्र** **व** **रू** **य॥** **आ** **प**
रू **हि** **स** **मं** **का** **च** **ध** **र्म** **ध** **र** **म** **नू** **रू** **नं॥** ॥ **रा** **व** **ता॥** **ए** **वं** **सा** **मा** **न्या** **नू** **हा** **द** **त्वा** **न्या** **धिका**
नू **हा** **दा** **रुं** **य** **था** **क** **मं** **ध** **ि** **यं** **वे** **वा** **व** **ता** **दि** **नू** **पं** **धा** **त्वा॥** **गु** ॥ **स** **र्व** **स** **त्वा** **हि** **गार्थ** **य** **स** **र्व** **लो** **क** **स** **र्व** **रू**
॥ **य** **था** **वि** **न** **य** **ना** **वि** **ध** **ध** **र्म** **व** **क** **प्र** **व** **रू** **य॥** **गु** ॥ **प** **रू** **हा** **पा** **य** **स** **नू** **पा** **त्मा** **वि** **का** **म** **धि** **नि** **वा** **त्स** **क** ॥

गु३४
३४

अचिन्ताविगता संगसत्त्वार्थकनृसायुक्तं ॥ एवं कविषामिषयथाज्ञापयति प्रकृतं ॥ चतुर्गुणक ॥ नद
 नृवेनावनादिनृपधवलं विनायति विषयानृशदयाम् ॥ ॥ लघुगुणनृकिकं ॥ हृथी अमृकवज्र
 नामकथागमत्वे रुरुवस्व ॥ ॥ अनामिषापिंम
 क्षिपु ॥ दिगमकथागमविज्ञविषय ॥ नाग
 क्षिपुचक्रपमाकविमानं ॥ ॥ सप्रकि
 मनाहं ॥ ॥ पंचवृद्धात्मकसर्वयज्ञाय ॥ ॥ पठ्यकनाटकविष्णुकदिव्यं ॥ ॥ याज्ञाहि
 कमहासहनामा ॥ ॥ नृगुणीकमनकलप्पन ॥ ॥ धावकयानमथिरुहिकायं ॥ ॥ माथवनि

६
शुप

अथ क त्ववियं ॥ ॥ वृद्धवचिवनवृद्धग (ध) ठं २ वृद्धनितादहविष्य स्वयं ॥ ॥ वृद्धनिय
नयदापयि मूर्च्छि क न वृद्धं २ वृद्धविरावनया विपनि क मिदं सकलं ॥ ॥ क ना हं हं क ना हं हं २
क ना क न हं हं ॥ म ॥ ॥ ग ॥ वे वा व न ध्वा
वि धी म मं का न्मा हि कान मा हि कानां पा व नाय
ध्वा त्वा व ऊं ग ग न गं ऊं म मा धि श्ना ना का ल्प स्य
थं अ का ल्प कू लि ठं ॥ ॥ ग ॥ ॥ व त्त स म्भ वं ध्वा त्वा वि म ल प र स मा धि श्ना नं व त्त स म्भ व स्ये व वि रु व वा
वि ध क म्भ ६४ ख ना थान स खार्थ व त्त स म्भ व स्य न तं ॥ ॥ ग ॥ ॥ अ मि ना रं ध्वा त्वा व त्त प म्भ मि ह वि की

शुवः
३५

डिङ्गनामसमाधिज्ञानं अमिमाहस्येवद्विरुववाविध निनावनसंज्ञाधर्मनवागनांमहावागहना
 अमिमाहस्यवत्तपप॥ १ ॥ अमाद्यसिद्धिं ध्यात्वाविष्ववजं वजपमसमाधिज्ञानं अमाद्यसिद्धि
 यस्येवद्विरुववाविधरूपस्यैवकथयार्थं अ
 कथयगायमिदंनकुकिनुवनतपादिनामीक
 मिनकादयः॥ नूपाशानवधर्मनात्मककथया
 ययमंवरुठकिमुद्राम्यसि॥ १ ॥ पुनःधर्मठादस्थानवजवत्तपपमकर्मठादकथयाम् पंचधा
 पाठेननुक्त्वाज्ञानदद्यात्सर्वदित्वावदन्॥ सकलमोकिरुन्मावकाअगुर्वलआज्ञाय॥ ॥

एत आद्यमममोके अनिवातके दृष्टं

दु
वीं

ॐ निमृशन्नविधिः॥ * ॥ गन्नमस्काजयाय॥ धूनकावथउ२थासंनय॥ ग ॥ अयनिवेदिन
मिष्यमंरुधानिरुविष्यमि॥ मधुलेध्वनमस्यर्थमिष्यस्यद्वयंगमं॥ ॥ अधुनामधुलावार्य
मत्तुक्तुधवाहव॥ वृद्धानांवाधिसत्त्वातांद
मार्थविधिनामधुलत्वया॥ लिखितंयंप्रय
विष्टपरमंमहस्याकममधुलं॥ सर्वपापेर्वि
याच्यवतनमीयानांदस्मान्महासखात्॥ निर्वृत्तंरुवद्व४खानंममंरुवठुचय॥ ग ॥ अथा
लिखितंआयुष्यान्तर्वृद्धेनवर्जितं॥ शुद्धाकमहावाकंस्वामित्वमितिनिश्चितं॥ ग ॥ विना

गन्
३३

गसदृष्टपापमन्यनास्ति हि धारुके ॥ कस्मात्कामविनापि त्वं न कार्याह वनापुनः ॥ सर्वकामापराधेषु
नमस्त्वमकृद्यहव ॥ ॐ ॥ पंचमासामृते कुरु मन्त्रान्यः समयाप्यतां ॥ ॐ ॥ नहि प्राधिवधका
र्यं मृत्तं न पजिम्बु कुरु ॥ आचार्यस्तु न संयच्छ सर्वनाइ न किंकुमः ॥ ॥ ना
स्ति किंचिदकर्तव्यं प्रज्ञापायनवक्तृणा ॥ मा लेषिनास्ति न पापं कथागताववायथा ॥
ॐ किंकुचमनसाभा कुर्यात्तु चरुध्वं ॥ ॐ गमिते लघुसूखद्यवज्जलं प्रमिसमं भवतां
गता सदाहवन् ॥ ॥ अपि च धर्मकथां यद्यथा विध्वलिषि कृषियपुत्रवत्ससन्ने ॥ मनाहि
कल्पानाथे वसर्ववृद्धवाधिसत्वे ॥ ॐ किं आश्वासनविधिः ॥ ॥ शिष्य

देवता मोहाते

देवमाधुलस्ययमः पुनः॥ नाक रमिकलं च पुनः मपनं दासी दास सुथा हस्त ध्वन धान्यकां व
ननथ वसुं च॥ कथा सम्पत्ता महिषग हादि वं वमाग्रादि धव्या सन आत्मानं च निवेदयन् किमप
अंशियं रुदयगुनाः॥ ॥ कल्याणग

कन॥ मुक्तिमापन॥ सग्वनमय॥ माता
लिप्तमय॥ पंचसालिग्रह न शिष्यपिंछाया॥
उपा माकहाल॥ समयाचक्र विस्तर्जन॥ मधुलगधकलधं धायमद्र॥ समाधिबलिदिगबलि
ऊक धाय॥ संहारगीरुजयं॥ थडा २ गुथापिल वक्राय॥ शिष्य सदान॥ गीरुकायिल वंश

नृथा कालिनं मधुलथिल सक्त सन किं व
नं सिंहलय चरुपूजा॥ रुकाद रुधा॥ दंग
बाहिकल्याणगुनूय॥ गीरुहाउरुन ध
समाधिबलिदिगबलि
ऊक धाय॥ संहारगीरुजयं॥ थडा २ गुथापिल वक्राय॥ शिष्य सदान॥ गीरुकायिल वंश

हानि श्रुत्वा ॥ १२ ॥ पदं हि मांसाह्नियाय धूनेन । इनेन त्रयं नयागुक्तेन गलेऽङ्गाय चूर्णितम् । पद्महातकेन कलेन पादोऽङ्गं तथा शोभा नक्तं । सद्यो विधेयः ।

गुन नृमयाय॥ धिष्यद्भुतं मरुत्संमधुलवाक उस्वपि हउन॥ गुन आनुमसवाने॥ धिष्यत्वं स्रग्द्वि
य॥ दधपक्रिय गधवक्रगी कलाखन॥ वलिद्याय कलंक यइल॥ ॥०॥ निदगा हिथ क
दिऊा विधानविधि समाफः॥ ॥ ॥ ॥
ह्लाय॥ ॥ फ्रापांथापनायाय सिक्का
यहालि स्रग्वन मरु पंचगव्य पाकु॥ माडाया
ल पंचगव्य ल॥ धन सिक्का रुय सलाहि स मंशु चाय विधि थ्व स्त्रान वा स्प पूजा॥ पंचसालि पूजा॥ घट्ट
यागिनी पूजा कंस पाकु रुय॥ अष्ट भूत ननन्दा वलिविय॥ मधुल रुय अपरुय सिक्का रुय॥ प

७५५

गन्ध
३८

किपादपूजा माहनि साधन आगंवापूजा ॥ अादिकाय मधुलथिला ॥ लंखवलि वाय ॥ नापूजा ॥
माधिवरु वा माहिदिगुलियाय ॥ कलठासग्वनमकथापिंपूजादवपूजामधुलपूजाचाकपूजा
न्यसमाधिसहस्रंजनकलंकचोय ॥ मूला
नमयरावना ॥ यांकुयिमावऊवावाहिनू
चनूपंविचिंन्यमस्माकस्मिन्वाक्कवीजम
न ॥ पविक्रमतंपूजा ॥ गीकहागहनधधुपं ॥ मूडासस्वानकसंरावना ॥ ॥ स्वदुदीऊमयूखे
वातीकंस्तनदवनांपवधयथाक्रम ॥ चकीकुधुलकछिनुवकमखलाऊकाखामिमारनत्तसंर

ववेनाचतामाघसिद्धिन्पाजटिकिविविंश्रुक्तंज्ञानसत्त्वंकथागरंप्रवृत्ताकात्यादिपनिधानाथ
 कादिमूडाश्रुकात्यादिस्वरवांनवंश्रुधिमंच्यः॥निनांजन॥विपकिपमापमूडायाविद्यान॥ॐआध
 है॥पनिक्मनंपूजा॥पूव्यत्यासपंलांघ
 हाजरुनधमूडानंकिय॥गकिधम॥नि
 खानचुयहस॥ॐशीवजहहंनृकहं
 नूनवीगकध्रुकाव्याघचर्म॥ॐधन२धामय२वजध्रुकहंरुद्रस्वाहा॥ॐवजवेनाचनीय
 हैहंरुद्र॥चकी॥गृक्तदकूमनावीनचकीश्रुकात्यनृपिधी॥शीवजसत्त्वसमूडयंवहिनध्यात्मसं

रुक्त॥स्वस्वमंडधजापस्वालवलिगीरु॥
 नांजन॥ॐकदवनात्यास॥ऊपयासंथमं
 रुद्रकिनीजालसम्भनंस्वाहा॥प्रज्ञायासि

स्थिरं॥ॐ वज्र धर्म मुख स्व हल २ आलालिक हं रुद्र स्वाहा॥ॐ श्रीं ह४ ह४ हं रुद्र॥ क धुल द्वयं॥ गृह
दक्ष मना वीन वाक् वज्र क धुला द्वयं॥ श्री वज्र सत्व स्य मूडयं वहि न ध्वात्म सस्थिरं॥ॐ वज्र सूर्य
रुमा विधमय सस्त्व महं नला धृक् हं रुद्र
नीय वज्र वेना च नीय हं हं हं रुद्र रुद्र रुद्र स्वा
हव स्य क धिका॥ श्री वज्र सत्व स्य मूडयं व
ध्वज न ह हि कि न कि क हं रुद्र स्वाहा॥ॐ ह४ नम४ श्रीं स्वाहा हं वा य हं हं २ ही ४ रुद्र २ हं॥ नूच
क द्वयं॥ गृह दक्ष मना वीन नूच क सा ध्वनात्मकं॥ श्री वज्र सत्व स्य मूडयं वहि न ध्वात्म सस्थिरं॥

ओं ह्रीं २ हि २ प्र ३ क हं हं हं स्वाहा ॥ ओं वं हं यो हं मां ऊं ऊं हं हं हं स्वाहा ॥ मखला ॥ गृह्णदक
 मना वीन अमां घसिद्धि मखला ॥ श्रीवज्रसत्त्वस्य मूडयं वहि न ध्यात्मसंस्थि कं ॥ ओं श्रीवज्र हं हं नृवक
 सादि ॥ नो पुनद्या घनं च सेवमकुं धा निप
 लाह न धवजं ॥ मधुमाला ॥ ओं क न २ प्र व
 ह ॥ ॐ नमो वैकुण्ठमंथे म्निहि ह्रीं नामक
 नहिमकु ॥ गृह्णदक मना वीन खदांग उम नृपाक कं ॥ श्रीवज्रसत्त्वस्य मूडयं वहि न ध्यात्मसंस्थि कं ॥
 ॥ ॥ थ अ के पृष्प न्या स खानमाला ओं मां अ ऊ पया स्यं चूय खाल बलि ॥ एक मुख का वाग क

सिद्धि न. वाग. क. ह. प्र. व.

गुप्त ४
 ४०

ऊले माहाया॥ मधुलपदी जिह्वा॥ प्रापायाथर्षगाथाउथर्ष॥ दानखाखन चूर्द्धक मखाऊलीहियगा
ऊरय माहाआवठा॥ था कालिनं पुजाहजीनकं सकल्पं पिहाउं नगाऊ वलिवियसमस्तुकिग्व
विय॥ तन्दिनमस्काव॥ ॥ ॐ नमः ॥ पद्मनृध्वनाय॥ ॐ नमः ॥ चक्रसम्भवा
य॥ अस्य वक्राधुर्यधुगहनविष्ठाविरु
विष्ठासंगानह॥ ॥ ॐ नमः ॥ नमस्तुहं नमामि
हायहः ॥ वक्रासायवद्रयह॥ नमस्तुहं नमामि
प्रवदिता ॥ निविक्तं विविक्तं नरा॥ विम्वं व्यामदयात्तकं वनगुनं वन्दे मृदा सर्वदा॥ ॥

३६७६

गीकहलसिल॥ वलिगाऊविसर्जन॥ गाऊलिकायगुनूपादपूजा अर्घदऊधदं२ गुनूनमस्काव॥
॥श्लोक॥ नृगु नमस्तुहे न्यादि॥ गीकमहिमधुल॥ ॥श्लोक॥ यावत्तु४ सर्वसत्त्वासंग्रहसंग्रही
ना अहुजावाऊनायुजावासंखदकावा-ओ पपाइकावा-नूपि-धावा-अनूपि-धावानामसं
जितावा नेवसंजितावासर्वकसत्त्वा मयांम हामूडामनुपदाप्रतिष्ठापयिकव्या॥ १ ॥
गीकठिगुवनकालिक॥ ॥श्लोक॥ तत्त्वांसर्वक थागनागुधगधाधनापदार्थगुनु४॥ धीवजा
सतनामस्तुषिककनसंसावदावागुह॥ अलुष्टंवनवृद्धमांदवसवंसत्त्वाधनेकत्वक४॥ नातावर्धक
थागमादिनवतादहेकथाकथन॥ १ ॥ प्रमादिक॥ ॥श्लोक॥ नृगुतां न्यादि॥ ॥धनंलिखिष्य

गुनुः
४९

पिं क्रमा कथनं कया आगु नमधुल दनकं ॥ विसर्जनं ॥ लावता ॥ ला हाग्निनका ॥ पंचाग्नविय ॥ नल
मधुल वायक ॥ गुन्यान दाहलप ॥ लावता ॥ मिष्यं वेमा चन नृपधावलं विगं द्रक धुनि नसि स्थवज
मृष्टिपमवक स्थस्य च क्षापनि रुक्मं वक्त
व्य ॥ त्रिकाया धिष्ठान ॥ पंचागंधमिक ॥ ओं आः
मिचवमुक्तय ॥ ओं वजा कीवहं ॥ गवचगवशक
ओं वक्रवत्वनवनमानय ॥ ओं पथन ॥ ओं खल्लानाहं ॥ हयकं ॥ ओं आः खं वीनहं ॥ पप्र
लं ऊनवस्पा लसक्तय ॥ गगनस्य इक्तयन ॥ गुननं न ॥ ७ ॥ कल्लं शसुनरपिय ॥ मि ॥

सरुगमहं महासुखमि॥ समयलानक॥ गुरुसुखः सर्वयागविक्रमस्य दयामि॥ मादसुखद्वानं
 थिय॥ पुष्पांजलिद्विसुनं समयसुखसिद्धिवज्रयथासुखमिदिवज्रं धृत्वा॥ ग ॥ अद्यत्वं वज्रवानाहि
 अधिष्ठितारुविष्मि॥ नचत्वं दं वज्रवानाका
 द्वागव्यं॥ १ ॥ ओं आ४ ख४ घ४ ना४ ह४ हं॥ ओं आ४
 न॥ प४ ह४ प४ ल४ वा४ य४ मा४ न४ न४ सा४ ला४ आ४ प४ ल४ द४ थ४ स४
 वज्रसत्त्वाद्यसिद्धिमां॥ म ॥ ग ॥ ओं वज्रजकपूजापस्थानायामाननिर्य्याम्यामि॥ ओं सर्वमथा
 गुरुवज्रजकअधिमिष्टमां॥ १५॥ ग ॥ ओं सर्वमथागुरुवज्रजकपूजापस्थानायामाननिर्य्यामि॥

पनमनहस्यमधुलपविष्टायवक्तव्यं नवध
 खंवीनहं॥ हिलक॥ गमजलिकाय इत्य
 नय॥ ओं महाबनसुदृढसुमाध्याससुखा

सर्वमथागुरु

गुरु
 ४२

यामि॥ सर्वमथागरुवृद्धशकअधिष्ठितामां॥ २ ॥ द ॥ ॐ सर्वमथागरुवृद्धशकपूजापस्थाना
यात्मानतिर्याकयामि॥ ॐ सर्वमथागरुवृद्धशकअलिखितमां॥ ३ ॥ ॐ सर्वमथागरुपद्म
शकपूजापस्थानायात्मानतिर्याकया
र्कयमां॥ ४ ॥ उ ॥ ॐ सर्वमथागरु
मि॥ ॐ सर्वमथागरुविश्वशककनूष
नतिर्याकयामि॥ सर्वसत्त्वपवित्रार्थ॥ ग ॥ अथ त्वं वज्रवा नाहिकलपविष्ट ४॥ कदहं
कवजज्ञानमत्पादयामि॥ ^{गुरुक} यनज्ञाननसर्ववा नाहिसिद्धिनापि प्राप्स्यसि किमन्या

सिद्धि॥ ॥ न वत्स्यदं जृष्टमधुलपुनगावकव्यं॥ मां न समयाव्यथि॥ + ॥ खद्योत
 नं मां सथिय॥ गु ॥ अयं न समयावजं मूर्धानं स्नानयं॥ यदि त्वमिमां कस्य विद्व्यान्
 ॥ ॥ हतं खद्योतं न गलसथिय॥ ॐ वज्रसत्त्वस्येयं गृहदय समवास्थिक॥
 निर्दिष्टं नृकुक्षीयाया नृयदि ब्रूयादि मं नयं॥ ॥ ह्मा ह्मा ॥ थनेति कावपा
 नश्च नृसुतय॥ गु ॥ ह्मा दं न ताविकं वा निसमया न कमादहं॥ समयं न कृष्ण
 सिद्धिपीव वज्रा ममादकं॥ ॐ वज्रा ममादकं १० हं॥ १ ॥ धामन्यकं॥ गु ॥ अथ पुन
 किं वा हं वज्रपाथियदहं ब्रूयादि मं कुरु नृत्वा कर्मव्यं॥ ॥ न च त्वया हं मृवमं न व्यामा

तथ
 गुः
 ४३

नविषमापनिहानधकालक्रियां कृत्वा ननक पटनं स्पादिमिव दम् ॥ ॥ ॐ किं समयदानवि
 धिः ॥ थनं लिखिष्यपिंथिथिमथियकं नय आवधरावना ॥ ननक अद्य सर्वकथागमस्वाधिसृमां
 ननकस्थि नविक्त यागी वक्त सत्वयागं सूद ॥ ॐ मानं व्यमटि किं न्यतानं न च आका नजा
 मिमां रूपां विष्णो य सर्वकथागमस्वाधिसृ ॥ ॐ नं वक्त सत्वमज्जा विष्णो हि ॐ किं वाचयित्वा
 नस्य हृदि लज्जा नवजांक चरु ४ कां धी पीत ॥ ॐ पृथ्वी मधुल सूर्य नील हं शि नसि वं रु वयु क्त
 वक्त नकं कां क वा नृध मधुल चरु ४ क्त ह ४ कानक ६४ य का नक्त वल लपना का द्वयं धन्या हं नीलानन
 मधुल वरु नक्त आका नं विराज्य ॥ स्रष्टु धी क्त नसि हि शि क्त काय वा क व जानानी य यथा क्रमं नक्त

स्वरावयुहं ह॥ आकाशवक्त्रं ह्यपादद्वयानधश्च वायुमधुलादिमीकं जातमक्षका नृधनिका धास्व
 नक्तिनक्षाननमधुलनक्तमे॥ कानक्षधिव्यक्तुं कृत्वा मातं विष्य मे॥ कानेनस्मिन्मूह॥ पादसूयि
 नप्रविष्टं हं कानादिनस्मिन्निष्पूर्यमाणं ॥ ॥ इहाननालायमूल
 उपाध्वानिक्तं सतंधूपदहजानामधुसच्च ॥ जाजापयासंथेन ॥ थनं लिपिहाजयात्रघटथा
 संधिव्यपिंक्तं ॥ ॥ इहाननालायमूल ॥ नंवा संधिमे॥ कानर्धं द्युयगीकनमाहं ॥ मरुकन
 विष्यमधुलउयकगथा ॥ ॥ न्ययं मधुलं नम्यमया विष्यप्रवर्धितं ॥ यथापूध्वं कथावामुदं वना
 नांकलकमारु ॥ प्रप्यपाकनयारु ॥ अहदाहास्वाजानकाहाथजाकलपंकय ॥ गुं अं निष्ठव

कटछामगमसनामहवहृदयमधिरिक्तसर्वसिद्धिमपयच्चहंहहहहह आखंवीनहंप्रमिचुकस
मांजलिनाथहं॥ नदन्धिष्यस्पहृच्चन्द्राधिपकिललाकनरुनक्षत्रयंसकालां द्वयं विराज्य
॥ अंधपटनकाकाय॥ अंज्ञानचक्रहं अ
॥ ४५ ॥ देवस्वचक्रं ॥ मधुलपूजायागकं ॥
नरुकायाखंकनं ॥ ७ ॥ गिनस्फुलीय
नमस्त्वामंजुसिद्धिउक्तमांगउक्तमसिद्धिमध्यमांगमध्यमसिद्धि॥ अ. धारागच्छधनं
विम्वस्यामिदूयविनात्समीपकिप्रसिद्धि॥ देवनातां कुकियस्वस्थानकासादिवि. यनाहा

कव्य ॥ इयादवकथानकनयदिपमतिकल्कलंकरुवकि ॥ पंचलखावहिपाकनपुनः ॥ किपद्यानयंया
 वरुकरुवहिपाकौकेडसिद्धि ॥ वाक्कवरुलखासुवाहवजावलिवहिश्च नास्ति सिद्धि मधुलंवास्पदर्थय
 रु ॥ किंचित्संरुमाकुकल्हकथयित्वावहिः ॥ प्रवर्ततीयं ॥ गु ॥ ॐ दंनमधुलंपथ्यधवाव
 एनसासुनं ॥ त्वंववृद्धकलजाकमूडामंरु ॥ नधिष्ठिमा ॥ सम्यदासर्वसिद्धीनां समयागरु
 विष्पकि ॥ वरुपप्रागुललिकंमंरुषाधान ॥ धकन ॥ ॐ निपठित्वा ॥ थनमिष्यपनिश्चनंधा
 यकं ॥ वरुमधुलंमहामधुलंपविष्ठाहं ॥ मि ॥ यागमधुलंमहामधुलंदर्शिताहं ॥ गुक्कमधुलं
 महामधुलंदिजिताहं ॥ हा ३ ॐ निपाठयन् ॥ गुनंतथ अ २ गुस्वानविय ॥ दं २ कार्यमिष्यपनिप

गुनं
 ४५

निक्रमते पलवाया आसंघदि लासंघय मधुलवायस्वानहा हलवायकपूजा ॥ अश्वमेधा ॥ मि
॥ वाधिवज्रं धवृद्धानां यथादकमहमह ॥ ममापि कृत्वा नार्थयखवजाद्यंददाहिम ॥ १ ॥ मधु
लविसर्जन ॥ स्वानरुस्यं रावना ॥ रुद्र ४ मि
॥ हनं रावना ॥ रुद्र नृहृद्दीकमयुस्वेननं
मिष्याहिषकार्थं ॥ अश्वमेधा ॥ मि ॥ वृ
कनायथादकमथाददस्वमरुस्यहि ॥ धनाकलममाउतदं द्वा स्यं यगमथा ॥ रुद्र ४
प्रज्ञासमापनेर्महानागनदवीर्यवेनावनदा मधनं निवध्यवजमार्गं धनिर्गन्ध इवेदवी

मूखनंपवधिमं. ठिष्यंमटिनिधुत्पजातं नं हं वज्जामसपझाकात्यनूपिदीस्वरावंधीवज्जवा नाहिनू
 पंझानसत्वारि नंमरिषि चपूनर्जुजमूखादिमूर्तिरि ४ पमानि सृग्गगनमापूर्यस्विने लावनादिवि
 शासहिमः च्चुध्वजपमाकावम्नादिगीकन
 कवाधिविक्तामृकपूर्ध्वीककललेस्मं
 दिदवाहियत्संगलंगीकंमरिनुपनीयमा
 वियनिपालाहामस रुस्यंजातक ॥ ॐ वज्जस्ववज्जसत्वारिषकं नत्वा मरिषिंचामि सर्वकथागमा
 धिपकित्वेन दृढाभरुव ॥ पाकुमाउ सनयकं कपालनंकी लस्यं विय ॥ ठिष्यतं निपालाहामनं रुस्यं

मपूष्यकं क्रमादि वृष्टिरि ४ क नकिं ययावर्ज
 ठिष्यपमानि सृग्गगनमापूर्यस्विने लावनादिवि
 नंयागिनीमंगलंगीकं ॥ ॥ अरिषक

७३
 ४३

मानकं ॥ ओं महासुखवज्रसत्त्वाल्लिखकनत्त्वामर्लिषं चामि सर्वकथागताधिपमित्वनदृढा मरुव ॥ ओं
नमो गवमवज्रवा नाहिवं हं २ रुद्र ॥ ओं आनमा आर्य अपना जिम कुलाय मानमहाविद्य ध्वनी हं २
रुद्र ॥ ओं नमो सर्वरुद्रया वहमहावज्र हं २ रुद्र ॥ ओं नमो गवमवज्रसनि श्रुजिम अपना जिम व
मंकनी कननकुशामादि हं २ रुद्र ॥ ओं नमो
नमः संज्ञासनिमानादि स्रप रदनि हं २ रु
निमाहनि हं २ रुद्र ॥ ओं नमो वज्रवा नाहि महायागिना काम ध्वनी ख ऊह रुद्र ॥ ओं ओम्माह रुद्र
ओं ॐ ॐ हं रुद्र ॥ ओं उउ हं रुद्र ॥ ओं मृमृ हं रुद्र ॥ ओं १ १ हं रुद्र ॥ ओं २ २ हं रुद्र ॥ ओं ३ ३ हं रुद्र

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ग ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ददामि सर्ववद्रा
 तां विगुणकालयसंहरं ॥ ॥ कलयामि खादकनलय ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ सिद्धिचय ॥ मि
 ऊं यावाहालसुखय ॥ माह्निकजलनंदयक ॥ पूष्यमूडानंनियक ॥ मूलं वागभकर्षप्रका
 कारवागभकमुखआदिभयक ॥ धनपाकवाहनं चोयाथापंकिभय ॥ लंखवलि विद्यद
 गुलिननिआमधुलपानाधुपदहक ॥ घापयलंजनउमनूधरथापनप ॥ थापिग्वरबाऊ
 दच्छसद्यक्षधनथाकपधूनकाअभिष्यपिंरुपूजास्थियक ॥ कल्याणगुनूथाकालियाय ॥ गीतमध्य
 भन ॥ पयिकमनंचचापूजाल ॥ गनमधुलसिद्धिभय ॥ आदि समयमधुलथिल ॥ लंखवलि चो

य॥ वरुवानाहिदगुयामक॥ जापयायवलसजापलाय॥ बलिविय॥ थनसुग्वंसकथापिंपूजादवपू
 जागीरुमध्वमनु॥ भिष्यपिसंस्वानमायऊपयामक॥ धूनकाआपीभदिपूजा॥ मधुलथिलसक
 सनंकिरुनमुक्ति॥ ठमाऊन॥ मधुलविसर्जन॥ सग्वंमाहनिच्चाय॥ वरुपूजा॥ गुनूपसूख
 सकलंस्वानसिक्तिकंमूलयादऊधामाऊ॥ दगुसमयविसर्जन॥ बलिधायमइ॥ सद्य
 पूजा॥ गीरुद्विगुऊ॥ रवाऊचुपालहिय॥ गीरु
 थासमयवियथू॥ कयाखंकन॥ ग॥ उद्यानाकलवकमानिनधूनाविद्युच्चुनाहासनादग्धा
 विरुनयाविलाकमहिनापीयुवधानाहूना॥ वृद्धज्ञाननसाविनाविकलूयासानन्दसन्दाहना॥

सोकुंहागा. मेदकि-कोग.
 धमकाय
 संभोग
 निभा. १५५.

ध्या
नि

एवाणविविचानध्वाविबहिकावानाहिकापाशुवः॥^{मा} ॥ निर्मानादिदिनठामधुलगमाकाद्यादिव
र्ध्वाश्रमाशकालाकलनाकलाभृगुसवासकाकुसुमापमा॥^{उर्ध्व} विद्यावृद्धकदंबहकियाचक्रकुर्याह
दिनसानन्दाललितार्धमासूत्रमवावानाहि^{३५}
वाकानागवर्जिक॥^{उर्ध्व} हीकानध्वाहकशुन्य
कसंराजन॥ धूनकाउविस्तर्जन॥^{उर्ध्व} गमाऊन
नसकसंमाउसथियस्वानमूडामडुकगायस्वानमालादकवलिसकयप्रचक्षानाहायकपनिर्क
४ स्यामरुकगायमइ॥^उ ॥ थनमासाहकिणिनाहकियइविधिर्थाकपधूनकाउपूजारा

०८११६
०१५०१
३२१५११

गुन ४
४८

धुसंकल्पयास्यपत्रिकमनंपूजायानाहय॥ गीतमध्यमनृगनृमधुलजादिसमयमधुलथिल
समाधिकलक्षपूजा॥ अग्निस्थापन॥ मामकिपूजा॥ देवपूजा॥ आहमिवियगीतकालिकवजान
ल॥ वेध्वाननपूजा॥ पचेयागिनीवलिविय॥ मासाहपचेधा नाहयक॥ गीतकाला०
वेध्वाननइयगीतसर्वबुद्ध॥ पूर्णशुद्धय॥ पं॥ चणालिइय॥ मूलनृमगीतहागएवध॥
॥ क॥ चधुलीम्यादि॥ ॥ दणपद्रु॥ यप्रनिकमनंठालिग्रह॥ कुमानिपूजा
मिष्याधिवासनणिष्याहमिरुलारिषक॥ मधुलथिल॥ किननमुनि॥ ग्वचगबालइय॥ घृण
पूर्ण॥ हामनजा॥ आसिर्वादमधुलविसर्जन॥ सग्वनय॥ दक्रुधा॥ पूजाककादक्रुधावाधी

निसृलादिगुसमचश्चसुसचायकमानिपूजामधुलसयाय॥दगुसमयकाय॥कमानियागुखांकायभा
 हनिकायवाहिलहिय॥गीनचकीकधुल॥समयाचक॥गवाहकिविसर्जनकुमापतपंचधनाया
 यागिनीपतिगुस्वानमकुकहामवलिसमय॥
 ध्वविनि॥धर्मजनपतिस्तनकिजन॥१॥क॥
 नापित्वासर्वविकल्पमाहकनधजकिनीह
 नद्वयमाकुपदं॥यस्यानस्यकपाकुनहस्यमनसा नमरुसंलयसं॥ १ ॥ हठायाआशमसचो
 ने॥धनाकुनमूडाविसर्जन॥मूडाकागुगीनसादधलय॥माहायागुस्वानकाकयाअवलिसम

थनंलिगुनृमकायगाऊनस्यइहाउनगीन
 संपूजं सर्वजगमनायथपदं सर्वनाधादि
 चकादिना॥यश्चक्रं पविर्वर्तनजिनगधज्ञ

संखायतल-क्याय ॥ धनं लिगुनसमय ॥ शिष्यपनिसनंगुन्यातसघं विय ॥ दक्षपयतय-गलचक्रगीत
तास्वन-धूमागात्रि ॥ मूरवसूद ॥ दानगाथा ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ ॥

सतकेनाशुवर्णयानामकृत्य

वज्रसत्त्वः शिवः

षडमादिवज्रः

अनूपमवज्रः

सन्नतवज्रः

विजयवज्रः

अलनवज्रः

सत्त्ववज्रः

महासत्त्ववज्रः

अनंगवज्रः

ज्ञानवज्रः

सहजवज्रः

अथर्ववज्रसत्त्वनाम

अक्रासः हाकः

हासवज्रः

विनासवज्रः

नतिवज्रः

लीलावज्रः

ललीतवज्रः

स्वयंपुवज्रः

क्षयवज्रः

हृत्कवज्रः

कनकवज्रः

चिरुवज्रः

इंकानवज्रः

अथर्वअक्रासया

नामः ॥

वैशाचनः मृगश्रु

अंकानवज्रः

अभ्युतनवज्रः

तथागतवज्रः

मायावज्रः

वृद्धवज्रः

रूपवज्रः

कायवज्रः

अथर्ववैशाचनयाशा

नलसत्त्ववज्रः

नलवज्रः

चिन्तामणिवज्रः

खवज्रः

गगनवज्रः

प्रज्ञावज्रः

मार्गवज्रः

गोस्वनवज्रः

मानवज्रः

अथर्वनलसत्त्ववज्रः

अभिमातृवज्रः

नागवज्रः

अवलोकिवज्रः

धर्मवज्रः

पद्मवज्रः

वज्रोक्लवज्रः

पद्मां कलवज्ज

प्रज्ञासयाप्ति

सुनने कलवज्ज

वज्जने नात्मा

कनः कलवज्ज

वज्ज रुक्मा

सुनना नन्दक

वज्ज वलो

अनेकवज्ज

वज्ज कोलो

वाकवज्ज

वज्ज मामकी

धर्मां अमिगार

इधन्नकी

अमां घासिदि

धर्मां अज्ञास

अम

याप्ति

अमां घवज्ज

वेनावनयाप्ति भाय

पन्नमां घवज्ज

वज्ज जाकिनी

समयवज्ज

वज्ज लोभा

यान्मिमावज्ज

वज्ज नावना

कर्मवज्ज

नारुनकी

अनीलवज्ज

धर्मां वचना

सर्थावज्ज

याप्ति

अथवनवज्ज

नलसकवया

धर्मां अमाघ

कीकास

सिद्धिया

वज्ज लसा

वज्ज सल्य

वज्ज स्यासा

की जुय विउ

पज्ज कोला

वज्ज वज्ज

वज्ज मा ला

वज्ज विवमिधि

वज्ज मा लो

वज्ज मदा

वज्ज का धा

वज्ज कोकना

आकाधननि

वज्ज पजाका

धर्मां नलसएव

वज्ज माला

याप्ति

वज्ज दया

धर्मां वज्ज स

वयाप्ति

श्रीमिताएयास्त्रीलासु

वज्रनागा

वज्रमहासूखा

वज्रवर्णालि

वज्रचक्रि

वज्रहासा

वज्रमार्कछा

नागचक्रि

धर्मश्रमिता

एयास्त्रीया

श्रमाद्यसि

द्विष्टास्त्री

वज्रगंधा

वज्रवदना

वज्रमाया

वज्रकाना

वज्रधारणधु

नी०

समयवक्रा०

वज्रनगी

धर्मश्रमाद्य

सिद्धिष्टास्त्री

हे १८ म अमि अर्पितं त्रमराउ लंकी दृष्टं ॥

आडो. सर्वं शुभं. तडं तरे. उं कारेण. आकाश मन्द. लं श्री लवणं गुण. चो नुध.

शकाभ वायु तेज आय पृथ्वीमधुल तन्मये सुमेरु आयाम ए योजन व्यायाम ए त्रिभुंग उच्च तन्मर
वे अष्ट दीपैः परिहृत अष्ट दीपैः कंकिम.

प यं पूर्वावेदेह आयाम २ व्यायाम २ धन्वाकार
चतु योजन उच्च तृ योजन शाखापत्र संपूर्ण फ

रं जं वृक्षीप आयाम ३ व्या ३ त्रिकोणाकार
जन उच्च पू शाखापत्र सदा पूर्ण फल ददाति त

प ल अपरगोशयति आ ८ व्या ८ वर्तुलाकार संखेदजा धर्माधर्म न जानति तत्र धात्री दृक्ष दयो उच्च
३ शाखापत्र सदा पूर्ण फल ददाति तत्राधिपति विरूपाक्षराजा सुखेन स्थित

अराज प्राणि धर्माधर्म न जानति तत्र आशु वृक्ष
लंद ददाति तत्राधिपति धृतराष्ट्र सुखेन स्थित

जरायुजा धर्माधर्म न जानति तत्र जंबूद्वीप पदयो
त्राधिपति विरूपाक्षराजा सुखेन स्थित

जरायुजा धर्माधर्म न जानति तत्र धात्री दृक्ष दयो उच्च

चोमर राज

= पी ५ लति

उ

व. कुरु आ १० व्या १० चतुर्कोणाकार ओपपाडका कदवे की तोत्पत्तिरिव धर्माधर्म जानंति तत्र कदं व वृक्ष ७
यो उच्च ४ शाखापत्र सदा पूर्ण फलं ददाति तत्राधिपति कुवेर राजा सुरेव न स्थित. के

अ

या. धन्वाकार सूक्ष्म. ने. श. त्रिकोणाकार सूक्ष्म. का. ला. वर्जुलाकार सूक्ष्म

इ

या. चतु. कोणाकार सूक्ष्म. तद्वहि.

पू

य. गजान्त हिमश्वेतवर्णा षट्पंत रत्नालं
तपरिवृतेषु समर्थ.

कार द्वात्रिंशत्क्षणेयुत अहोरात्रयोः आसमुडां

द

र. अश्वारत्न मयूरस्पगंडश्वश्यामवर्णा द्वात्रिंशत्क्षणेयुत रत्नालं कार अहोरात्रयोः आसमुडांतपरि
वृतेषु समर्थ.

प

न. पुरुषरत्न. सूक्ष्मभंग. पृष्ठशरीर. साउरीवर्ण. द्वाविंशद्वक्षणेयुत. रत्नालंकृतगात्र. मार्गणा. डुष्टगणा संहा
रकृतेषु समर्थ.

उ.

व. स्त्रीरत्न. साउरीवर्ण. उमलेवचक्षु. भेकइव. पयोधर. सिंहेवकटि. दंतदृष्ट. बाहुकिंचित्कृज्जःपृष्ठोव
रस्यूल. दक्षिणा यनेतप्रशरीर. उत्तरायशासु

पाता

अ.

या. खड्गरत्न. तथागतेरधिष्ठित. मार्गणा. डुष्ट
भवन्ति. तस्मिन्समये. खड्गरत्नसाधनकर्तुं.

म.

वा.

रा. चक्ररत्न. आनू ८४ सर्वदा भ्रमणा. सूर्य्यवतेज. अकालमृत्यु. डुष्टगणा सर्वदा छेदन.
ला. मणिरत्न तेजेवान्. कुड्वा. पांगु. अंधा. वधिर. शम्पादि. मणिरत्न नस्पर्शयित्वा. ते सर्वेषां स्वस्य देहो

द्विती

भवन्ति पञ्चवर्णापदे वेष्टयित्वा समुद्रप्रक्षिपेत् तत्र द्वाणं स्य जलं भवन्ति.

ई.

वा. सर्वनिधान कलश. नित्य २ अमृतधारा वहन्ति. तत्कलशस्य समीपस्थित्वा येन वार्धयितुं यद्यत्
चिन्तितं तत्र ददन्ति. संपूर्ण धन इव इत्यादि ददन्ति.

चन्द्रसूर्य. कल्पवृक्ष. कामधेनुतां. कय
रिहत. तद्वहिलोका लोकपर्वत. तद्वहि.

सप्तशंसुमेत भवा

गार. सप्त^{पद्मा} प्राकार. सप्त समुद्र. सप्त पर्वतैः प
महार्णवः सप्तैः समन्वितो यं रत्नमण्डलं ०
लक्षणेः

समुद्र.

३३

सुवर्णरजतनामलोहशीशकपाहका. तद्यदि पर्वतैश्चैते मेरवे च परिहृतः ॥ १ ॥

क्षारमधुसुणसर्पिर्दधिशुग्धजलाश्रयः ॥ सप्तैः सप्त समुद्रं च ख्यापिता च तथा गाता ॥ १ ॥

वर्क

१७ त्रिभू

मूर्ध
प्रयागऊन
प्रकायनिदे
मीनवर्क
त्रिनद
चतुर्भुज विंदु पात्र
कभीष्टुर्भिर्भुज कमंडलु
मुखद्वोग

पंचमूडा प्रभा
दंष्टवाहन
च(छाय समस्त)
ज्योतिर्नाग
ज्योतीपा
जम्बूक जंजु
महिषगुखभक्त
हिमालयप
स्तिमिषष्टक

उलूक
कच्छपि नर
वायुकि
धर्मप्रहा
माशिल्लिगभन
इन्द्रादिपात्र

अथानथाभावी-
मईडर

उरुन
देवीकार
माहभमी
(देवक
त्रिनद
चतुर्भुज विं
कहिपात्र उ
मन्खद्वोग
पंचमूडा प्रभा
द्वय
गच्छा ल
प्रचछुरे
ककानिपा
गम्बूक
माश्रीनमखल्ल
मलाचल
पिप्पल
फाक
यमूना
कऊक
चिलप्रहा
माकईभन
क्रवम

पिपुम.

एकस्मिन्नकं

इडायाधि

कृकम.

छिन्न

चक्रुडु

विं फलिपाउउ

मनुस्वका

पंचमडा. ५

हकि. ५

कोलोक्रले.

मृकले. श्री.

ठकान. ५

एभमखलं

विनृपासि

असाचल.

अलमक. ५

चित्रि. पं.

शीमा. न.

कर्कोटक

नलप्रका.

वाच. (क्षम्यन

वनुक्ष. दि

दक्षिण

वाचाहि. ३. ५.

नका.

छिन्न

चक्रुडु

कलिपाउउ

मनुस्वका.

पंचमडा. ५

महिष. ५.

कलेकले नवोष्ममन

कपिलले

विगलपा

लोका. ५.

वाचमखलं

मागम. ई. न. सि

विंष्म. चल.

चक्रुडु

गुड.

माना.

पयनाग.

महिषका.

कै. लक्ष्मन.

यमना. ५. दि

अथ
 वागधसि. देव. द
 कोमाभी
 नका
 छिभु
 चकुईक
 कलिपादु. उ
 मन्. खदांग.
 पंचमूडा. उ.
 मयून. ~~सक~~
 अदह
 महाकापरे. हा. वा
 कासाङ्क.
 जं. वृकमखल.
 प्रहंगिनि. सि. धा
 उदयागिनि.
 कनंजदृ. दया
 समां. प
 (म) जयतिन.
 महापय.
 कांजप्रदा. चे.
 छासिलिंगध.
 अग्निदवकादि.

नेम
 इयंदि. द. व.
 वसुवी
 ग्धाम.
 छिभु.
 चकुईक.
 कलिपादु. उ
 मन्. खदांग.
 पंचमूडा. उ.
 गनु. उ.
 नक्षिभनेनह. हा. ~~सक~~
 उमलु. ~~सक~~
 गनु. उ.
 दपोनमू. लु.
 घटकाणिवा. ~~सक~~
 मलयागिनि
 पकटिदृ. उ.
 बाज. प
 सनखकि. गदि.
 अनांग. ~~गग~~
 हानप्रला.
 गन्धर्वम्वन.
 नेम. सु. भा. कस. ~~दि~~

अस्यास्यनयवक्रानपमत्वानलंघयन्
चूर्णधनि काकाभ्यादिभृष्टाग्नि

पूर्ववान्

काकाभ्या

हृष्टवर्ण

एकमुख

प्रिनन्

चक्रुर्दुः

कार्हिपादुः

मन्त्रवधोग

प्रमासन

आलीढ

योगिनिमृगव

उल्लन

उल्लकाभ

हनिनावादी

अथपूर्ववन्

पथिम

इयनाभ

नका

अथपूर्ववन्

ह

श्रुताभ

वीना

अथपूर्ववन्

अ. यमदादि. देवी

हृष्टवीना

ने. यमदादि

पीननका

पा. यमददा. देवी

नकाभमा

३. यममयति. देवी

भामकहमा

अस्याल्लनका

यंचक्र. एवम. व.

भृष्टआल. पत्र. देवी

एकमुख. चक्रुर्दुः

मन्त्रवधोग

प्रमासन

आलीढ

योगिनिमृगव

उल्लन

उल्लकाभ

हनिनावादी

अथपूर्ववन्

पथिम

इयनाभ

नका

अथपूर्ववन्

संवन

दवी.

१०

॥॥

ॐ

ॐ

ॐ स्वधुक्पालं चक्रवर्गः ॥ ॥

ॐ नलवज्जः स्वधुनाहा

ॐ हयग्रीवः मोन्दिनी

ॐ आकाशगर्हः चक्रवर्तिनी

ॐ हनूकवीनः सुवीनति

ॐ पद्मनृपध्वजः महावला

ॐ वेनाचनः चक्रवर्तिनी

ॐ यज्जसलः महावीर्यमालिदेवी

॥॥

ॐ

अस्यास्यं न न वाक चक्रनक्त असृदलः

ॐ आलीछः नृनावकिः ॥ ॥

ॐ वज्रविलंबिः महाहर्षवि

ॐ महावायुः वामुवगा

ॐ वज्रहंकातः सुनाहकि

ॐ सुहजाः आमादवी

ॐ वज्रप्रहः सुहजा

ॐ महाहर्षवः हयकर्णः

ॐ विज्जपाऊः स्वगमनगा

नदस्यंनमचिरुचकनीलः शृष्टदलः
 प्रचक्षुः वक्रताकः देवी
 उचक्षुः शिवाकंपिनी
 वक्रं कालः प्रणमति
 दः विकटदंष्ट्रीः महानासा
 इः सुनावीनः वीनममि
 मेः अमिताः खर्वनी
 वाः वक्रप्रः लंकंठवनी
 इः वक्रदः कर्मकायाः

नदस्यंनमः शृष्टदलः
 प्रः ताकिनीदधीः कुरु
 उः नामाः व्यासाः
 प्रः खद्युनाहाः चक्राः
 दः नृपिनिः पीता

आर्द्रकदरीनयले
 उदरी

विदितावाभिचिरामृककणमः ४

शीरुक्रसंभानः

वायुः अग्निः आपः पृ
 क र भ्व पी

चक्रः कोणवशाकाः तत्रपरिः संः सुमेरुः
 चक्रनलमयः चक्रकोधः अष्टश्रीगः

आर्द्रकः कः उयाः

ॐ कृपागमनं बहुधादा

चतुर्दशानां मानसं किंकिशिजालं

कर्मभिखा ~~न~~ न दत्तं न न विधवदत्तं

हं विधववजं न दत्तं न न अष्टदत्तपम

न दत्तपानि च दत्तं तत्तं

न दत्तपानि आलि कालि न मध्ये

आकाशस्वरूपं हं कान न धिना

धीरुत्कासालि न दत्तवर्तं दत्तं

चतुर्मुखं कृष्णमनकूपीन

प्रतिमुखं दिनं हं हं या न कर्मर्तं

जयामकृत्

विधववजं

अर्धचंद्र

वक्रं तत्तं मर्तं

सयंपं चाक्षं नर्तनमात्मा

दादगर्तं प्रथमतः जाली वक्रं धीरा

धनवक्रवानास्यालिंगिन

धिनाय गजचर्म न उमत्र त्वद्भाग

च कर्हिपाठं प पनशुपाठं

षा दिगूलं प्रमथिन वा घुचर्म तत्तं

आली ठपद आलिकालि आसन

अपलिंगन वक्रवानाहि कर्तृ ~~न~~

वक्रं लं वक्रं न कर्म त्वदिनं दत्तं

कालमुखं दिनं द्विदुर्गं कर्हि न कर्म

धर्मापाठं मतवत्ता धीरुत्कर्तृ कर्हि जालिगा

यं वक्रवानाहि श्रीचक्रसर्वनदर्शन ~~न~~

मृष्टरुमं भान अग्निखान वज्रखान पप्र
खान लघयथन नदसंरुन मद्रकाधनका
प्र वं वज्रयानादि नक एक मख डिमड
वगु रुडु कर्दिपाडु मनु ख हांग
पंचमडा मधुमाला प्रयालीठ

ॐ हं यासिति रुसु
नो डीं भाहिनी - (४५५)
प डीं डीं संवायिनि पीन
मे र्हेरु - संजासिति - ४५५ म
द फरु चधुका - धूम

नदसंरुन वकुर्दत

प्र वज्रजाकीनी रुसु वकुर्दत

उ विठवजाकिनी ४५५ म

प पप्रजाकिनि नका

द नलजाकिनी पीन

नदसंरुम निर्मां ध वक्र नका धमदि

यासनुप दिदल्पय

मद्र डीं आरुं सुय्य वं १५५ प्रजासन

मांडव चंक मख दिजद दि मुद्र फाहि पाडु

कालमख दिजद रंरुदर मका रंरु सख

मधुपंच पंचमद्रा मधुमाला

शीवद्रवा नाहि दर्शन

संपूर्ण

१

ॐ नमः श्री चक्रवर्त्तय ॥

॥ ॐ श्री हं श्री मद्भक्त सत्त्वत्पादि ॥

॥ वन्दे हवा व

धिसमग्रसंज्ञानिधोयमिधायं सद्गुरुयत्प्रभदनममायूहीनसं हव ॥ श्री मद्भक्तज

कायजाकिनीचक्रवर्त्तनि ॥ पंच

ज्ञानाहुकाधायकाधायजगतात्मनः ॥ या

वंशावज्जाकिन्यच्छिन्नसंकल्पव

न्दना ॥ लोकाकृम्यप्रवर्त्तिन्यस्मावमि

स्थानमः सदा ॥

॥ ॐ स्वराव

गुह्यात्सर्वधर्माधारावगुह्याहं गुह्यतां

ज्ञानवज्जस्वरावात्मकाहं ॥

॥ ॐ श्रीः हं गतिन्याकानदा गुह्यतां रावयम् ॥ श्री का

नमद्वयज्ञानहं कानहकुवर्त्तिन ॥ रूकाननूपनाधार्थक कानदा कचित्स्थितः ॥ ॐ

५८

सर्वसत्त्वाद्यनघाहमाशुक्लवर्धद्विभुजसम्बन्धमात्मानंरावयन् ॥ ॐ नन्दनूकन (ॐ धनदकि)
घाहलूआः कानधसूर्यमधुलं वामहलूआः कानधचन्द्रमधुलं ॥ ॥ नमः ४ कनन्यासः ॥ जवत् ॥
ॐ हः ॥ चाला ॥ नमः ३ ॥ दधुला ॥ स्वाहा ॥ हाहं ॥ अंगुला ॥ वीषदहं ॥ सिक्कुला ॥ हं
हं हाः ॥ काला ॥ रुद्र रुद्र हं ॥ पचिंचोका — दक्ष ॥ ॥ देपास ॥ ॐ वं ॥ चाला ॥ हा
या ॥ दधुला ॥ ॐ मा ॥ अंगुला ॥ ॐ ॐ ॥ सिक्कुला ॥ हं हं ॥ काला ॥ रुद्र रुद्र ॥ पचिंचो
कादक्ष ॥ ॥ ॐ हं स्वाहा वज्र ॥ ॐ हाः स्वाहा घघ ॥ वज्रसत्त्वसंग्रहकवज्रनलमनूरु
व वज्रधर्मग्रन्थनिवज्रकर्मकुलाहव ॥ ॐ आः टकिं ऊहं ३ टकिं नाजहा ॥ ॥ कमला

जिहिका (धृ) धनी सर्वद्वय व्यापिनि (धृ) धय २ हं ॥ ओं ह कान हनन वर्ध हाः कान गंध नाशन ॥ ईं कान वी
 जहं नाच श्रुतना कान च सवयन ॥ ओं श्रुत श्रुत नृपं प्रवक्ष्यामि ॥ वाम हस्त न पाशोद
 क ह मो सिंचय नृपि पना का मृदु ह मिश्र धिष्टानं ॥ ओं वज्र ह म हं ॥ ॥ नृप यु कुर्विषादि न्यास ॥
 पूं ॥ ललाट ॥ ओं ॥ शिखा ॥ ओं ॥ दाहिना कर्ण ॥ ओं ॥ शिखा ॥ ओं ॥ वाम कर्ण ॥ लो ॥ श्रु वाम (धृ) ॥
 हं ॥ नृप ह याः ॥ मों ॥ बाह्वयाः ॥ कों ॥ कर्ण
 नासिका (य) ॥ कों ॥ मुख ॥ लें ॥ कंठ ॥ कों ॥ हृदि ॥ ईं ॥ नाह न धन ॥ प्रलिंग ॥ गुं ॥ गुद द
 न ॥ मों ॥ जंघा दयाः ॥ सूं ॥ त्राना निपां ॥ नें ॥ पादांगुलि दक्ष ॥ सिं ॥ पाशो दया ॥ मै ॥ ह ॥ हस्त गु
 लि दक्ष ॥ कुं ॥ जानू दयाः ॥ ॥ ओं पी ॥ अप पी ॥ कुं ओ प कुं कुं दया प कुं दम ला प का प म ला प

स.
३

क४म५नाप४म५नानि ॥ नृपुचार्य ॥

॥ स्वाहाहं ॥ शिखायां ॥ वीषदूह ॥ स्कंधदया ॥ ४ ॥

ॐ बै ॥ नासी ॥ होयां ॥ हृदय ॥ क्रोमां ॥ वक्र ॥ क्रोहो ॥ ललाट ॥

॥ ॐ स्थानं मनकहं ॥ आसन ॥ ॐ धामं

शिनसि ॥ ॥ नमः स्वहृदय अकानध

ॐ कानधुक्तं हं हृदकागं ॥ आलिकालिपं

पनिधनचक्रपद्मवज्रवाकविशुद्धिकुर्यात् ॥ नृपस्क

धपद्मनृपधन संस्कारस्कं धवजवाज विज्ञानस्कं धवजसूत्र ॥

॥ नमः अंगनासः ॥ ॐ हः ॥ हृदय ॥ नमः क्रो ॥ शिनसि

॥ ॥ नमः अंगनासः ॥ ॐ हः ॥ हृदय ॥ नमः क्रो ॥ शिनसि

॥ ॥ नमः अंगनासः ॥ ॐ हः ॥ हृदय ॥ नमः क्रो ॥ शिनसि

॥ ॥ नमः अंगनासः ॥ ॐ हः ॥ हृदय ॥ नमः क्रो ॥ शिनसि

॥ ॥ नमः अंगनासः ॥ ॐ हः ॥ हृदय ॥ नमः क्रो ॥ शिनसि

॥ ॥ नमः अंगनासः ॥ ॐ हः ॥ हृदय ॥ नमः क्रो ॥ शिनसि

॥ ॥ नमः अंगनासः ॥ ॐ हः ॥ हृदय ॥ नमः क्रो ॥ शिनसि

॥ ॥ नमः अंगनासः ॥ ॐ हः ॥ हृदय ॥ नमः क्रो ॥ शिनसि

चक्रुषामाहवजिः (॥ अथ यादववजिः घ्राहया निष्पावजिः वकुनागवजिः स्य (॥ र्मात्स्यवजिः सर्वा
यामनेष्टेऽथर्ववजिः ॥ पृथ्वीधामुपाकृतिः आधुमानाधिः रुद्राधामुनाकर्षाधिः वायुधामुपमनृ
न्यध्वनीशुकाधामुपमहालिति ॥ पुनराशुलिकालिपांकिमध्वनं कानधामुपमधुलं ॥ नमः
(॥ हं कानधामुपनिष्ठा महारुगवंकं कुरुवंधं वज्रुजं पृथमनुजासीवज्रवज्रधधनं दि
नीयासीखज्जर्जनिपाठाः रुनीयासीउ
मंपृष्ठनकं दकि (॥ पीनं विहाय ॥ हं नस्मि
सन्नचक्रुर्देवी काकाधामुदिदिः ॥ विदिः पूर्वा रुनयानाभिनायमदाम्बादि द्वादोवर्धनि
आदोपदध ॥ यामहसुनांगुष्टज्जनिनाच्छादिकां देत्वा ॥ ॥ ओं शुक्रनिशुक्र हं हं रुद्र ॥

स.
४

ॐ गृह २ हं रुद्र ॥ ॐ गृह प्रापय २ हं रुद्र ॥ ॐ गृह नय हा र ग व न विद्या ना रु हं रुद्र ॥ का काष्ठा कृष्ठा
उल्लाकाष्ठा ३ मा ३ मा ३ मा नका ३ क नाष्ठा पीमा ॥ यम ३ मि कृष्ठा पीमा ॥ यम ३ नी पीमा न
का ॥ यम ३ डी व क ३ मा ॥ यम मथ निष्ठा म कृष्ठा ॥ एनाद व्याया वा म ह रु क पाल पविष्ठा म म
थु म ना रु की लत ना रु न ध सु ना का न उद्रया म नू प कं धू ला ॥ द कि ध ह रु क र्ति पविष्ठा म म
व रु मू ज ल ह रु ॥ न द नू प निष्ठा न सूर्य म धु ल म ॥ ह का न धा विष्ठा व रु हं का ना धि विष्ठा
न इ ठि म ना ॥ क य व रु ल प्र मा धं व रु क धि का नू पे न ॥ ग गो व रु म य रु मि वि ल व ॥ ॐ म
दि ती व जी रु व व रु वं ध वं ॥ व रु प्रा का न हं व हं ॥ ॐ व रु पं रु न हं पं हं ॥ ॐ व रु वी ना न हं व हं ॥ ॐ
व रु स म डा न रां स रां ॥ ॐ व रु का ला न लार्क हं ॥ ॐ मि दि ग वं ध न म् ॥ ॥ प्रा का न वी र्ति हं

५९

वं हं

विकारनिष्पन्नं अष्टकसप्ततिवसिगान् ॐ आदिविघ्नान् हृदयकीलनं धृत्वा वज्रमूजल
माकाटयम् ॥ ॐ ध्येयघाटय २ सर्वदृष्टान् हं रुद्र ॥ ॐ कीलय २ सर्वपापान् हं रुद्र ॥ ॐ वज्रकील
यवज्रधनाहापयनि सर्वविघ्नविनायकानां कायवाकचिरुवज्रकीलय २ हं रुद्र ॥ ॐ नि कि म
धमं ॥ ॥ ॐ वज्रमूजलवज्रकीलमा काटय २ हं रुद्र ॥ आकाटनमं ॥ ॐ नि नि
विघ्नं हवयम् ॥ ॐ नि न का चक्रसमाधि ॥ रुद्र ४ स्व हृदयस्थ हं कानवीर्यमालाहि रुद्र ग
दयं हृत्वा अकतिष्ठु वनंगला न रुद्र ॥ अनादि संहि द्विष्टी चक्रसन्वन रुद्र ग वं रुद्र ग व
मि समापन्नं समाप मधुलयं प ४ धम् ॥ नमो ह्युक्त नीर्यमालाहि ना कृष्य हान चक्रमा काठाद रो
दृष्टा अहि मूख महि सम्युक्त समं न समय मधुल प्रविष्ट समनसि रुद्र मना मयि हि ४ पूजा देवी

रिशुपूजयन् ॥ ॥ हूं हूं हूं कालाम् डांद मथन् ॥ ॐ श्री वज्र हनुक पूजा प्रवन सत्काना यपाया
 र्था च मनं प्रमि च स्वाहा ॥ ॐ हूं वं हाः स्वादि ० ॥ **पू** **व्या** **सा** ॥ ॐ श्री वज्र हनुक हं रुद्रा किनी जाल सम
 नं स्वाहा ॥ **हृ** **द** **य** ॥ ॐ श्री हं हं हं रुद्र ॥ **उप** **हृ** **द** **य** ॥ ॐ वज्र वेना च नी य हं रुद्र ॥ **द** **व्या** **हृ** **द** **य** ॥ ॐ सर्व वृद्धा
 किनी य हं रुद्र ॥ **द** **व्या** **उप** **हृ** **द** **य** ॥ ॥ ॐ अं किनी य हं रुद्र ॥ **पू** ॥ ॐ नाम हं रुद्र ॥ **उ** ॥
 ॐ खलु ना हं रुद्र ॥ **प** ॥ ॐ नृपिणी य हं रुद्र ॥ **द** ॥ **हृ** **मि** **दि** **ग** ॥ ॥ ॐ वाधि चित्ता मृ
 कला हं रुद्र ॥ **वि** **दि** **ग** ॥ ४ ॥ ॐ कनश्च ॥ **च** **हृ** **द** ॥ **पू** ॥ ॐ कनश्च धु की य हं रुद्र
 ॥ **उ** ॥ ॐ वं धश्च लममि य हं रुद्र ॥ **प** ॥ ॐ ज्ञास्यश्च महाना हं रुद्र ॥ **द** ॥ ॐ आर्यश्च वीनममि
 य हं रुद्र ॥ **पू** ॥ ॐ हूं हूं खर्वनी य हं रुद्र ॥ **न** ॥ ॐ हूं हूं लंक ध्वनी य हं रुद्र ॥ **वा** ॥ ॐ हूं हूं हूं मच्छाय

हंरुद्र॥ ॐ॥ मिचिरुचक्र॥ ॥ अं रुद्र २ उ ना वा नी य हं रूद्र॥ पू॥ अं द ह २ म हा ले न वा य हं रू
द्र॥ उ॥ अं प च २ वा यु व ग म य हं रूद्र॥ पे॥ अं रु क २ व स नृ धि ना न मा ला व लं वि न स न स ना ए कि य हं
रूद्र॥ द॥ अं गु क २ स फ णा मा लग म नु जं ग स पं वा रु र्ज य २ ष्ट मा द वी य हं रूद्र॥ झ॥ अं आ क ठ २ ह
र ड हं रूद्र॥ ने॥ अं कीं कीं ह य क (र्क) हं रूद्र॥ ॥ वा॥ अं हां हां ख गा न ता य हं रूद्र॥ ॥
मि वा रु च क्र॥ ॥ अं क्रां क्रां च क व ग
अं कीं कीं सो दि ती य हं रूद्र॥ प॥ अं हं हं च क्र
॥ झ॥ अं सि लि २ म हा व ल हं रूद्र॥ ने॥ अं हि लि २ च क्र वर् नि ती य हं रूद्र॥ वा॥ अं धि लि २ म हा वी न
हं रूद्र॥ ॐ॥ मि का य च क्र॥ ॥ अं का का (ष्ट) हं रूद्र॥ पू॥ अं उ लू का (ष्ट) हं रूद्र॥ उ॥ अं

सू.
५

ना ॥ ५ ॥ ॐ श्री कृष्ण ॥ ५ ॥ ॐ यमका की यहं ॥ ५ ॥ ॐ यदू की यहं ॥ ५ ॥
ॐ यमडं की यहं ॥ ५ ॥ ॐ यममथनी यहं ॥ ५ ॥ ॐ यमका ॥ ५ ॥ ॐ यमिनी मधुल ॥ ५ ॥
ॐ च ॥ ५ ॥ ॐ गकलाय स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ कालां कलाय स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ कलंक हे नवा
य स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ अहह हा हा य स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ अमि नव नह मा हा य स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ घा नी
ध का ना य स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ किलि किलाल वा
हान पूजा ॥ ५ ॥ ॐ वज्र वी ॥ ५ ॥
ॐ वज्र ॥ ५ ॥ ॐ वज्रला ॥ ५ ॥ ॐ वज्र माल्य ॥ ५ ॥ ॐ वज्र गी ॥ ५ ॥ ॐ वज्र नृ ॥ ५ ॥ ॐ वज्र पू ॥ ५ ॥
ॐ वज्र धूप ॥ ५ ॥ ॐ वज्रा वला कि ॥ ५ ॥ ॐ वज्रा दर्शन ॥ ५ ॥ ॐ वज्र वज्र ॥ ५ ॥ ॐ वज्र वज्र ॥ ५ ॥

ऊं श्रीं ॥ ओं धर्मधारिण्यै नमः ॥ ॥ ओं हं स्वाहा वज्र ॥ ॥ ओं हा ॥ स्वाहा वज्र ॥ ॥ ओं वज्र सत्त्वसंग्रहणं वज्र नत्नमः
हं वज्र धर्मग्रामा कति वज्र कर्म कुलाहवं ॥ ॥ ओं आ ॥ टकिं जहं ३ टकिं वाज्रहा ॥ ॥ मुनि ॥ सर्वज्ञानं
दाहं जगदर्थप्रसाधकं ॥ चिंतामणिनिवाहून् श्रीसम्बतं नमः ॥ ॥ व्यापविठवं महाज्ञानं सर्वमणि
मदास्थिरं ॥ कृपाकाशं महाबोद्धिं सम्वननमा ॥ ॥ मुनि ॥ नमः ॥ ॥ विज्ञातं बुद्धविम्वीदिवसकल
धनावाधिपाविन्दुवरवं मेघीयं चाधूरपीधिनमः ॥ नवपूर्यः मंश धार्यचगर्भ ॥ पद्मावृद्धं नूपक
लिङ्गनवपूर्यवज्रिधं हीमनादं ॥ विज्ञानं ज्ञान नूपनिहितहवहर्षपचमूर्तिप्रक्षम्य ॥ ॥
ॐ नमो ह्यगवन्वीनवीमठधनाय हं रुद्र ॥ ॥ ॐ नमो महाकल्याणि सन्निहाय हं रुद्र ॥ ॥ ॐ नमो दीप्याक
नानाय हीयदामूखाय हं रुद्र ॥ ॥ ॐ नमो महामुञ्जरास्त्रनाय हं रुद्र ॥ ॥ ॐ नमो पनथुपाथ विमल

ख क्षीग धनि (हं हं हं) ॥ अं नमा व्याघ्राजि नाम्ब न ध नाय हं हं हं ॥ अं नमा महाधुमां ध काना य वषु वाय अं
 आ हं हं हं स्वाहा ॥ ॥ कना हं हं पूजा ॥ कना वाम कनम (धन क्त पं च दल कम ली धा हा ॥ पुष्प ना
 हं ॥ अं वं वज्र वा ना य हं हं हं ॥ अं हां यां यामि न्ये हं हं हं ॥ अं कीं मां माहि न्ये हं हं हं ॥ अं कीं कीं संचानि (ध
 हं हं हं ॥ अं हं हं संक्रा सि न्ये हं हं हं ॥ अं हं हं २ च
 नमः ४ कीं वेना च नाय स्वाहा ॥ अं स्वाहा हं पद्म
 वाय स्वाहा ॥ अं हं हं हां ४ वज्र सूर्याय स्वाहा ॥
 दि मध्य स्थापयित्वा ॥ पंचा पलन पूजा ॥ मुक्ति ॥ ॥ कल्यां न प्रवना न नाधिक कना काला व
 ली नागृहा षष्ठा हं मि मूर्खी महासूख कना वाला क विन्वा नृध ॥ सा मुी सर्वज गृहा दय पना धी

वे.

वज्रवानाहिका. एवमपुनरामिसु नूबलिशीवज्रहन्निर्मितं ॥ ॥ यामित्याखलुमाहिनी एगव
मी संचाविधी सर्वदा संज्ञासिन्धुत्वा पनासुविमलाया (गठवनी चक्षुका ॥ चत्वा नो भुजम कठका ननम
खीनी लासिका (गोविधी ॥ ४५ ॥ माधुमाधुधूसनाधुसुननी वंदे पदं वा नद्वी ॥ दया लक्ष्मि ॥ ॥ ॐ नमो एगव
स्यै वज्रवानाहिके हं रुद्र ॥ ॐ हं यां यामित्ये अजिम् अष नाजिम् हं रुद्र ॥ ॐ नमो श्री मां माहित्ये सर्व
हूतल्या वर महा वज्र हं रुद्र ॥ ॐ नमो श्री श्री स चावि (धे वजासन अजिम् अप नाजिम् हं रुद्र ॥
ॐ नमो हं संज्ञासिनि वर कवि कवन प्रजा महि विष्णु शक्ति नायिका धनिक नाहिनी
हं रुद्र ॥ ॐ नमो रुद्र चक्षुकाथे मानसि ह प्रह दनि पनाऊ य विनाऊ य हं रुद्र ॥ ॐ नमो ऊ मनि रु
मूनि माहिनी देहिनी य हं रुद्र ॥ ॐ नमो वज्र वानाहि महाया गिनी कामध्वनी ख ऊ हं रुद्र ॥ एगव न्या

सं.
८

चमनमंडलशगनाजनंदटी कुर्यात् ॥ गिनस्थापयन् ॥ ॐ निहस्तपूजा ॥ ॥ कमापापदशना कृत् ॥
कानिहमनूमादिहमद्यमखिलेनिहिहदावाधमपुनिदशायामि. पुनरपुनरकनधीसम्बनोवेद।ध-
श।वकरवकुजिनालम. जिनसुनसंतनानिकुगलात्पनूमादिनानिवा।धोसम्पकपविधमयामि. कि
ननत्वादिकिहयगनधीयावगुगमास्मिन्सर्व
गनसुवम्मादियाग॥ ॐ निशुादियागनाम
धममूदिनापकानिनिचनुव्रम्भविहानान्त
हंशुन्यनाहानवगुखलसकाहं ॥ चिरुमाहुं वमिष्ठं धाधिसंतनपूनधम. कमाप्रोधिधनवशाम
शुन्यनामापुनिवृद्धान् ॥ ॥ कमाध्यानम् ॥ यंकावधवायूमधुलं. नीलधन्वाहं ध्यां कृत्.

५५

चक्रं.

२ पोतकोरोधुनिश्चिकष्य। किं

नमः। ध्वनं कानधमि मधुलं त्रिकाक्षं नदपनिबं कानधमवृद्धमधुलं वर्तुलं। ध्वनं घट्टीकर्म ॥ नदप
निलं कानधमपृथीमधुलं पीनं चक्रनमः अष्टशृंगमपठालिर्न ॥ नदपनि स्रं कानधममृचक्रनमः अ
ष्टशृंगमपठालिर्न ॥ नदपनि स्रं कानधमक्रयगमनं चक्रनमः चक्रद्वयं चक्रकानधमपठालिर्न महामाकुपुर्न
वेनाचनस्रहावः हानाहं हानचलत्कृष्टुलक मसिरवापय्यर्न ॥ नदपं कानधमविश्वदलपय्य
नमः। ध्वनं कानधमविश्ववर्जं ॥ नमः। ध्वनं पंका
चन्द्रमधुलसूर्यमधुलं च नयामः। ध्वनं आका
नमः सर्वपनिधमं आधवा। ध्वनं मधुलस्थं श्रीहृक् समासुधुलं यमात्मानं हावयम् ॥ नमः आत्मानं
कृष्टं चक्रमूर्खं मूलमूर्खं कृष्टं ॥ वामस्थामं ॥ पश्चिमनकं ॥ दक्षिणपीनं ॥ विकृताननं ॥ इन्द्रात्कट

ਸੰ.

शीषर्षी. प्रमिसूरवं. नकावर्तु लखिनर्तु. विश्ववर्जां किममोलिनं. ऊटामुकुटाकिमं. वामवलिनाद्वच
 न्दधानिर्धं. दक्षिणधुक्मुधुं. वज्रमालागुस्थिमं. पंचकपालधनिर्धं. द्वादशभुजं. प्रथमशालिङ्ग
 नजुहुद्वयन. वज्रवज्रधर्मभधनी. द्वितीयजुहुद्वयन. गजचर्मम्वनधनी. तृतीयजुहुद्वयन. उमनूरव
 द्वाङ्गधनी. चतुर्थजुहुद्वयन. कर्हि. नक्तपू
 धनी. षष्ठमजुहुद्वयन. त्रिशूलवक्रमिध
 धुवर्मनिवासिनी. शृङ्गनवीनवीरहस्रनोडहा
 सान्विता. चकीकधुलकधिकुधुल. कभूनिमिनामधि. यक्षपवीरहस्र. धूमि. षष्ठमजुहुद्वयन. नवि
 मधुल. वामदक्षिणराणपामिक. हेनवकालि. वामकर्ध. रुनयूगलथाना. लीलासनस्थ. हगवंम

लावयन् ॥ ॥ **रुगवमी ध्यानं** ॥ रुगवमी वरु वा नाहिनक्त वरु मुकट कं ॥ एक वक्राति नञा दिगं व
 ना ख धु म धि न क हि म ख ला ॥ द्वि उजा वाम मुकुट न न क पू र्ण गी न क पाल ध न ॥ दक्षिण मुकुट न इष्ट मा
 न च द न क र्ति ध ना श्रव द्र धि ना न तां कं घा द य न रुग वं कं समा वा द्धा नू ना ग यं कि ह ग व मी ला व य न् ॥
 ॥ ॥ रुग ४ समय च का ल्य रु न प्र कृ ना स न वि श्व ष्ट द ल क म ल स रू पं मा हं ड म धु ला
 नू टं वि श्व व र्णं द्वि च क स रू पं श्री का ना धि शि र्म नं न ला बालि पा नि ह र्म म हा सूर व का या ल कं
 चि ल वा का य स रू पं ला व य न् ॥ ॥ रुग ४ पूर्व द लं उ कि नी नी ला ॥ उरु न पं थु ना मा ह
 वि ना ॥ पश्चि म पं थु ख धु ना हा न का ॥ दक्षि ण पं थु नू पि पी पी ना ॥ नाः सर्वाः स वा नू टा स्था ॥ एक
 व क्रुः च रु उजा वाम क पाल ख षां ग ध ना ॥ दक्षि (ण) उ म नू क र्ति का ॥ इं ड्रा क ना ल व द ना मु क क
 दि नं जा

ॐ पंचमूडाविहृषिका॥ विदिगदलषूचत्वाविवाधिविहृषिकापालिनी॥ ॥ नवहिश्रिकुच
 कं हंकावर्जं अशूलं आपमधुलानूठं कृष्णं हंकावाधिविहृषिकं वज्रावलिपनिहृषिकं धर्मकायात्म
 कं स्वर्गरूपं रवचनिस्त्रुणवंशवयन॥ ॥ ॥ नृकृष्टं पूजं पूर्वाय पूत्रिवमलयं खड्गकपा
 लं प्रचक्षुदवी॥ ॥ ॐ ऊं उरुनालं जालंधनं महाकंकालं चंडाकिंदवी॥ ॥
 ॐ ऊं पश्चिमानं अतिथानं कंकालं प्रह
 रदं डी महानासा॥ ॥ ॐ ऊं पिपीठं प्रमुदिनारुमिदानपावमिनाइश्वरानं॥ ॥ ॥
 ॐ ऊं आश्रयानं एगजवयं सनादीनं वीनमणि॥ ॥ लोऊं नेत्रानां मध्वर्या अमिना
 रुखवर्नी॥ ॥ दं ऊं वायव्यानं दवीकाटं वज्रप्रहलंकं ध्वनी॥ ॥ सोऊं नृशवानं माल

व. वज्रहृद्मया ॥ ॥ **ॐ मि उपपीठविमलाहमिगीलपानमिमासमृदयहानं ॥**
॥ **ॐ मि विरुचय ॥** ॥ रुद्रहिवाकचक्राकावनिर्जातं मृष्टमं रुद्रामसुला नूढं नूका
नाधिष्ठितं नकपमावलिपनिष्ठं संलगकायात्मकं मर्षस्वरावंतः स्वरावंतवयम् ॥ ॥
मृदुकांज पूर्वान कामरूप अंकलिक उनावाक ॥ ॥ **ॐ** उरुनाल अठिया न
वज्रजटिल महाह्वयवा ॥ ॥ **ॐ मि** उपराकनीहमि **ॐ मि पा नमिमा निवाधहा**
नं ॥ ॥ ॥ **ॐ** पश्चिमान दिगम्बरी महावीन वायुवग ॥ ॥ **ॐ** दक्षिण
न काशलायां वज्रहंका न सुनालकि ॥ ॥ **ॐ मि उपऊद अचि अमिहमि वीर्यपा नमिमा**
मार्गहानं ॥ ॥ ॥ **ॐ** अग्नियान कलिंग सूरुडा अमादवी ॥ ॥ **ॐ** ने नृपा

न लंपाकं वज्रप्रहं सुरदा॥ ॥ **ॐ मित्रं सहस्रं मृदुमिदं मिथ्या न पानमिना मृदुयज्ञं** ॥
 ॥ ॥ **ॐ कंठं वायव्या न कांचि महादेव व हय कर्ध्व** ॥ ॥ **ॐ कंठं** इमाना न हिमालय
 विनूपा ऊखग नगा ॥ ॥ **ॐ मित्रं सहस्रं मृदुमिदं मिथ्या न पानमिना मृदुयज्ञं** ॥ ॥
 ॥ ॥ **ॐ मित्रं वाकचक्रं** ॥ **ॐ कंठं** का यचक्र ॥ **ॐ का** कंठं मृदुयज्ञं वायुमधुला न
 ठं भुक्तं कं का नाधिष्ठि मंचका वलिम म लंकं निर्माधका यात्मकं पाताल स्वराव
 पाताल वासिनी स्वस्वरूपं लावयक ॥ ॥ **ॐ कंठं** पूर्वानं पुनः पूर्व्यां महाबल च
 क्रवंग ॥ ॥ **ॐ कंठं** उरुनासं गृहदेवकायां नलवज्रं खलु नासा ॥ ॥ **ॐ मित्रं** लासक
इनांगममहात्मि उपाय पानमिना धर्मज्ञानं ॥ ॥ ॥ **ॐ कंठं** पश्चिमानं मोनाधु हय

सं.
१२

पंचमूडाविरूषिणा. आलीढासनास्थिता ॥ पंचधुदिदव्या. एकवक्त्रात्रिनडादिभुजा. दक्षिण
कर्त्ति. वामकपालाबोडरूपिणी. अक्षययागसमापना. महाभागानूनागि. क्षदिगम्वनापंचमू
डाविरूषिणा. देवदेवीनांचक्रनायकक. ॥ ४४ ॥ आह नर्धरावयम् ॥ ॥ ४५ ॥ पूर्वद्वानकाका
स्थानीला ॥ उत्तरद्वाने उत्तरकास्थानिना
कनास्थानीमा ॥ अग्निका. ॥ ४६ ॥ यमजनिह
वायुव्यका. ॥ ४७ ॥ यमदंडीनका. ॥ ४८ ॥
एनायागिन्या. एकवक्त्रात्रिनडाचतुर्भुजा. कपालखट्वांगवामंच. दक्षिण. ॥ ४९ ॥ मरुकर्त्तिधना. प
न्नालीढासनास्थिता. निर्वसना. पंचमूडाविरूषिणा. दंडाकनालवदनांविलाव्य ॥ ५० ॥ ४५ ॥

५६

शुक न क कृष्ण वर्ध् शिव कश्चिदयस्य न विहाय ॥ स्वर्ग मत्स्य च पानाल म क मूर्ति हवत्क धार ॥ ॥
 पूर्ववदंग न्यास ॥ ॥ ओं सर्ववीनया गिनी काय वा कचिह वज्र स्वरा वात्म का हं ॥ ओं वज्र शुद्धा सर्व धर्मा धी व
 ज्र शुद्धा हं ॥ समानि ह न च क्रमा काश द गद द्वा ॥ ऊहं वं हा ॥ आत्मनि मधु लषु चा रु व्य ॥ ओं याग शुद्धा
 सर्व धर्मा धी याग शुद्धा हं ॥ न द नू अहि वि चर कु मां सर्ववीनया गिनी श्री ह नू क वज्र स्वरा वात्म का हं ॥
 यथा हि ज्ञा न मातु श स्त्रा पि ना सर्व न था ग न था हं स्त्रा पयि ष्या मि शुद्धं रु दि व्य न वा वि द्वा ॥ ओं आ हं
 सर्व न था ग ना हि ष क स मा श्रि य हं ॥ न मा म कू ट ॥ ॥ अहि ष कं महा वज्रं दे धा नु कं न म स्तु त् ॥ यू आ
 कं पूज नार्था य म कू ट प च कृ त्वा ह व ॥ ॥ ओं सर्व वृद्ध चू ण म धि महा म कू ट प्र ति च्छा हा ॥ ॥ ओं वज्र धा त्व
 धनी अहि षि च हं ॥ ॥ ओं वज्र वीरि णी अहि षि च हं ॥ ॥ ॥ ओं वज्र वीरि णी अहि षि च हं ॥ ॥ ॥ ओं व

सं
१३

मर्वजिदीश्रुतिषिंचडीं॥ उ ॥ ओं कर्मवजिदीश्रुतिषिंचडीं॥ म॥ ॥ इति मर्वजिदीश्रुतिषिंचडीं॥ अथाति
षिकस्तुमसिबुद्धेर्वजातिषिक॥ इदं न सर्वबुद्धत्वं शृङ्गवजसुसिद्धय॥ वज॥ ओं वजाधिपतित्वाति
षिंचामिनिषुवजसमयस्तुहा॥ वजयष्टश्रुः श्रुः श्रुः॥ घ॥ ॥ वजसुत्वत्वातिषिंचामि वजनामाति
षिकरः॥ ओं श्रीहनुकवजनामरुथागरुत्वं
वत्तमनुत्तन॥ वजधर्मप्रकृतिवजकर्मक
स्वरावात्मकाहं॥ पुन॥ आ॥ पा॥ पू॥ पं॥ ला॥ यं॥
क॥ वी॥ न॥ ध॥ नी॥ प्र॥ व॥ नी॥ न॥ ग॥ ध॥ वि॥ ना॥ ज॥ ॥ काला ननाललिकवाहयू॥ ग॥ प॥ गू॥ ट॥ का॥ न॥ ध॥ नि॥ र्त्न॥ न॥ मा॥ मि
न॥ वा॥ धि॥ प॥ म्॥ ॥ ॥ या॥ ऐ॥ क॥ न॥ स्त॥ र॥ व॥ वं॥ ध॥ न॥ ह॥ द॥ का॥ नि॥ वि॥ स्त॥ नि॥ ना॥ बु॥ द्ध॥ प॥ नि॥ शु॥ द्ध॥ ग॥ नी॥ न॥ सा॥ ल॥ ॥ प्र॥ ध॥ ष॥

१०

क्षयः किनामलवाधरूपसंपृक्तनोमिरुवपादसमाजनन ॥ ॥ **किमधुलनाजायीगामदिगीय**
समाधिः ॥ ॥ रुद्रालिकालिपंकिपंचनभिकासुचदादवनावृन्दान्चानयन् दक्षिणवायुनानिः
 हृमजगद्विचक्रीकृत्य अनादिसिद्धिद्वीनंदीनिसमनासिहत्वा मनासा पूरुन प्रवेध ॥ नाशोप्रतिविम्बव
 रुखाहाकानचन्द्रमधुलीहत्वाविचिंम्ब ॥ रुद्रम
 रुद्रम्वनशुक्तवर्धमालीलासनस्थमाकाशलि
 नमूल्यास्यां वज्रकपालधानिधी द्विउज्जैकमूर्त
 सूनरुधनिमाकृष्टशुभाहुकात्मकचक्रंक्रमशरावयन् ॥ रुद्रगंभिः भगवति समयचक्रं समयचक्रं का
 यचक्रं कायचक्रं वाकचक्रं वाकचक्रं चित्तचक्रं चित्तचक्रं शक्तिनीषु शक्तिन्यादय यथा यथा रुष्वीजपूर

सा

मामनेव

गवम्बुखरगवम्बुखरुदुङ्गं नृपुत्रायाः प्रकिष्ठाहावनीया रुचसमयसुनरुमहा नागडवाय अनेनद्रप
 विष्णुसिंहाना नकाहानसहस्रं हंका नमहासुखमयं रावयन् ॥ रुद्र उका नउका नं हकान हकाका नं हका
 नंमिनसिमिनाई चन्द्र अर्द्ध चन्द्र विंद्ना दनादं च वालार्क अरुसहस्र राग रूपं चिंनयन् ॥ निर्विकल्पमहा
 सुखमयं चिरं निरूपयन् ॥ स्वदक्षमष्टिम
 पुं पं लां घं मु न ॥ ॥ ॐ निमहाया
 माजापयागः ॥ नारिचक्र (धननक हंका नना
 ध्ववज्जहाण पद्मगृहीत्वा श्रवधूनिमा (गं नास्थ यरुगवामिसुखनिः शिम्बुसुखद्वानप्रविश्वनादाविली
 यपुनरुत्साहूस्थ य सर्वं नुव नं विहावयन् ॥ रुगवना रुगवम्बामूलमंशुलायां जापयादिकि जापविधिः

लुलचक्रमाधिमुख्यं ॥ ॥ पूर्व नृ आ पा

गरुडीयसमाधि किंचिन् सुश्रयागः ॥ ॥ न

दाम् मधुला इस्थ यमूखान्निर्गम्य स्वनालो प्रवि

॥ पूर्वकः शः पाः पूः पंलाः घं मुः न ॥

इपनि नैकावधमिमधुलं नुधु लुक्शकानजः मधु क्रिमयचूलिकापनिभीरुपयलं नै नुधु हका
दिकं ॥ ओं शं शं खं हं लं मां पां मां वं कानजाम् नुधु धिष्टिं पंचामृकपंचप्रदीपनूपनिष्ठाद्य वायुप्रनि
मकालिमिमापविलीनवीजाङ्गनादिकम्
नदवर्धसहस्रविक्रमिमाङ्गानिमा हं हवा
मिथितयपावदसहस्रमीतिरुक्तं विचिन्त्य ॥

अनुक्रमेण उपनिष्ठे न रूपं शुक्रदेवतासु निमाङ्गदर्थं कृत्वा सकलामृकनसमानीय समापत्तिपूर्वकं
इवीत्य ॥ यथा यथा नुधु वीरुषु प्रविष्टा रावनीया ओं कानादिकमपि क्रमशः विलीनमवलाब्ध ॥

॥ कमावलिमानहम् ॥ प्रनमायकावधवायुमधुलं न

हिनवादिमृकानुवर्ध इव रूपं दृष्ट्वा नुधुपनिष्ठा

धाम् मुखामृकमयं शुक्लखड्गं कदाप्यविलिप्तं

नुधुपनिष्ठाविलिप्तपनिष्ठम् ओं शं हं कानवस्था

अनुक्रमेण उपनिष्ठे न रूपं शुक्रदेवतासु निमाङ्गदर्थं कृत्वा सकलामृकनसमानीय समापत्तिपूर्वकं

इवीत्य ॥ यथा यथा नुधु वीरुषु प्रविष्टा रावनीया ओं कानादिकमपि क्रमशः विलीनमवलाब्ध ॥

सं.
१३

मृकुनैधाधिकिष्ठम् ॥ कमाकालामुद्रां वद्धा ॥ रुं कानुयप० न पूर्वकं रुगवतः सपनिवा नमाकर्षयन्
॥ **आकर्षयामुद्रामाहे** ॥ ॥ कृत्वा यगन्धर्वलूमध्य सुचिञ्जुगुष्ठवजादृढ संप्रयाकः संस्थाप्य कामध्वललो
टदं (यश्च कर्तुं वरुषु च कामथम् ॥ आकां न पादार्द्रदृष्टिमुमुक्षां रुत्का वनादनादिनः दक्षादिगलाक
धामुस्थान्दवानाकर्षयन् ॥ वीजयोगिनीनि ॥ ॥ पादादिपुष्पन्यासः ॥ पलां यं मुनः ॥ ॥
रुमा मालिकालिपनिधर्तुं चन्द्रसूर्यसहव
धर्मा ॥ ॐ पनस्पनानुगमा सर्वधर्मा ॥ ॐ अस्म
कानपनिधाममधः वजांजलि उचविकचकुरु कनद्वयं नदमृगहस्तु नीवस्थाप्य आत्मावलि विधि
कानार्थमिदं प० ॥ दव्यप्रमादी समयप्रमादी नडूक वाचं च पलप्रमादी एतन्सम्यनहवयुन

१२

ना दद्याममाग्रुहं हुतना ॥ रुगवंतं हं एव धुं कजि क्कां विराव्य ॥ ओं वज्रां जलिज हं वंशः वज्र श
कि न्यः समयं सुदृष्टं हा ॥ रुगवंतं रुत्पुत्रायां कि न्यादि यम मथ नि पय्यं कं यथा यागं ठोकथम् ॥
ओं कनः २ कनः २ वं धः २ सा सयः २ का ह्यः २ कौः २ कौः २ हं २ रुद्रः २ दहः २ पचः २ रुद्रः २ वसुधे नो मालावलं
विनः गृहः २ सफपा मालगनः कुं गसु पम्वाः रुद्रः यः २ शाकः २ कौः २ हं २ कौः २ हं २ कौः २ हं २
किलि शिलि २ हिलि २ धिलि २ हं २ रुद्रः २ स्वा हा ॥ ॐ नमः कुं धा वि चक्र दयना नां ठोकथम्
॥ ॥ ओं वरव खा हि २ सर्वय कु ना कु सत रु प्र रु पिशाचां मादा पस्मान जक जा कि न्या दय न्
दं वलि गृहं रु सम थ न कुं रु सर्वा सिद्धि म प्र य च्छं रु यथे वन थे व रु रु र्थ पि व र्थ जि घृ थ मा हि क्र म थ
मम सर्व सत्त्वानां च २ सर्वा का न रु या सत्सुख प्र वृ द्धयः सहस्र का हं वं रु हं हं रुद्र रुद्र स्वाहा ॥ ॥

सं.
१३

विषयवृत्ता ॥ शक्राकृत ॥

॥ ॐ मिथी सम्पूर्ण चक्र सम्बन्धनम् ॥ ॐ ॥

वक्रद्वीपपुष्पतपा ० यत् यत्मानवे ॥ अस्यापि धनं ददति सर्वापन्नाशयन् अक्षरं ॥ देव्युष्मादि
लिदित्वा कवचंपुप ० सहकृ ॥ सर्वापन्नाशयत्सर्पकृतं धनं संग्रहय ॥ द्विवर्णीप ० नात्सर्प
नाशयित्वा विहाय ॥ सर्वपियममाहत्वा
गलपदधने ईदं ॥ देवीं हृदि समावाधाय ०
धनान्मन्त्रं कुर्व ॥ शत्रुवक्रात्समायाय ल
स्यपुष्पकृतां वक्रं ॥ ॥ ॐ मिथी प्रज्ञादुल ॥

सर्वधर्ममवाप्नुयात् ॥ लाहपंजनमक्षस्थ
त्वाष्टाधिकं गतं ॥ खञ्जदिहिनववक्ष ० स्थावर्
कं य ० प ० कं शुचि ० ॥ पत्रिकुशकथादवीन

विमपदा उष्मालिमा- च धुली- कन लीलया- वि ध्वरुः स्ववाधदय- विनचयं- वि ध्वरुः
विमहासुखं- लीनं- सहजानंद- अपि- यया प्राप्नु- अंता जायगम- निर्वृति पदं विध्वरु-
मागाडी उदयद्वयं च- सहजानंदाय- वंदामहे ॥ १ ॥

९

٧٨

जधकात्संक्रुक्चिउजं वज्रवज्रहसं नत्संप्रटया (गनमहाना (गद्यडवीरुनंप (धम् ॥ पुनः ह
हा कीः अः खं स्वाहा ॥ ओं सर्वरुक् कामिनि सर्वरुक् (अधनिगृह्ण वीरुधी का (धठवनी सर्वद्वय
व्यापिनि (अधय २ हं ॥ ओं हकान हननं वर्ध हा कान गंधना ठानं की कान वीरु हं गा च अमृ
मा कान च सवयम् ॥ ओं अमृ न अमृ नं प्रव
कमलं अत्वा कन (अधन ॥ ओं वं ॥ का
की ॥ अंगुला ॥ है है ॥ सिकला ॥ रुद्र रुद्र ॥ सकल अंगुलि चोका ॥ ॥ धनलिख अलाहा
मिनपाठयाध कया अदवीयामूलमदनं धनमाल सहाय ॥ ओं ओं ओं सर्ववृद्धा किनी स्यादि०

वा.
२

अंग न्यास ॥ ओं वं ॥ नाहि ॥ हां यों ॥ **हृदि** ॥ कीं मौं ॥ मुख ॥ कीं कीं ॥ **ललाटे** ॥ हं हं ॥ **शिखा** ॥ रुद्र रु
द्र ॥ **सर्वो** ॥ नमो नमो वमो मूल मं हुं धपाडा दकन पूजा हा (६) प्राकृष्टं कुर्यात् ॥ ओं आ हं ॥ **दीर्घा**
धिष्ठान ॥ स्वस्व मं हुं धपाडा धधिष्ठान ॥ ओं
ओं आ हं रुद्र स्वाहा ॥ वलि अधिष्ठान ॥ ओं आ
वक्र हं ॥ ओं यागं मन कुरु ॥ ओं आत्मानं मन
चाय्य ॥ **नमो** मधुल मालिखन ॥ ॥ कि काशीं हिदलं पद्मीं द्वाष्टं वेदपद्मकं ॥ षड्काशीं वर्तु
लाकारं चक्रः षष्टिदलान्वितं ॥ वेजा वलि मथाक्षालालिख च मधुलं वृक्षे ॥ अग्निगुक्ता रुमं
चक्रं वक्र सत्वगुणं श्रुयामि हि ॥ ॥ **नमो** ध्यान ॥ प्रहास्य मनः प्रविधानं चित्तं नतवत् ॥

दात्मानं निर्मलानकनागागद्यद (ॐ) दिदलसना नृहम (ॐ) पीनशव दद्या पत्रिदकिधव कूलिका
लिपं त्वा द्वीगि नक्षत्रपत्रि वृक दिनशम धुलम (ॐ) वेंकाननकां नक्षत्रिधाम धारुगवकी वजवा
नाहि संध्यासिन्दूरवर्धन गृग नादिनका धस्त्ररावां मूलवकां दकि (ॐ) कालाष्महीय (ॐ) धर्म
हिं वामपा (ॐ) धर्मरवकांगधना वामकन गृहीननकपूर्ध्वगीन कपालधना दकि (ॐ)
प्रहसिमाधनी लवजकहिधनां घाउठा वर्धारुमांगि निर्वसनां शिनीसिदभालिमा
लाव्यष्टिमां मुकनी लकु कशिना नृहप्र मिमूर्खानि वदुयां शवकाधिनाननां शिनीसि
ननशिनमाला (ॐ) शिहानालेकना गृग नवीनवीरुत्सना इहास्यहयानकान् कनृधाम् दुग्गां
मिश्रनवनाद्यनसान्विता चक्री कुधुलकधि नृचक मखला हृगादिहिः षम्भु इमृदिमास

पा.
३

फा कर्ककि नक्षत्र नक्षिप्ररासनामनश्रुर्ध्रपर्यंकस्थिताहगवर्गिहावयम् ॥ **आकर्षका** ॥ रुक्मिणि
मार्धचक्रस्थितवेंकाचनक्षिप्रमालाहिनकनिष्ठनुवनवर्गिनिहानदवर्गिमाहृष्यसमयदवर्गि
त्वंलवयम् ॥ ॥ **रुंरुंरुं** कालामुडांदर्श
नसत्कानायपाथार्धाचमनंपुनिक्रस्वाहा
ॐ सर्वबुद्धाकिनाथवज्रपुष्पआहंरुद्र ॥
वेनाचनीयवज्रपुष्पआःहंरुद्र ॥ **म** ॥ ॐ आहं ॥ **दिदल** ॥ ॐ गकिनीयहंरुद्र ॥ **चरुदल** ॥
पर्व ॥ ॐ नामहंरुद्र ॥ **उ** ॥ ॐ खद्युनाहहंरुद्र ॥ **प** ॥ ॐ नूपिणीयहंरुद्र ॥ **द** ॥ ॥ ॐ वैवज्र

१५

वा नाहि यहे रुद्र ॥ वटका (६) पूर्व ॥ ओं हो यां यामिनी यहे रुद्र ॥ ॐ ॥ ओं कीं मां माहिनी यहे रुद्र ॥
 वा ॥ ओं के के संचा निधी यहे रुद्र ॥ प ॥ ओं हे हे संजा सिनी यहे रुद्र ॥ ने ॥ ओं रुद्र रुद्र चलि काय हे
 रुद्र ॥ मू ॥ ॥ ओं अठि यान वज्र पूष्य प्रकि च स्वाहा ॥ मू ॥ ओं पूर्य गिनि ॥ उ ॥ ओं का मन पि
 य ॥ प ॥ ओं श्री हन काय ॥ द ॥ ओं धर्म काय ॥ मू ॥ ओं संराग काय ॥ ने ॥ ओं निर्मा
 ष काय ॥ वा ॥ ओं महासुख काय ॥ ॐ ॥ ओं आनंदावर्त्ताय ॥ मू ॥ ओं पवन मानंदावर्त्ता
 य ॥ उ ॥ ओं विनमानंदावर्त्ताय ॥ प ॥ ओं सहजानंदावर्त्ताय ॥ द ॥ पंचापहा न पूजा ॥
 वा ॥ ओं लाठ्या मुनि ॥ ॥ काल मय पटलां कला च लविष्ट गपटलाधिकं कथा ॥ सत्व हां ऊन
 यूग प्रदाय कांत्वा नमामि ऊगदम्ब हनुकां ॥ नाहि चक्र कुहनां वृवा सिमां सा न वज्र वा नि समा ऊ सं ह

च (१) अथ साहाय्यादि ०

[illegible]

वा
५

मुरवीमहासूक्तकनावालाकविम्वानुधम ॥ अम्मीसर्वजगद्गुहादयपनाथीवज्रवानाहिका । रावन्ध
धामामिसुद्रुवलिथीवज्रहन्निर्मिमम् ॥ **रुप्यध ॥ ॐ निचिरुचकयागः ॥** ॥ रुद्र ४ सव्यक
मरिक्किराविगांगुलिपक्कधुचिकवज्रनेपमाकानजं सूर्यमधुलाधिष्ठितम् ॥ रुथेववामहस्कांगु
लिषूपमपक्षाकायअकानजंचन्द्रमधुला
वदवीरूपाहानसत्वाधकीरुनीविचिंम् ॥ ॥
असाहिअमंरुविमानुगाहिअवुसंखुअलिका
पूजमहंरुवन् हं हं हं हाः हं रुद्र स्वाहा ॥ ॐ महिषाकदीफस्वाहा ॥ **रुनीकापयागः ॥**
पूर्ववन् आ पा नू पं लां पं म् ॥ यामित्याखलमाहिनीरुगवनीसंबांनिधीसर्वदा ॥ संज्ञासिन्धु

१८

आपनासविमलाया (गठवनीचक्षुका ॥ चत्वारोऽङ्गुलमैकं ध्यानमस्वीनीलासिमाणे निधी ॥ ८
 ४५ माधूमाधुसूतनाधुसूतकं वन्दे पदं नादवं ॥ **कर्म** ॥ ६ ॥ **॥ कर्म काले लवना ॥** कर्म यं का न दवा
 यमधुलं रुद्रपनिनका न दवा ग्रिमधुलं आः ऊनिनमधुद्रिय कूलिका पानिस्थ पं प्रलं ऊनं विचिं
 न्य रुद्रकहकादिकं उं ऊं आं रं हं लं (मों पा मों वं का न जाह रुद्रधिष्टिन पंचामरु
 पचप्रदीपनूपं पवनमधुलवनप्रविहप्र कूलिकाग्रिमापविलिनं दृष्टा रुद्रपनिआका
 नऊनिनविनलिमात्रां ननिना हं हवा (धाम् खामृनमयं शुक्लखटांगं न दवा विलीनं यान
 नसहस्रसन्निधियं श्रीमिहमं विचिं न्य ॥ रुद्रपनि उं आहं अक्षनंदं दृष्टा रुद्रधिष्टिः दवादिगव
 लिं नीवी न दवा नी दमं हानामृनमानीय रुद्रवा ऊनपुप्रवधायक ॥ उं कानादिकमपि कर्म (धाम् विली

ॐ ह्रीं आ व म नं प्र ति इ ह्वा हा

वा.
६

नमवलोका न्यूनलोकाधिनिष्ठम् ॥ ओं आहं गन्तुं मूडां दर्शयन् ॥ हं कान्तु यपठन् पूर्वकल्गाव
मीमांसाव्यपूजनं ४ स्थिपयन् ॥ पूर्ववत् आ. पा. पु. पं. लां. घं. ऋ. न. ॥ ॥ नमो आलिकालिपानि
हर्तु चन्द्रसूर्यस्वरावक नदयोर्हं कान्तु दृष्ट्वा ॥ ओं श्रुत्या नानुगता सर्वधर्मा ओं पनस्य नानुगता सर्व
धर्मा ओं श्रुत्या नानुषविष्टा सर्वधर्मा ६ व्यप
ननतसमन्तरवयुनता दव्याममानुग्रहं
हाव्य ॥ ओं वजां कलिजहं वंशः वज्रवानाहिम्
सहस्रप्रतीपिष्ठम् चामादापस्मानता कता कि न्यादयं देवलिगृहं समयनं कुरु सर्वसिद्धिमप्र
यच्छं कुरु यथेवमथे वज्रकथं पिवथ जिघृथ मामि कुरु मथ मम सर्वसत्त्वानां च सर्वा कान्तु या सत्सुखप्रद

१८

वा.

हेनवायंतिमूकश्चविक्रांरुक्कचर्चिका॥विधंमविध्यानाशुवंदवृद्धस्यमाननं॥ ५ ॥
नागाविनागयार्मश्चलावाणवविरवलिनां॥समुद्रनामदामन्यवंदत्वांवनयागिनी॥ ६ ॥
पंचामृकसदापानपंचभालिस्तृणजनं॥गीरुवायनमानिस्पुवंदत्वांज्ञानयागिनी॥ ७ ॥
सदेवसाहअनंदानिभंरुनाभवानयां॥नत्रचनधनोपूनांवंदन्संपन्नयधं॥ ८ ॥
त्वांदविमिद्विदादीचयागानवानसदागना॥॥वोमनिर्मादशरीत्वांवंदवृद्धस्यमाननं॥ ९ ॥

मितयेधुनेवैश्वानरलस्वसंहये अष्टदत्तसः तस्य विधियाम् ॥ स्नानघोतसंभावना ॥ स्वभावशुद्धा
सर्वधर्मानां स्वभावशुद्धेहं शुन्यतां ज्ञानवज्र स्वभावं परमज्ञानमयं निः स्वभावयपरमतत्त्व स्वभावं अमु
कस्य पापमलं तत्रैव शिरसि लिनं चिन्तयेत् ॥ ॐ
ज्ञानरस्मिमयं शिरसि च विभावयेत् ॥ थन आक
मतकं तोये ॥ थन स्नानशंखोदकं पंचगव्यं
नाभिषेक ॥ अज्ञानं दटलं वत्सव्यपनीतजिनो
आः चक्षुश्चर्मं चक्षुर्दिव्यचक्षुवज्रचक्षुर्वेहं स्वाहा ॥ थन ह्यंगु अङ्गुलीनं अंधयटनतयके ॥ ॐ चक्षु
बंधश्चरमानेहं ॥ थन पंचसालिनके ॥ इदं ते नारकं वारिसमयातिक्त्वा हेतुसमसंरक्षणासिद्धिं पिववज्रा

शुन्यतां कहराणि भिन्नं बोधिचित्तात्मकं परं स्वरूपं
वशापापदिधूपं निरंजनं लोहाग्निरक्षावज्रं
विये पंचगंधं नैतियके मंत्रस्नान ॥ थन अंज
तमं सलाकावैद्यराजेन यथा लोकस्य ते मिरं ॥ ॐ

थन ह्यंगु अङ्गुलीनं अंधयटनतयके ॥ ॐ चक्षु

मृतोदकं ठठहं ॥ सिंह-स्नानमाला-भद्रव्रतये-स्नानपंचरात्रितो सुयके ॥ कस्वमो सुरतं प्रिये ॥ सुम
 गोहं महासुरेति ॥ धनयात्राशिरसतयके ॥ अभिवेकं महावज्रं वैधातुके नमस्कृतं ददामि सर्वबुद्धानां त्रिगु
 ह्यालयसंभवं ॥ तोनके ॥ वज्रघराठविये ॥ अनादि
 जुगभयतिर्यतिः ॥ धनघराठविये ॥ गृहीतोसि
 सोसैकंदत्वा नाथवदस्वमवचकंदेवतयोस्तत्
 ज्यमुत्तमं आचार्यस्याम्यहं नाथसर्वसत्कार्यका
 जा-पुष्पनास-धनवज्रशिरसधिसंजाययायेमंत्र ॥ ॐ अग्रचासुराजभसुराशिरसेहींहीं हं येधर्म-फ
 लाभिवेक ॥ सिफंतुये ॥ मृत्युजन्मजानकमकरादित्यादि ॥ पंचोपचारदूजा ॥ ताप-अक्षत-जु
 नावगामयाये ॥ ॐ कपूरं जज्ञसहोते ॥ ॐ रंज अग्रयेहींहींहीं हं कइस्वाहा ॥ स्वाउस्नानधुचक
 मंत्रकनेनापायागुकिग्वतनके ॥ ॐ आः सर्वदेवताधितिष्टंतु स्वाहा ॥ पंचयोगिनी आवाहनवाये ॥

निधनसचयजुत्वमहारतः ॥ समं च भद्रसर्वात्माव
 मया भगवन्मयि संनिहितो भवः ॥ चकंदेवति
 आचार्यस्पर्शिकमे-समयं बुद्धनाथानां सव्यरं
 रणात् ॥ अहोसुरमिति पाथयेत् ॥ पंचोपचारदू



